... मैं तुमसे प्यार करता हूँ रचू ...

...आई लव यू राचू...

सचिन गर्ग

... मैं तुमसे प्यार करता हूँ रचू ...

...आई लव यू राचू...

इस किताब को लिखना वास्तव में एकांत प्रक्रिया नहीं थी और यहीं पर मैं उन लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने इस यात्रा में मेरी मदद की है।

मैं निकिता सिंह को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जो संभवतः इस समय देश की सबसे प्रतिभाशाली लेखिका हैं। लोगों को किसी लेखक की लेखन प्रक्रिया देखने का मौका नहीं मिलता, लेकिन अगर मिलता तो दुनिया को पता चल जाता कि उन्हें लेखन जगत का सचिन तेंदुलकर क्यों कहा जाता है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह जीवन में बहुत सफलता प्राप्त करेंगी।

इस किताब में उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया है, मुझे डांटा है, मेरे सुझावों को नजरअंदाज किया है, इसके कुछ हिस्से खुद लिखे हैं और इसे अपने कुछ अन्य प्रोजेक्ट्स से भी ज्यादा प्यार से संजोया है। और सबसे महत्वपूर्ण बात, उन्होंने एक ऐसे किरदार को जन्म दिया है, जिसे मैं दिल से संजो कर रखता हूँ। इस किताब के छपने पर, वह मुझसे भी ज्यादा उत्साहित होंगी।

निकिता सिंह, इस काम में मेरा साथ देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आशा है मैंने आपका पर्याप्त धन्यवाद कर दिया है।

दुर्जोय दत्ता, किताबों को लिखने के इस सुखद सफर में मेरे साथ रहने के लिए धन्यवाद। सच कहूँ तो, यह सब एक खाली दोपहर में आए एक अचानक विचार से शुरू हुआ था।

एक आदर्श गुरु होने के लिए जयंत बोस को धन्यवाद।

कोमल रुस्तगी को उनके बहुमूल्य सुझावों के लिए धन्यवाद।

ग्रेपवाइन इंडिया पब्लिशर्स के आधार स्तंभ नमन कपूर को धन्यवाद। मेरी तीन भतीजियों,

रिया, अक्षिता और एक जिसका नाम अभी तक नहीं रखा गया है, को हमेशा मुस्कुराने के

लिए धन्यवाद। मम्मी और पापा को धन्यवाद। हर चीज के लिए धन्यवाद।

... मैं तुमसे प्यार करता हूँ रचू ...

प्रिय मित्रों, कृपया इस संदेश को तब तक फैलाएं जब तक यह मेरे परिवार तक न पहुंच जाए।

मुझे लगता है कि वह मेरा नाम जानता है

पुस्तक यहां से डाउनलोड की गई:*EBOOK4IN.BLOGSPOT.COM*

अरम्बोल गोवा के सबसे उत्तरी समुद्र तटों में से एक है। भारत और विदेश से पर्यटक एकांत

वातावरण में, एकांत समुद्र तट पर समय बिताने के लिए वहां जाते हैं।

वुडस्टॉक विलेज एक वास्तविक स्थान है, जो विभिन्न प्रकार के लोगों को

आकर्षित करता है। इस पुस्तक में उल्लिखित अन्य सभी स्थान भी वास्तविक हैं।

गर्मी का मौसम बहुत खराब रहा। मैं बस अपने कमरे में बंद होकर छत को घूरता रहता था। माँ स्वाभाविक रूप से मेरे बारे में चिंतित थीं और उन्होंने गर्मियों की छुट्टियाँ भारत में बिताने का फैसला किया था, ताकि वे मेरा साथ दे सकें।

मेरी हालत बिगड़ने का एक ठोस कारण था। लेकिन माँ को सबसे ज़्यादा चिंता इस बात की थी कि मेरी हालत में कोई सुधार नहीं दिख रहा था। मैं दिन भर अपने कमरे में बंद रहता था। मैं अपने किसी भी दोस्त का फ़ोन नहीं उठाता था। मैं ठीक से खाना भी नहीं खाता था। और माँ मुझे सामान्य स्थिति में लाने के लिए हर मुमकिन कोशिश कर रही थीं।

मैं अपने कमरे से सिर्फ शाम को टहलने के लिए ही निकलता था, हर रोज। मुझे खुली हवा चाहिए होती थी और इसके लिए मैंने एक तय रास्ता बना रखा था। कभी-कभी मैं सड़क किनारे किसी दुकान पर रुककर कुछ खरीद लेता था। और कभी-कभी मैं किसी परिचित को देखकर मुड़कर तब तक भागता था जब तक वह मेरी नजरों से ओझल न हो जाए। मुझे बातचीत से नफरत थी। सच कहूं तो, मेरी लगभग हर चीज में रुचि खत्म हो चुकी थी।

जिस शाम की मैं बात कर रही हूँ, उस शाम मैं रोज़ की तरह अपने कमरे में यूँ ही बैठी थी। तभी मुझे अपने कंधे पर किसी का हाथ महसूस हुआ। मैंने मुड़कर देखा तो वहाँ मेरी बहुत अच्छी दोस्त अर्शी खड़ी थी, जो आजकल मुझसे भी ज़्यादा परेशान करने लगी थी।

"तो, कैसी हो?" उसने सहज भाव से पूछा। लेकिन मैं जानती थी कि यह सहजता बिल्कुल नहीं थी। वह काफी समय से मुझसे सवाल पूछ-पूछकर परेशान कर रही थी। अर्शी दिल्ली के जीसस एंड मैरी कॉलेज में मनोविज्ञान ऑनर्स की छात्रा थी। और किताबों में पढ़ी बातों को असल जिंदगी में लागू करने की उसकी एक बहुत ही परेशान करने वाली आदत थी। मैं जानती थी कि उसका इरादा अच्छा था, लेकिन फिर भी यह बात मुझे चिढ़ाती थी। उसने कहा कि वह मुझे उस खोल से बाहर निकलने में मदद करना चाहती है जो मैंने अपने चारों ओर बना लिया था...

"मैं ठीक हूँ। इससे बेहतर नहीं हो सकता," मैंने जबरदस्ती मुस्कुराते हुए कहा और उन तस्वीरों को दूर धकेलने की कोशिश की जो मुझे चौबीसों घंटे परेशान कर रही थीं।

अर्शी मुझे ऐसे घूर रही थी मानो वह किसी बात का बहुत गहराई से विश्लेषण

कर रही हो। "तुम झूठ बोल रहे हो।"

नहीं, नहीं। मैं अब बिल्कुल ठीक हूँ। बताओ - तुम कैसे हो?

"बकवास बंद करो, समर। तुम्हें मुझे बताना ही होगा," उसने ज़िद की।

"तुम्हें पता है क्या हुआ था। तुम्हें और क्या जानना है?"

"हां, मुझे पता है क्या हुआ था। लेकिन मुझे यह भी पता है कि कहानी में और भी बहुत कुछ

है। और जब तक तुम मुझे सब कुछ नहीं बता दोगे, मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा।"

मैं चुप रही। अर्शी ने बिलकुल सही कहा था। ज़ाहिर है, वह मनोविज्ञान की पढ़ाई बहुत गंभीरता से कर रही थी। लेकिन मेरे लिए, उसने पुरानी यादों का एक सैलाब ला दिया था जिन्हें मैं भुलाने की कोशिश कर रही थी। मेरा दिल इतना भारी था कि मैं और कुछ बोल नहीं पा रही थी।

मुझे पूरा यकीन था कि अर्शी मेरे अंदर चल रही हर बात को समझ सकती थी। वह सूक्ष्म संकेतों को भी भांप लेती थी। लेकिन यह तो बहुत ही स्पष्ट था।

"समर, तुम्हें मुझे सब कुछ बताना होगा," अर्शी ने कहा। "मुझे तुमसे ही सुनना है।" "मैं

नहीं बता सकता," मैंने भारी साँस लेते हुए कहा।

"आपको करना ही होगा। आपको यह अपने लिए करना होगा।"

"लेकिन क्यों?" मैंने पूछा।

"क्योंकि आपको अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की जरूरत है। आपको इलाज की जरूरत है। आपको मेरी मदद करने की जरूरत है ताकि मैं आपकी मदद कर सकूं," उसने जोर देकर कहा।

मैं अपने कमरे से बाहर निकल गई। मैं दोबारा उन सब बातों को झेल कर उसे पूरी कहानी सुनाने के लिए कुछ भी नहीं करना चाहती थी। लेकिन जब मैंने अपनी माँ को बैठक में बैठे देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि अपनी सच्चाई सबके सामने लाना गलत फैसला था। पहले जहाँ सिर्फ अर्शी ही मुझे परेशान करती थी, अब अर्शी और माँ, दोनों मिलकर मुझे परेशान कर रही थीं।

मैंने उनके चेहरों को देखा और महसूस किया कि मैं फँस गई हूँ। लेकिन मैं इसका सामना नहीं कर सकी। अर्शी को गुस्से से घूरने के बाद, मैं घर से निकलने के लिए मुड़ गई।

"बेटा, रुको!" मैंने माँ को पुकारते हुए सुना।

"क्या?" मैंने मुड़कर पूछा।

"अर्शी पर गुस्सा मत करो। मैंने उसे यहाँ बुलाया है," माँ ने कहा।

"क्या? क्यों?"

"क्योंकि मुझे पता था कि वही एकमात्र व्यक्ति है जो आपकी मदद कर सकती है-"

"लेकिन मुझे किसी मदद की जरूरत नहीं है! मैं बिल्कुल ठीक हूँ!" मैंने कहा।

कमरे में थोड़ी देर सन्नाटा छा गया। उनके चेहरों के हाव-भाव साफ बता रहे थे कि उन्हें मेरी किसी बात पर यकीन नहीं हो रहा था। मैं बेबस महसूस कर रही थी। मेरे पास कोई रास्ता नहीं था। मैं दोबारा उन सब बातों का सामना नहीं कर सकती थी, उन्हें सब कुछ नहीं बता सकती थी। वो यादें पहले से ही भयानक थीं। लेकिन मैं यूं ही छोड़कर भी नहीं जा सकती थी। मां तब से मेरे बारे में चिंतित थीं... और मुझे पता था कि मैं इन दिनों अपने कमरे में बंद रहकर उनके साथ

बहुत बुरा बर्ताव कर रही थी। मां को यह जानने का पूरा हक था कि आखिर हुआ क्या था। और अर्शी जिस चीज को दिल से ठान लेती थी, उसे आसानी से नहीं छोड़ती थी।

लेकिन यह मेरे लिए असहनीय पीड़ादायक था। मुझे वहाँ से जाना पड़ा, इससे पहले कि वे मुझे इसके आगे घुटने टेकने पर मजबूर कर दें।

"बेटा, प्लीज़... मुझे तुम्हारी चिंता हो रही है..." माँ ने धीमी आवाज़ में कहा, ठीक उसी समय जब मैं जाने ही वाला था।

और मुझे पता था कि मैं लड़ाई हार चुका हूँ। मुझे उसकी आवाज़ का लहजा बुरा लगा; वह मेरी वजह से दुखी थी। मैंने गहरी साँस ली, क्योंकि मुझे एहसास हो गया था कि मुझे क्या करना है। मैं उसे और ज़्यादा तकलीफ़ नहीं दे सकता था।

तो हाँ, मैंने अपने जीवन के इक्कीसवें वर्ष की कहानी सुनाना शुरू किया। यकीनन यह अब तक का सबसे भयानक वर्ष था।

S कुछ जोड़े बार में जाकर समय बिताते हैं। कुछ जोड़े रेस्तरां में जाकर कैंडल लाइट डिनर करते हैं। कुछ जोड़े पार्क में जाकर किसी सुनसान बेंच पर बैठ जाते हैं।

कनिका और मैंने मिलकर कॉलेज के कार्यक्रमों का आयोजन किया।

कनिका कॉलेज के गर्ल्स हॉस्टल में रहती थी। हॉस्टल के नियमों के अनुसार उसे रात आठ बजे के बाद बाहर आने की इजाज़त नहीं थी। उसे रात आठ बजे के बाद बाहर रहने की इजाज़त सिर्फ़ तब थी जब वह किसी कॉलेज इवेंट की आयोजन टीम में होती थी। तो हमने वही किया। हमने एक के बाद एक इवेंट आयोजित किए, ताकि हम साथ में ज़्यादा से ज़्यादा समय बिता सकें। और एक बार जब आप पहले साल के छात्र नहीं रह जाते, तो बस किसी उत्साही नए छात्र को कुछ न कुछ करने के लिए निर्देश देना ही काफ़ी होता है। साथ ही, हर शाम हॉस्टल के बाहर वो अतिरिक्त दो घंटे - कितना सुकून!

हमने तरह-तरह के कार्यक्रम आयोजित किए थे। डॉ. स्टीफन पियरे के अतिथि व्याख्यान से लेकर जसबीर जस्सी की सेलिब्रिटी नाइट, एज ऑफ एंपायर की गेमिंग प्रतियोगिता और सी++ प्रोग्रामिंग तक, हमने सब कुछ किया था। और सब कुछ बहुत ही सुचारू रूप से चला, क्योंकि हमने प्रोजेक्ट पर निर्धारित समय से काफी पहले काम शुरू कर दिया था, ताकि कनिका जल्द से जल्द बाहर रहने लग सके।

तो कहानी असल में मेरे बीसवें जन्मदिन से शुरू होती है। मैंने इंजीनियरिंग के तीसरे साल में कदम रखा था। और कनिका ने अपना दूसरा साल शुरू किया था। मुझे बताया गया कि लोग अब हमें समर-कनिका कहकर बुलाते हैं, मानो हम एक ही व्यक्ति हों, न कि दो अलग-अलग आत्माएँ। मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं थी। कनिका को तो यह बहुत पसंद था।

मेरे बीसवें जन्मदिन का सबसे दुखद पहलू यह था कि यह अंतर-विद्यालय नाटक प्रतियोगिता के दिन ही पड़ा था। ऐसा नहीं था कि मुझे जन्मदिन पर काम करने में कोई आपत्ति थी। लेकिन दुख की बात यह थी कि अंतर-विद्यालय नाटक सत्र का आखिरी कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम के समाप्त होने के साथ ही कनिका के पास देर शाम तक बाहर रहने का कोई बहाना नहीं बचा था। हमारी शाम की विदाई दो घंटे पहले ही हो जाती। और इससे हम दोनों को बहुत बुरा लग रहा था।

हम प्रतियोगिता की आयोजन टीम में थे। हर दिन, हम सभागार में सबसे पहले पहुँचते थे, क्योंकि हम एक-दूसरे को देखने के लिए बहुत उत्साहित रहते थे। आज भी कोई अपवाद नहीं था। मैंने अपनी दो दिन की बढ़ी हुई दाढ़ी को शेव किया और अपने छोटे बालों में कंघी की। मुझे थोड़ा झुकना पड़ा क्योंकि कमरे का दर्पण एक औसत व्यक्ति की ऊँचाई के हिसाब से समायोजित था। मैं उससे कम से कम तीन इंच लंबा था। मैंने अपनी सांवली त्वचा को देखा और सोचा कि उसे मुझमें क्या पसंद है। लेकिन जब तक उसे पसंद है, मुझे कोई शिकायत नहीं थी।

मुझे लगता है कि मुझे अपने बारे में थोड़ा और बताना चाहिए। मेरा नाम समर गर्ग है और मैं एक आम आदमी हूँ। अगर आपने दिल्ली के लोगों की कोई आम और बेवकूफी भरी आदत सुनी हो, तो शायद वही मुझमें भी है। मैं दिल्ली में ही रहता हूँ, दिल्ली को ही देखता हूँ और दिल्ली में ही घूमता हूँ। फिर भी, मुझे सड़कों की ज्यादा समझ नहीं है, अगर आप अगली बार शहर में रास्ता भटकने पर मुझे फोन करने की सोच रहे हों तो।

मुझे अपनी खूबसूरती के लिए अब तक कुल 107 तारीफें मिली हैं। जी हां, मैं गिनती करती हूं। क्योंकि अगर आप यह जान लें कि इन 107 में से 93 तारीफें मुझे पांच साल की उम्र से पहले ही मिल चुकी थीं, तो आपको एहसास होगा कि मुझे ज्यादा तारीफें नहीं मिलतीं। इसलिए गिनती रखना आसान है।

तो हाँ, मुझे यह मानना अच्छा लगता है कि मैं लंबा, सांवला और शानदार हूँ। और यह बात मुझ पर खरी उतरती है। हर रात जब मैं सोने जाता हूँ, तो रेलवे स्टेशन पर देखे उस आदमी के चेहरे पर पड़े निशान या मिथुन की उस फिल्म के विलेन के बारे में सोचता हूँ और अपनी किस्मत को धन्यवाद देता हूँ क्योंकि मैं यकीनन उनसे बेहतर दिखता हूँ।

स्कूल में, मैं वो अजीबोगरीब, किताबी कीड़ा टाइप लड़का हुआ करता था जो बारहवीं की बोर्ड परीक्षा की तैयारी करने के बजाय आखिरी बेंच पर बैठकर इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रवेश परीक्षा के प्रश्नपत्र हल करता था। कॉलेज पहुँचते ही मैं वो लड़का बन गया जो किसी तरह कनिका का बॉयफ्रेंड है।

साथ ही, मैं आपको बताना चाहूँगी कि मेरे माता-पिता मध्य पूर्व में रहते हैं। और मैं अपने रूममेट रॉय के साथ दिल्ली में अपने कॉलेज के ठीक बाहर एक अपार्टमेंट में रहती हूँ। ज़िंदगी अच्छी है। मैं हमेशा कहती हूँ, बीस साल की उम्र अच्छी होती है। आप सभी को बीस साल का होना चाहिए, सिवाय इसके कि आप बीस साल के न हों।

मुद्दे से भटके बिना, मैं सभागार की ओर चल पड़ा। मैंने दरवाजा खोला, अंदर गया और उसके आने का इंतज़ार करने लगा। जब मैंने उसके कदमों की आहट सुनी, तो मेरी साँसें थोड़ी तेज़ हो गईं, क्योंकि मैं उस दृश्य के लिए खुद को तैयार कर रहा था। और जब वह दृश्य मेरी आँखों के सामने आया, तो मुझे अपनी रीढ़ की हड्डी के पास कुछ हलचल महसूस हुई। ऐसा लगा जैसे उस दृश्य से उत्पन्न अत्यधिक उत्तेजना के कारण उस क्षेत्र में छोटे-छोटे रोगाणु अपनी जगह बदल रहे हों।

वो अंदर आई, मुझे गले लगाया और जन्मदिन की बधाई दी। हम इतने रोमांटिक नहीं थे। शायद हमारा रोमांस हर समय एक-दूसरे के साथ रहने की चाहत में छिपा था। हम कॉलेज में साथ मिलकर कार्यक्रम आयोजित करते थे और किसी न किसी तरह उसमें सुकून पाते थे। इससे ये सुनिश्चित होता था कि भले ही हम दिन में दस घंटे साथ रहते थे, फिर भी कभी बोर नहीं होते थे। इससे ये सुनिश्चित होता था कि हमारे पास हमेशा बात करने के लिए कुछ न कुछ होता था,

चर्चा करने के लिए विषय होते थे, मज़ाक उड़ाने के लिए लोग होते थे। यही हमारे रिश्ते का मज़ा था।

शाम को नाटक शुरू होते ही हम दोनों मंच के दाहिनी ओर एक कोने में बैठ गए। मंच पर क्या हो रहा था, हम दोनों को ज़रा भी परवाह नहीं थी। पिछले छह महीनों में लगभग हर पल साथ बिताने के बावजूद हम एक-दूसरे से हालचाल पूछने में मशगूल थे।

"तो समर, तुम्हें अपने जन्मदिन पर क्या चाहिए?" उसने पूछा।

मंच के बगल का क्षेत्र अधिकतर अंधेरा था, क्योंकि मंच मुख्य रूप से दो रोशनदानों से जगमगा रहा था।
स्पॉटलाइट्स। जब हम वहाँ बैठे थे, मैंने उसे देखा और महसूस किया कि मुझे वास्तव में किसी

चीज़ की ज़रूरत नहीं है। "मैं तुमसे इतना प्यार करता हूँ कि मुझे किसी चीज़ की चाह ही नहीं

है।"

"लेकिन मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ। कैसा रहेगा... उम... एक बटुआ?"

"लेकिन मुझे बटुआ नहीं चाहिए। बस मुझे अभी, यहीं अंधेरे में, तुम्हें चूमने दो, इतना ही काफी होगा," मैंने कहा।

"अरे, मुझे पता है अंधेरा है। लेकिन यहाँ ऐसा करना हमारे लिए थोड़ा ज़्यादा

खुला है।" "हमें कोई देख नहीं सकता। ये बस तुम्हारे लिए एक मनोवैज्ञानिक

बाधा है।"

"जो भी हो, मैं यह नहीं कर सकती," उसने कहा।

"ठीक है, तो फिर बटुआ ही ठीक रहेगा। एक महंगा वाला।"

"आजकल लड़के बहुत ही भौतिकवादी हो गए हैं," उसने कहा और मैंने देखा कि उसका सिर मेरी ओर झुककर मुझे चूमने के लिए आगे बढ़ा। मैंने अपने होंठ पर उसकी सांस महसूस की। और जैसे ही उसके होंठ मेरे होंठों को छूने वाले थे, नाटक समाप्त हो गया और बत्तियाँ जल उठीं।

मुझे उसका पूरा चेहरा दिखाई दिया। और मेरे सीने में कुछ हलचल सी मच गई। मेरी आँखें उसकी गहरी काली, खूबसूरत, विशाल आँखों से बस कुछ ही इंच दूर थीं। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी पलकें उसकी आँखों को छू लेंगी, ठीक वैसे ही जैसे मेरी साँसें उसकी साँसों में घुल रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे बत्ती जलने से मुझे इतना आनंद मिला हो कि चुंबन से भी शायद इतना आनंद न मिलता।

दृश्य भव्यता भी कम नहीं थी।

तभी मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। और मुझे एहसास हुआ कि हम ठीक उसी जगह बैठे थे जहाँ से कलाकार निकले थे। और वे हमें तब से देख रहे थे, जब से तीस सेकंड पहले बत्तियाँ जली थीं।

हम शर्मिंदा होकर उन्हें देखने लगे। और फिर, शर्म से मरने से पहले ही हम उठकर वहाँ से चले गए। हम पर्दा पार करके दर्शकों के पास चले गए। शर्म से बचने का यही सबसे अच्छा तरीका था - भीड़ में, चेहरों के सागर में खो जाना।

हमने यह सुनिश्चित किया कि उस टीम का कोई भी सदस्य हमें न देख पाए। हम आखिरी पुरस्कार दिए जाने तक भीड़ में बैठे रहे और उस क्षण तक मंच के पास कहीं नहीं गए। और जब यह सब हो गया, तो हर बार की तरह हमें अपनी प्रोडक्शन टीम को उनके शानदार काम के लिए बधाई देनी पड़ी।

कनिका ने टीम से बहुत अच्छे से बात की। जब वह बोलती थी, तो लोग उसे सुनना चाहते थे। वह एक प्यारी सी बच्ची थी, जो अपने हर काम में सबका भला चाहती थी, और साथ ही वह बहुत बुद्धिमान थी और हर चीज की बारीकियों को जानती थी। वह एक बेहतरीन नेता साबित हुई।

मैं उसके ठीक बगल में खड़ा था, फिर भी मैं उसे बिना पलक झपकाए देखता रहा। वह अवास्तविक लग रही थी। उसकी बेदाग त्वचा मानो प्रकाश बिखेर रही थी।

मुझे पता है आप क्या सोच रहे होंगे। हर कोई अपने प्यार में डूबी लड़की के बारे में यही कहता है। लड़की हमेशा बेहद खूबसूरत होती है। इसलिए इन पंक्तियों में कुछ नया नहीं है। लेकिन फर्क ये है कि मैं सच कह रहा हूँ। यह किताब gappaa.org से डाउनलोड की गई है। आपको उसे देखना चाहिए था जब वो अपने कमरे से हॉस्टल मेस तक पजामा पहने चल रही थी। बिस्तर से उठते ही उसके बाल बिखरे हुए थे। उसके बाल अभी भी...
नींद से भरी उसकी नन्ही-सी आँखें, बिना काजल के, सचमुच साँस रोक देती थीं। वैसे तो मुझे उसे कभी उस रूप में देखने का मौका नहीं मिला! वह लड़कियों के हॉस्टल में रहती थी और मुझे अंदर जाने की इजाज़त नहीं थी, लेकिन हर सुबह जब मैं उसे फोन करती और वह फोन पर बात करने के लिए बाहर जा रही होती, तो मैं अपनी सारी कल्पना शक्ति लगाकर यह कल्पना करती कि वह उस समय कैसी दिख रही होगी। और यही मेरे लिए दिन बनाने के लिए काफी था।

जब वह कक्षा में थोड़ी देर से आई, तो पहली बेंच पर बैठे छात्रों ने उसकी बॉडी वॉश की खुशबू सूंघने के लिए गहरी सांस ली। लेक्चरर ने पढ़ाना रोककर उससे पूछा कि वह देर से क्यों आई, जो कि उसे देखने का एक बहाना मात्र था।

आप शायद कहेंगे कि मैं बढ़ा-चढ़ाकर बोल रहा हूँ। लेकिन मैंने इसे इसी तरह देखा। और शायद, असल में बात यह नहीं है कि वास्तव में क्या हुआ था। बात यह है कि मैंने इसे कैसे देखा।

और मेरे लिए - वह एकदम सही थी। हम एकदम सही थे। जीवन आनंदमय था।

नए छात्रों ने सारा काम समेट लिया और सभागार से निकल गए, मानो हम सब दिन का काम खत्म करने वाले हों। मुझे रात भर सभागार की चाबियाँ अपने पास रखनी थीं। जैसे ही हमने मंच से आखिरी सामान उठाया, कनिका ने किसी मशहूर बॉलीवुड निर्देशक की तरह ऐलान किया,

'सामान समेट लो!'

नए छात्र ऐसे सभागार से बाहर भागे मानो उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ पहला स्वतंत्रता संग्राम जीत लिया हो। और सौभाग्य से, इससे कनिका और मैं सभागार में अकेले रह गए।

"तो चलिए चलते हैं," मैंने कहा।

कनिका को मेरी कही बात पसंद नहीं आई। उसने धीरे से पूछा, "क्या हमें ऐसा करना ही

पड़ेगा? हमारे पास और क्या विकल्प है?"

"आपा जन्मदिन है..."

"तो?" मैंने पूछा।

"हमारी पहली मुलाकात की पहली सालगिरह भी है। हम पहली बार आपके पिछले जन्मदिन पर मिले थे, याद है?"

"हाँ, मैं करता हूँ।" सचमुच करता हूँ, कसम से।

कनिका ने मुझे शरारती नज़र से देखा। फिर उसने अपनी जेब से फोन निकाला और एक नंबर डायल किया।

"नमस्कार, श्रीमती साधना? नमस्कार, मैं कनिका हूँ। इतनी रात को आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें। जी हाँ, मैं बस आपको बताना चाहती थी कि मेरे घर पर कुछ काम आ गया है। मुझे अभी घर जाना होगा। इस समय आपको परेशान करने के लिए मुझे बहुत खेद है। जी हाँ, धन्यवाद। मैं वापस आकर आपको बता दूँगी। ठीक है, धन्यवाद, महोदया। ज़रूर, मैं आकर अपने पिताजी से एक पत्र पर हस्ताक्षर करवा लूँगी। शुभ रात्रि।"

मैंने कनिका को हॉस्टल वार्डन से बड़ी आसानी से झूठ बोलते सुना। रात के लिए इजाज़त मिल गई थी। आम तौर पर वह रात में बाहर जाने के लिए राज़ी नहीं होती थी। वह ज़्यादा झूठ बोलने वाली लड़की नहीं थी। लेकिन वह दिन खास था और उसे पता था कि हम अगले कुछ दिनों तक देर रात तक साथ नहीं रहेंगे, इसलिए उसने झूठ बोला।

"मुझे उम्मीद है कि आप मेरे पिताजी के हस्ताक्षर की नकल कर सकते हैं," उसने अपने कंधों को रगड़ते हुए कहा ताकि उसे गर्मी महसूस हो। बाहर उतनी ठंड नहीं थी, लेकिन सभागार में एयर कंडीशनिंग हमेशा ज़रूरत से ज़्यादा चलती थी।

मैंने अपनी स्वेटशर्ट उतारकर उसे दे दी। वह उसमें बेहद खूबसूरत लग रही थी। मैंने उसके सवाल का जवाब नहीं दिया। मैं बस आगे बढ़ा और उसे गले लगा लिया। "क्या मैंने तुम्हें हाल ही में बताया है कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ?"

जैसे ही मैंने ये कहा, मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया। मतलब – कुछ जोड़े ऐसे होते हैं जो हर वाक्य में पूर्ण विराम और अल्पविराम के साथ एक-दूसरे से प्यार का इज़हार करते हैं। और कुछ जोड़े ऐसे होते हैं जो महीनों तक एक-दूसरे से प्यार का इज़हार नहीं करते, जबकि ये बात हमेशा हवा में लटकी रहती है, मानो दुनिया की सबसे ज़ाहिर बात हो। हम तो पक्के तौर पर

दूसरी श्रेणी में आते थे। सच तो ये है कि मैंने उसे लंबे समय से ये नहीं बताया था कि मैं उससे प्यार करता हूँ, और अभी जो सवाल मैंने पूछा, वो तो बिलकुल भी ठीक नहीं था।

"तुमने मुझे यह बात बहुत समय से नहीं बताई है," उसने कहा।

"लेकिन मैं करती हूँ," मैंने कहा, अब भी उसे गले लगाए हुए, उसके बाल मेरे गाल पर थे, उसके शैम्पू की खुशबू पूरी तरह से मेरे दिमाग में बसी हुई थी।

"तुम और बेहतर कर सकते हो। तुम ये बात सालों बाद कह रहे हो। इसे स्टाइल से कहो!" उसने कहा, मानो वह

वह मुझे चुनौती दे रहा था।

एक गहरी सांस लेकर मैंने चुनौती स्वीकार कर ली। वैसे भी, इससे पहले मुझे कभी उसके सामने घुटने टेकने का मौका नहीं मिला था।

तो मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसे मंच पर ले गया। अब हम वहीं खड़े थे जहाँ कुछ ही घंटे पहले सबकी निगाहें टिकी थीं। अगर दर्शक होते, तो हम इस समय पूरी तरह से उनके सामने होते। कमरे की ध्वनि ऐसी थी कि हमारी फुसफुसाहट भी पूरे सभागार में गूंज रही थी। हम अपने दिमाग में चल रहे नाटक के नायक और नायिका थे।

हम सभागार के मंच के ठीक बीच में खड़े थे, ठीक उसी जगह जहाँ स्पॉटलाइट पड़ रही होगी। मुझे कुछ शानदार करने का इससे बेहतर मौका नहीं मिल सकता था।

तो मैं एक घुटने पर बैठ गया और उसका हाथ पकड़ लिया, बिल्कुल वैसे ही जैसे मैंने फिल्मों में देखा था। अब बस अपने दिल की बात कहनी बाकी थी और उसके लिए अपने सारे दिल खोलकर रख देने थे। और मैंने कहना शुरू कर दिया।

"अगर आप पिछले कुछ महीनों से मंगल ग्रह पर रह रहे हैं, तो मैं आपको अपनी कहानी सुनाना चाहता हूँ। मैं किसी से मिला हूँ। वह सुंदर है और उसकी खुशबू... घर जैसी है। आप समझ रहे हैं ना? जैसे मैगी का एक कटोरा माँ की याद दिलाता है, वैसे ही उसकी खुशबू मुझे मेरे कमरे के सुकून की याद दिलाती है, जहाँ मुझे सबसे ज़्यादा अपनापन महसूस होता है। शायद ये उसके लिप ग्लॉस की खुशबू है या कुछ और।"

ये सब पहले से तय नहीं था। पता नहीं हमारी मुलाकात होनी थी या नहीं, लेकिन हम मिल गए। उसने मुझे अपना नाम और अपना पता बताया। मैंने उसे बताया कि मुझे गिटार बजाना बिल्कुल नहीं आता। उसे कोई आपत्ति नहीं हुई। और फिर, मेरे मुंह से पांचवां वाक्य निकलते ही, मुझे उसके साथ अपनी बाकी जिंदगी बिताने का ख्याल आया।

और वो लड़की तुम हो, कनिका। वो लड़की तुम ही हो।

आज आखिरकार यह हो ही रहा है; मेरे घुटने टेककर प्रपोज़ करने का वो पल आखिरकार आ ही गया है।

मुझे नहीं लगता कि कोई मुझे उतना अच्छी तरह जान सकता है जितना आप जानते हैं। बात यह नहीं है कि आप जानते हैं कि मैं कहाँ से आया हूँ, या मैं ट्रैफिक में फंस जाऊँ या गाड़ी का टायर पंचर हो जाए तो मैं क्या करूँगा। बात यह भी नहीं है कि आप मेरी सारी कहानियाँ जानते हैं। मुझे

लगता है, असल में, बात यह है कि मैं उन सभी कहानियों का हिस्सा रहा हूँ, ऐसी बातें हैं जो हम दोनों में हैं, जो मैं किसी और के साथ कभी नहीं कर सकता।

और फिर भी, जब आप मुझे और अच्छे से जान लेंगे, तो आपको एहसास होगा कि आपके प्रति अपने गहरे प्यार को ज़ाहिर करना मेरे लिए कितना मुश्किल है। यकीनन, यह आपके लिए मेरे द्वारा किए गए सबसे कठिन कामों में से एक है। और इसे करने का कोई आसान तरीका नहीं है। सिवाय इसके कि मैं अपने दिल की बात कहूँ और वो सब कुछ बता दूँ जो मैं हमेशा से कहना चाहता था, लेकिन जो मुझे हमेशा से बनावटी लगता था।

मुझे पता है कि आप यह सुनकर थक चुकी होंगी, लेकिन कनिका, आप बेहद खूबसूरत हैं। और मैं यहाँ शारीरिक सुंदरता की बात कर रही हूँ। लेकिन सबसे अच्छी बात यह है कि अगर मैं आपकी खूबियों की सूची बनाऊँ, तो शारीरिक सुंदरता शायद उसमें बहुत नीचे होगी। क्योंकि आप मुझे हर दिन मंत्रमुग्ध करने के कारण देती रहती हैं, जिससे मेरा प्यार आपके लिए और भी गहरा होता जा रहा है।

और ये एक बहुत ही डरावना ख्याल है। मतलब, अगर मैं इसके बारे में सोचूँ तो, शायद ये मेरे जीवन का सबसे अद्भुत पल हो सकता है। ये वो गहरा प्यार है जिसका अनुभव कोई भी कर सकता है। यहाँ से बहुत कुछ गलत भी हो सकता है। लेकिन मैं बस इतना कहना चाहती हूँ कि मैं इसे सफल बनाने के लिए हर संभव कोशिश करूँगी।

उस पल मैं कैसा महसूस कर रहा था, उसे शब्दों में बयां करने की कोशिश करना भी पाप है। मैं उससे प्यार करता था और उसे यह बताने से मेरा प्यार और भी मजबूत हो गया। मुझे अच्छा लगा। यह एक सुखद अनुभव था। उसने कुछ नहीं कहा। मैं उसे दोष नहीं देता। ऐसे इकरार के बाद भला कोई क्या कहेगा? मैंने उसकी आँखों में अनकहे आँसू चमकते देखे। मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया।

हम मंच के कोने पर गए, उसका शरीर जितना हो सके मेरे शरीर से छू रहा था, हम फर्श पर बैठ गए और चुपचाप लेट गए, उस पल का, उस एहसास का, उस रोमांस का और हमारे दिलों में चल रही हर चीज का आनंद ले रहे थे।

हम चुपचाप गले मिले, और सबसे अच्छी बात यह थी कि उस चुप्पी में कुछ भी अजीब नहीं था। हमने उस पल का हर क्षण आनंद लिया।

मेरे होंठ अपने आप हिलने लगे। मैं उसे चूमना चाहता था, लेकिन उसने अपना सिर पीछे कर लिया। मैं समझ गया कि वह क्या कर रही है। वह मेरे साथ खेल रही थी, दिखावा कर रही थी कि आज उसका मूड नहीं है। मैं उसे इतना अच्छी तरह जानता था कि उसके दिखावे में नहीं आ सकता था।

मैंने भी उसके साथ खेलने का फैसला किया और यह देखने की कोशिश की कि वह मुझे चूमने से कितनी देर तक खुद को रोक सकती है।

मैंने कहा, "मुझे अपना फोन दो," और जब उसने मुझे फोन दिया, तो मैंने उससे कहा कि मैं उसके संदेश पढ़ने जा रहा हूँ। कनिका को यह बिल्कुल पसंद नहीं था जब मैं ऐसा करता था।

उसने अपना फ़ोन पकड़ने की कोशिश की, लेकिन मैंने अपना हाथ बहुत तेज़ी से हिला दिया। मैंने अपना हाथ हवा में सीधा किया और उसे चुनौती दी कि वह उसे पकड़ कर दिखाए। मैं उससे बहुत लंबा था। जैसे ही वह कूदी, उसका शरीर मेरे शरीर से रगड़ा। इससे मुझे उत्तेजना हुई और

मुझे यकीन था कि उस पर भी इसका वैसा ही असर हुआ होगा। मैंने उसकी तरफ देखा, यह देखने के लिए कि क्या वह मुझे चूमने के प्रलोभन का विरोध कर सकती है। वह किसी तरह खुद को रोक पा रही थी।

मुझे पता था कि मुझे कुछ और करने की जरूरत होगी।

"मुझे अपना बटुआ चाहिए। वो स्वेटशर्ट की जेब में है," मैंने कहा और अपना हाथ स्वेटशर्ट की जेब में डाल दिया। मैं उसके बहुत करीब आ गया और मेरे हाथ उसके शरीर को छू गए। किसी दोस्त के साथ ऐसा स्पर्श शायद बहुत सामान्य होता। लेकिन जब आप अपने जीवन के प्यार के साथ किसी सभागार में अकेले खड़े हों, तो ऐसा स्पर्श आपके अंदर कामुकता की सिहरन पैदा कर सकता है।
शरीर।

बस यही था। कनिका के लिए अपना यह खेल जारी रखना नामुमकिन था। उसने अपना सिर आगे बढ़ाया और बस इतना ही उसे व्यक्त करना था। मैंने भी अपना सिर आगे बढ़ाया। और हमने चुंबन किया।

थोड़ी ही देर में हम ज़मीन पर लेट गए। जब आप पहली बार किसी के साथ किस करते हैं, तो उसके कुछ तय नियम और चरण होते हैं। शुरुआत एक चुंबन से होती है और धीरे-धीरे अंतरंगता के अगले स्तर तक पहुंचते हैं।

लेकिन कनिका और मैं कुछ समय से साथ थे। कोई औपचारिकता नहीं थी। हमारे हाथ दिमाग का मार्गदर्शन कर रहे थे, न कि दिमाग हाथों का। और वहीं, मंच पर, जहाँ कुछ देर पहले कलाकार आए-गए थे, मैंने उससे प्रेम किया।

मैंने बिना पलक झपकाए सीधे उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा, "तुम इसमें वाकई बहुत

अच्छी हो।" उसने कहा, "मैंने इसे इंटरनेट पर पढ़ा है।"

"क्या आपने इंटरनेट पर पढ़ा है कि प्यार करने में माहिर कैसे बनें?"

"अरे! आप उसी के बारे में बात कर रहे थे?"

"हाँ। आपको कैसा लगा?" मैंने पूछा।

"मुझे लगा कि आप मेरी त्वचा की तारीफ कर रहे हैं।"

"यह भी अच्छा है।"

"शुक्रिया। लेकिन मैंने तो पहली बार में ही सही समझ लिया था। मैंने इसके बारे में इंटरनेट पर भी पढ़ा था," उसने कहा, जब मैंने उसका कान काटा। हम ज़मीन पर लेटे हुए थे, एक-दूसरे को बाहों में थामे हुए, हमारे बीच कपड़े तक नहीं थे। उस पल की खुशी मदहोश कर देने वाली थी।

"समर?" उसने कहा।

"हाँ?"

"मुझसे वादा करो कि तुम मुझे कभी जाने नहीं दोगे..."

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने बस उसे थोड़ा और कसकर पकड़ लिया, बिना शब्दों के उसे आश्वस्त करते हुए कि मैं उसे कभी जाने नहीं दूंगा।

... मैं तुमसे प्यार करता हूँ रचू ...

प्रिय मित्रों, कृपया इस संदेश को तब तक फैलाएं जब तक यह मेरे दोस्त तक न पहुंच जाए। मुझे लगता है कि वह मेरा नाम जानता है।
पुस्तक यहां से डाउनलोड की गई:*EBOOK4IN.BLOGSPOT.COM*

अगली सुबह, मैं उसे गले लगाते हुए जागा। कुछ गले लगना अजीब होते हैं, बस इसलिए कि आप इतने प्यारे हैं कि उसका सिर अपनी बाहों से हटाना नहीं चाहते। और कुछ गले लगना ऐसे होते हैं जो पूरी तरह से आपके जीवन का हिस्सा होते हैं। ऐसा लगता है जैसे उसका शरीर आपके शरीर में समा गया हो और आपका शरीर उसके शरीर में। जैसे आप दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों। हमारा गले लगना इसी तरह का था। और यह हमारे रिश्ते के सबसे अच्छे पलों में से एक था। हम एक-दूसरे के साथ बहुत सहज थे। कोई दिखावा नहीं था, कोई संकोच नहीं था, कोई बनावटीपन नहीं था। यह सच्चा प्यार था।

हम मंच के एक कोने में थे, ठीक उसी जगह जहाँ से कलाकार कल ही चढ़े होंगे। सुबह उठकर यह एहसास बहुत सुखद था। उसके बाल मेरे गालों पर थे। उसकी गोद में उसका हल्का सा स्पर्श, एक सुखद एहसास था। यह एक ऐसी सुबह थी जिसे मैं जीवन भर संजो कर रख सकता था।

कुछ देर बाद उसने अपनी आँखें खोलीं और मैंने उसकी आँखों में देखा। उसने अपने मन की बात ज़ाहिर नहीं की। जो उसे नहीं जानता था, उसके लिए वे बस दो सादी काली आँखें थीं, जिनमें कुछ भी नहीं था। लेकिन मेरे लिए, उसकी हर झलक उसकी जीवन कहानी थी, जिसे मैं किसी और से बेहतर जानता था।

उन्होंने मुझे बताया कि उनकी माँ का निधन एक साल पहले ही एड्स से हो गया था। मैं और कुछ अन्य दोस्त उस मुश्किल समय में उनके साथ थे। हम सबने मिलकर उस कठिन दौर को पार कर लिया था और किसी न किसी तरह वह सामान्य जीवन में लौट आई थीं। उनकी आँखों ने मुझे मुंबई में बिताए उन वर्षों की कहानी सुनाई, जहाँ उन्होंने जीवन के तौर-तरीके सीखे थे, जिन्हें उन्होंने मेरे कॉलेज में दाखिला लेकर दिल्ली के नए तौर-तरीके सीखने के लिए भुला दिया था। वह मुझसे एक साल जूनियर थीं और हमने एक साल प्यार में बिताया था। और मुझे लगता था कि हम कुछ और साल साथ बिता सकते हैं।

मैं जानता हूँ कि मैं उससे प्यार करता था, इसलिए मेरी बात का कोई खास महत्व नहीं है, लेकिन वह एक अच्छी इंसान थी। हर किसी को उसके जैसी कोई न कोई जरूर मिली होगी। वह आपको यकीन दिलाती थी कि दुनिया में अभी भी अच्छाई बाकी है। अच्छे, सच्चे लोग अभी भी मौजूद हैं। और आप बिना ज्यादा सोचे-समझे लोगों पर भरोसा कर सकते हैं। वह आपको यह एहसास दिलाती थी कि आपकी परवाह की जाती है, मानो आपका अस्तित्व और आपकी भलाई

किसी के लिए वाकई मायने रखती हो।

और जब आप कुछ इंच की दूरी से उसकी आँखों में गहराई से देखते थे, तो आपको सचमुच लगता था कि करियर, समाज, पैसा, समय, उम्र, आपके जीवन की बाकी सभी चीजें कितनी व्यर्थ हैं, जब आप कुछ ही इंच की दूरी पर इन आँखों के साथ जाग सकते हैं।

कुछ मिनट बाद उसने आलिंगन तोड़ दिया। "मुझे जाना चाहिए," उसने उठते हुए

कहा। "कहाँ जाना है?" मैंने पूछा।

"हॉस्टल में, और कहाँ?"

"अगर मैं तुम्हें जाने न दूं तो क्या होगा?"

"मुझे नहीं लगता कि आपके पास कोई विकल्प है। मुझे अभी भी नींद आ रही है," उसने कहा।

"मेरे फ्लैट में आ जाओ। मैं वादा करता हूँ कि तुम्हारे अंदर आने से पहले मैं

इसे साफ कर दूंगा।" "मुझे तुम्हारे फ्लैट में अच्छी नींद नहीं आती।"

"तो फिर हम सो नहीं पाएंगे," मैंने कहा।

"तो फिर हम क्या करेंगे?"

"पिज्जा ऑर्डर करें? फिल्म देखें?"

"और... ?"

"कुछ और काम भी करो जो तुम्हें पसंद हों?" मैंने आँख मारी।

"मुझे लगता है कि मैं थोड़ी देर के लिए आ सकता हूँ।"

हम दोनों को पता था कि हमारे मन में क्या चल रहा है। मेरा फ्लैट कॉलेज कैंपस के ठीक सामने था। इसलिए हम सुबह सभागार से मेरे फ्लैट तक टहलने जाते थे। जीवन के छोटे-छोटे सुख।

जैसे ही हम फ्लैट पर पहुँचे, मेरे होंठ उसके होंठों को चूमने के लिए बेताब थे। मैंने उसके पीछे दरवाजा बंद कर दिया, और वह मुझ पर झपटी। अब उसका पूरा भार मुझ पर था। और उसके होंठ मेरे होंठों से छू गए।

जैसे ही हमारा चुंबन तीन मिनट तक चला, मुझे किसी गाने के चलने की आवाज़ सुनाई दी। हम मुड़कर देखने लगे कि कौन है। वो रॉय था, मेरा रूममेट। उसके एक हाथ में फ़ोन था और वो हमारे इस जोशीले चुंबन का वीडियो बना रहा था। दूसरे हाथ में उसके पास बीयर की बोतल थी।

"चलो, तुम दोनों। बहुत अच्छा कर रहे हो। चलो, कुछ कपड़े उतारो," उसने कहा, और कनिका

और मैं सीधे खड़े होकर उसकी ओर देखने लगे।

"तुम क्या कर रहे हो, रॉय?"
"मैं तुम दोनों का वीडियो बना रहा हूँ। तुम दोनों मुझे नज़रअंदाज़ करो और अपना काम करते रहो। मुझे पालिका बाजार में वीडियो के अच्छे दाम मिल जाएँगे।"

"क्या आप इस वीडियो को पालिका बाजार में बेचेंगे?"

"हाँ। अगर ऊपर का हिस्सा उतार दो तो एक महीने के लिए काफी पैसे हैं। अगर पैंट उतार दो तो एक साल के लिए काफी पैसे हैं," रॉय ने कहा, और हम दोनों वहाँ खड़े-खड़े हँसने लगे।

रॉय एक ऐसा ही लड़का था। उसके पास हर मौके के लिए कोई न कोई चुटकुला होता था। कुछ दूसरे रूममेट्स तो उसके रूममेट को उसकी गर्लफ्रेंड से इस तरह चिपके देखकर असहज होकर माहौल खराब कर देते। लेकिन रॉय ने बड़ी चालाकी से बात की और फिर भी प्यारा लगा। वो शहर में चुटकुला सुनाने की कला का सबसे बड़ा उस्ताद था।

"रॉय, क्या तुम सुबह सात बजे शराब पी रहे हो?" कनिका ने उसके हाथ में पकड़ी बीयर की बोतल की ओर इशारा करते हुए कहा।

"हाँ, कल रात की शराब के कारण मुझे हैंगओवर था। इसलिए सोचा, एक ड्रिंक शायद

मदद करे।" "इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि तुम दो महीने की गर्भवती लग रही हो!"

मैंने रॉय के तोंद की ओर इशारा करते हुए कहा।

रॉय ने उस विचार को मन से झटक दिया, और सोफे पर वापस बैठ गया, लैपटॉप को अपनी गोद में रख लिया और उस काम में वापस लग गया जो वह हमारे आने से पहले कर रहा था।

“क्या कर रहे हो रॉय?” कनिका ने बात बदलने की कोशिश करते हुए पूछा। “मैं बस

फेसबुक पर कुछ समय बिता रहा था, उन लड़कियों को देख रहा था जिन्हें मैं कभी पा नहीं

पाऊंगा।” “क्या तुम हर बार जब मैं इस फ्लैट में आती हूँ तो यही नहीं करते?” कनिका ने

पूछा।

रॉय मुस्कुराया, क्योंकि यह आसानी से सच हो सकता था। "हाँ, मुझे पता है मैं ऐसा बहुत करता हूँ। तुम्हें पता है मेरा सबसे बड़ा सपना क्या है?"

"क्या?"

"मेरी फ्रेंड लिस्ट में हजारों खूबसूरत लड़कियां हैं।"

कनिका ने अपने कंप्यूटर स्क्रीन पर नज़र डाली। इस समय उसके 137 दोस्त थे। और इंजीनियरिंग कॉलेज के अधिकांश छात्रों की तरह, उसके दोस्तों में भी कोई लड़की नहीं होगी। कनिका ने अपनी मोटी-सी दिखने वाली तस्वीर पर नज़र डाली।

"ठीक है, मैं आपको बता सकती हूं कि शुरुआत कहां से करनी है," कनिका ने कहा।

"कहाँ?"

"जिम से शुरुआत करें। और बीयर पीना बंद कर दें। मैं आपको एक साल के भीतर परिणाम का आश्वासन देता हूं।"
जब हम दोनों मेरे कमरे में दाखिल हुए तो कनिका ने कहा।

सुबह का समय था। पिछली रात हम दोनों को अच्छी नींद नहीं आई थी, लेकिन नींद तो हमारे दिमाग में थी ही नहीं। कमरे में जाते ही मैंने उसे चूमा और अपने सारे कपड़े उतार दिए।

हम थोड़ी देर बाद सो गए और कुछ घंटों बाद फर्श पर किसी धातु के रखे जाने की आवाज़ से जाग गए। कनिका और मैंने एक-दूसरे को देखा, यह सोचते हुए कि यह कैसी आवाज़ है।

कनिका बिस्तर से उठी और कपड़े पहनने लगी, मैं उसे देखता रहा। फिर हम कमरे से बाहर आए तो देखा कि रॉय बाहर खड़ा था, सिर्फ़ बॉक्सर पहने हुए, दोनों हाथों में एक-एक डम्बल लिए हुए। कनिका को देखते ही वो चौंक गया और पास ही कुर्सी पर रखी अपनी टी-शर्ट उठाकर अपने बॉक्सर के ऊपर लपेट ली। ये नज़ारा बहुत ही मज़ेदार था।

"तुम क्या कर रहे हो?" कनिका ने हंसते हुए पूछा, और उसके बाद वह इतनी जोर से हंसी कि मेरे फ्लैट में हाल के दिनों में इतनी जोर से हंसी किसी ने नहीं सुनी थी।

रॉय ने जवाब देने की ज़हमत नहीं उठाई। इसके बजाय वह तेज़ी से अपने कमरे में चला गया और थोड़ी देर बाद पजामा पहने वापस आया। उसके अंडरवियर के ऊपर टी-शर्ट थी। उसके हाथ में दूध का गिलास था।

"तुमने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह अभी भी यहीं है?" रॉय ने मेरी तरफ देखते हुए कहा। उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया था। मैं अभी भी अपनी हंसी रोकने की कोशिश कर रही थी।

"हे भगवान! रॉय, क्या तुम दूध पी रहे हो?" कनिका ने पूछा।

"हाँ। मुझे लगा कि अब शराब पीना छोड़ने और स्वस्थ जीवन जीने का समय

आ गया है।" "तो तुम बीयर भी छोड़ दोगे?"

"हां। और मैंने सोचा कि मैं व्यायाम करना शुरू कर दूंगा," रॉय ने जवाब दिया।

मैंने कहा, "तुम लड़कियों को कभी प्रभावित नहीं कर सकते, रॉय।"

मुझे पता था कि तुम यही कहोगे। लेकिन अब सब कुछ बदलने वाला है। तीन महीने जिम में बिताने के बाद मेरी बॉडी एकदम परफेक्ट हो जाएगी! मुझे पता चल गया है कि लड़कियां क्या चाहती हैं। अब से मैं हर रोज जिम जाऊंगा।

"चलो रॉय, लड़कियां सिर्फ मांसपेशियों से कहीं ज्यादा चीजें चाहती हैं,"

कनिका ने कहा। "जैसे क्या?"

"अच्छा व्यक्तित्व। अच्छी आवाज़। और कुछ मामलों में, अच्छा चेहरा," मैंने

कहा। "बिल्कुल, मेरा भी यही मतलब था," रॉय ने कहा।

"आपका मतलब क्या है?"

"देखिए, मैं अपनी आवाज या अपने चेहरे के बारे में कुछ नहीं कर सकती। लेकिन मैं अपने शरीर के बारे में कुछ कर सकती हूं। इसलिए मैं उसी पर काम कर रही हूं!"

यह सुनकर कनिका जोर से हंस पड़ी।

यह रॉय की खासियत थी। धरती पर उसका एक ही मकसद था - महिलाओं के साथ संबंध बनाना। वह खाता-पीता और औरतों के बारे में ही सोचता रहता था। बीस साल की उम्र में भी वह उतना ही कुंवारा था जितना जन्म से। और महिलाओं को आकर्षित करने की इस जद्दोजहद ने उसे पागल कर दिया था, एक ऐसी पागलत जिसमें वह औरतों को लुभाने के नए-नए तरीके सोचता रहता था। उसने सब कुछ आजमा लिया था। नए-नए कॉस्मेटिक्स, उधार की गाड़ियां, नकली लहजा। लेकिन अब तक कुछ भी काम नहीं आया था।

लेकिन वह इतना बुरा भी नहीं था। अपनी बेहतरीन बातचीत करने की क्षमता और बेबाक चतुराई के साथ, वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसमें बदलाव आना तय था।

"तो आपको लगता है कि यह काम करेगा?" मैंने पूछा।

"हाँ, मुझे बस कुछ लड़कियों से मिलवाने की ज़रूरत है। कनिका, क्या तुम्हारी कोई हॉट दोस्त है जिससे तुम मेरी मुलाकात करवा सको?" उसने पूछा।

"अच्छा, मुझे सोचने दो... मैं तुम्हारी मुलाकात मानसी से करवा सकती हूँ?"

कनिका ने सुझाव दिया। "मानसी? मुझे यह नाम पसंद है। मुझे उसके बारे में

बताओ।"

"तुम क्या जानना चाहती हो?" कनिका ने पूछा।

"क्या वह कामुक है? ये कितने बड़े हैं?" रॉय ने अपने सीने की ओर इशारा करते हुए पूछा।

कनिका ने उसकी तरफ देखा। "जानते हो रॉय? एक पल के लिए तो मुझे लगा कि शायद तुम्हारा रिश्ता करवाना इतना बुरा विचार नहीं होगा। लेकिन जब तुम किसी के बारे में पहला सवाल यही पूछते हो, तो मुझे सच में दोबारा सोचने पर मजबूर होना पड़ता है।" यह लगभग उसकी हद से ज़्यादा बदतमीज़ी थी। वह इतनी प्यारी थी कि इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह पाई।

"क्या इसका जवाब हां है?" रॉय ने पूछा।

"मेरी नज़र में तो यह बस एक 'दफ़ा हो जाओ' का इशारा है," मैंने हंसते हुए कहा।

"धत् तेरे की। मुझे एक और मौका दो। मैं वादा करता हूँ कि अब मैं एक अच्छा सवाल

पूछूंगा," रॉय ने कहा। "ठीक है," कनिका ने कहा।

उसे किस तरह के लड़के पसंद हैं?

"ओह। अच्छा, मुझे सोचने दो। मानसी तो साक्षात्कार की मूर्ति है। इसलिए स्वाभाविक रूप से उसे सभ्य, सुसंस्कृत लड़के पसंद आते हैं जिनका खानदानी तौर पर अच्छा इतिहास हो। मतलब, वह जहां भी जाती है, अपनी शालीनता बिखेरती है।"

रॉय की थोड़ी सी उम्मीद भी खत्म हो चुकी थी। यह लड़की तो साफ तौर पर इस लीग से बाहर थी।

"और क्या?" उसने विनम्र स्वर में पूछा।

"वैसे, मुझे लगता है कि उसे बुद्धिमान लड़के ज्यादा पसंद हैं। ऐसे लड़के जो बुद्धिमत्ता का परिचय देते हों।"

रॉय ने सिर हिलाया और इस बारे में काफी देर तक सोचा।

फिर भी, उससे बात करो और मुझे बताओ कि वह क्या सोचती है। क्या पता, कुछ बात बन जाए।

"हम्म," कनिका ने बिना कोई पक्का जवाब दिए कहा। मैं समझ गई कि उसके मन में क्या चल रहा होगा। वह सोच रही होगी कि क्या रॉय उसकी दोस्त के साथ मौका पाने के लायक है या नहीं।

मैंने कनिका से पूछा, "तो आज के लिए क्या योजना है?"

मुझे आठ बजे तक हॉस्टल वापस जाना है, और अभी छह बज चुके हैं।

"हमें साथ मिलकर कोई और कार्यक्रम आयोजित करने की सख्त जरूरत है ताकि आप देर रात तक बाहर रह सकें।"

"हां। लेकिन फिलहाल, मेरे पास एक बहुत ही रोमांटिक योजना है," उसने कहा।

"मैं सुन रहा हूँ।"

"चलो आज साथ में डॉक्टर के पास चलते हैं," कनिका ने कहा।

हम डॉक्टर के पास क्यों जाएंगे?

"मुझे अस्थमा की वजह से कुछ परेशानी हो रही है। मैं ईएनटी विशेषज्ञ से मिलना चाहता हूं।"

कनिका को बचपन से ही अस्थमा था। लेकिन मां की मृत्यु के बाद से उसकी हालत और बिगड़ गई थी। राधिका आंटी की मृत्यु के बाद से ही कनिका का स्वास्थ्य भी बिगड़ने लगा था। हालांकि बाद में वह काफी हद तक ठीक हो गई, लेकिन अस्थमा समय के साथ ठीक नहीं हुआ।
मुझे उसकी चिंता होने लगी थी। पिछले आठ महीनों में उसे अस्थमा के दो दौरे पड़ चुके थे। हालांकि उसकी हालत काफी हद तक नियंत्रण में थी, फिर भी उसे लगातार दवा लेनी पड़ती थी। और डॉक्टर के पास जाना भी अब नियमित हो गया था।

तो उस शाम हमने यही किया। हम डॉक्टर के पास गए। वैसे तो यह बोरिंग होना चाहिए था, लेकिन चूंकि हम साथ थे, इसलिए ऐसा बिल्कुल नहीं था। बहुत मज़ा आया। जब हम वेटिंग रूम में बैठे थे, तो हमने मैगज़ीन में छपी तस्वीरों का खूब मज़ाक उड़ाया। जब हम डॉक्टर के साथ अंदर गए, तो कनिका के गले में झाँकते समय उनके चेहरे के हाव-भाव देखकर मैं हँसी नहीं रोक पाई। जब उन्होंने नज़रें हटाईं, तो कनिका भी मेरे साथ हँसने लगी।

तभी डॉक्टर को एक फोन आया।

"मेरे पहुंचने तक उसे एक यूनिट खून दे दो। मुझे पता है कि मामला गंभीर है, लेकिन ब्लड बैंक में कम से कम एक यूनिट खून तो होना ही चाहिए। क्या तुम मजाक कर रहे हो? तुम्हारे पास एक यूनिट भी नहीं है?" हमने डॉक्टर को फोन पर चिल्लाते हुए सुना।

मैंने डॉक्टर से धीरे से पूछा, "हम किस ब्लड ग्रुप की बात कर रहे हैं?"

डॉक्टर ने जवाब दिया, "बी+।"

हम दोनों में से किसी का भी ब्लड ग्रुप बी+ नहीं था। लेकिन मुझे पता था कि रॉय का ब्लड ग्रुप बी+ था।

इसलिए मैंने कनिका से कहा कि वह उसे फोन करे और उसे डॉक्टर द्वारा दिए गए अस्पताल के पते पर पहुंचने के लिए कहे।

कनिका ने उसे सारी बात समझाई। लेकिन रॉय शरारती मूड में था। "बदले

में मुझे क्या मिलेगा?" रॉय ने कनिका से शरारती अंदाज़ में पूछा।

"इसके बदले तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। धिक्कार है, ये बहुत गंभीर मामला है, रॉय!"

"लेकिन मुझे बदले में कुछ चाहिए। वरना मैं एक इंच भी नहीं हिलूंगा।" "क्या?"

"तुम मानसी को फेसबुक पर मेरी फ्रेंड रिक्वेस्ट एक्सेप्ट करवा दोगे," रॉय ने फोन पर मुस्कुराते हुए कहा।

"ठीक है! मैं करूँगी! अब भागो!" कनिका ने कहा।

"चिंता मत करो। मैं अस्पताल के आधे रास्ते तक पहुँच चुका हूँ। जैसे ही तुमने मुझे

अस्पताल का पता दिया, मैं घर से निकल गया था," रॉय ने कहा और फोन काट दिया।

कनिका ने मेरी तरफ देखा और अचानक उसके चेहरे पर तनाव का भाव मुस्कान में बदल गया। मैं समझ गई कि रॉय ने अपनी कोई और प्यारी सी बेवकूफी जरूर कर दी होगी।

और जब सब कुछ शांत हो गया, तो कनिका और मैंने एक-दूसरे को देखा। हम दोनों एक ही बात सोच रहे थे। दरअसल, यह कनिका का ही विचार था। अपनी माँ के देहांत के बाद से ही वह एड्स और कैंसर के मरीजों के लिए अपना योगदान दे रही थी। मुझे याद है, वह कई बार दुकानों पर एड्स और कैंसर के मरीजों के लिए चंदा इकट्ठा करने के लिए रखे पारदर्शी बक्सों में कुछ सौ रुपये के नोट डालती थी। हाँ, अपने सख्त और दृढ़ निश्चयी बाहरी रूप के पीछे वह एक दयालु आत्मा है। हम मेरे फ्लैट पर पहुँचे और मैंने अपना लैपटॉप चालू किया, और साथ मिलकर हमने उस रक्तदान शिविर के पोस्टर पर काम करना शुरू किया जिसे हम दोनों मिलकर आयोजित करने वाले थे।

वह लोगों की मदद करने को लेकर उत्साहित थी; मैं खुद की मदद करने को लेकर उत्साहित था। यह समर और कनिका द्वारा आयोजित किया जाने वाला अगला कार्यक्रम था।

I वो उन रातों में से एक थी जब कनिका और मैंने पूरी रात बातें कीं। ये कमाल की बात है कि हमें अब भी बात करने के लिए इतने सारे विषय मिल जाते हैं। खैर, मैंने अभी-अभी कॉल खत्म की ही थी कि मैंने देखा कि रॉय अभी भी जाग रहा था और अपने लैपटॉप पर काम कर रहा था।

"अरे, क्या हालचाल है?" मैंने अंदर आते हुए कहा।

"कुछ नहीं," उसने कहा और अपने लैपटॉप की स्क्रीन छुपा ली।

"अश्लील?"

"उम्म... मैं बस अपनी तस्वीरों को एडिट कर रहा था ताकि उन्हें फेसबुक पर अपलोड कर

सकूं," उसने कहा। "क्या? मुझे दिखाओ?"

"इसमें कुछ खास नहीं है! बस अपनी तस्वीरों को थोड़ा-बहुत ठीक कर रहा हूँ।"

"लेकिन क्यों?" मैंने पूछा।

उन्होंने कहा, "वास्तविक जीवन में सुंदर दिखने से ज्यादा महत्वपूर्ण फेसबुक पर एक अच्छी डिस्प्ले पिक्चर लगाना है।"

"क्या तुम सच कह रहे हो?" मैंने कहा और झुककर देखा कि उसने अपनी तस्वीर के साथ क्या किया है। जो मैंने देखा उससे मैं दंग रह गई। उसका रंग बीस गुना ज़्यादा गोरा लग रहा था, त्वचा साफ़ हो गई थी, और उसके गाल पर जो निशान था, वह अब डिंपल जैसा दिख रहा था।

मुझे नहीं पता था कि तुम्हारे चेहरे पर डिंपल है।

"मेरे पास तो डिंपल नहीं है, लेकिन फोटोशॉप के सही फंक्शन्स की मदद से मैं अपने गाल पर डिंपल का भ्रम पैदा कर सकता हूँ। लड़कियाँ डिंपल बहुत पसंद करती हैं, यार," उसने कहा।

"जो भी हो!" मैंने कंधे उचका दिए।

“तो आज जब मानसी मेरी फ्रेंड रिक्वेस्ट एक्सेप्ट करेगी, तो उसे अपने गालों पर एक डिंपल मुस्कुराता हुआ दिखेगा,” उसने कहा। मैं उसे बताना चाहती थी कि उसे शायद उसकी गर्दन के ऊपर की डबल चिन की परतें ही दिखेंगी। लेकिन मैंने उसकी उम्मीदों पर पानी फेरना ठीक नहीं समझा। इसके बजाय, मैं साढ़े आठ बजे के लेक्चर के लिए तैयार होने लगी।

कनिका और मैं एक-दूसरे से अलग न होने वाले दोस्त बन गए थे। सौभाग्य से, उस साल प्रोफेसर छात्रों को परेशान नहीं कर रहे थे, इसलिए हमें साथ में काफी समय बिताने का मौका मिला। और अब जब हमें रक्तदान शिविर का आयोजन करना था, तो हम शाम के उन अतिरिक्त दो घंटों को फिर से साथ में बिताने लगे, पोस्टर और फ्लेक्स को सही जगह पर लगाने में।

उस शाम, जब मैं बिस्तर को सही जगह पर रख रहा था और कनिका सीरिंज और सुइयों को व्यवस्थित कर रही थी, तभी रॉय का फोन आया।

"समर, तुम कहाँ हो?" उसने असामान्य रूप से उत्साहित स्वर में कहा।

"ऑडिटोरियम क्यों?"

उसने कॉल काट दी और दस मिनट बाद वह सभागार में था। "तो, क्या खबर

है?" कनिका ने उससे पूछा।

"मानसी ने मेरी फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार कर ली और मैंने उसकी सभी तस्वीरों को लाइक किया और उन सभी पर तारीफ भरे कमेंट्स छोड़े। लेकिन, अंदाजा लगाओ क्या हुआ?"

"क्या?"

"मानसी आहूजा को आपकी फोटो पसंद आई। मेरी फोटो!" रॉय ने कहा, मानो वह खुशी से रोने ही वाला हो।

"उसे तुम्हारी एक तस्वीर पसंद आई। इसमें क्या बड़ी बात है?" मैंने कहा, तब मुझे इसकी अहमियत का एहसास नहीं था।

"अरे, बात यहीं खत्म नहीं हुई। यह तो असली मज़ा है। मैंने पूरी दोपहर उसका ऑनलाइन आने का इंतज़ार किया ताकि हम चैट कर सकें। और जब हमने चैट की, तो बहुत ही शानदार रहा।"

"क्यों? उसने क्या कहा?"

"बात यह नहीं है कि उसने क्या कहा! बात बस इतनी सी है कि वह बहुत ही शानदार है। उसका सेंस ऑफ ह्यूमर कमाल का है। वह बहुत ही बुद्धिमान है। मैं उससे बेइंतहा प्यार करता

हूँ।"

"वह मेरी बहुत अच्छी दोस्त है, इसलिए कृपया कोई बेवकूफी भरी हरकत मत करना,"

कनिका ने कहा। "मैं ऐसा क्यों करूंगी? और आज बारह बजे हमारी फिर से बात होगी।"

"बिल्कुल भी बुरा नहीं," कनिका ने कहा।

"आपको ऐसा लगता है?"
"हाँ। बस... मेरा मतलब है... कृपया उसके साथ अच्छा व्यवहार करना। वह अच्छी लड़की है," कनिका ने अपने हॉस्टल के गेट में प्रवेश करते हुए और हमें अलविदा कहते हुए कहा।

इससे पहले कनिका ने मुझसे कई बार मानसी का ज़िक्र किया था। उसने कहा था कि मानसी में पैसे और शान-शौकत की झलक साफ दिखती है। वे दोनों साथ में शॉपिंग करने जाती थीं और कनिका मानसी के कपड़ों के बेमिसाल स्वाद की बहुत इज़्ज़त करती थी। कनिका ने बताया था कि मानसी बेहद खूबसूरत तो नहीं थी, लेकिन सुंदर थी और उसके चेहरे के नैन-नक्श बेहद आकर्षक थे।

"तो, क्या आप वाकई में मौका लेना चाहते हैं?" मैंने रॉय से पूछा।

उसने मेरी तरफ देखा और कंधे उचका दिए। उसे अब भी पता नहीं था। लेकिन कनिका से मानसी के बारे में जो मैंने सुना था, उससे मुझे लगा कि उसके सफल होने की संभावना बहुत कम है। फिर भी, मैं चाहती थी कि वह पूरी लगन से कोशिश करता रहे।

"पर बहुत अच्छा लग रहा है," रॉय ने कहा, जब हम अपने फ्लैट की ओर चल रहे थे। रॉय का यह बिल्कुल नया रूप था जो मैं देख रहा था।

मेरे मुंह से 'क्या?' निकल गया।

"मेरा मतलब है - इन सभी महीनों में, मैं तुम्हें देखता था और तुम्हारी परिपूर्ण जीवनशैली देखकर ईर्ष्या करता था। और अब, मैं खुद एक असली लड़की के प्यार में पड़ गया हूँ। मुझे यह एहसास बहुत अच्छा लगता है।"

मैंने कुछ नहीं कहा। लेकिन मेरी प्रतिक्रिया से शायद सब कुछ पता चल गया होगा। रॉय को लगा कि शायद प्यार में होना हमेशा इतना आसान नहीं होता।

"क्या? तुम अपने रिश्ते से खुश नहीं हो?" उसने पूछा।

"हाँ, बिल्कुल। लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इसके कुछ

नुकसान भी हैं।" "जैसे?"

मैंने कहा, "इसे छोड़ दो।"

"तुम्हें लगता है कि मैं इसे जाने दूंगा?"

किसी तरह उसने मुझे काम शुरू करने के लिए प्रेरित किया।

मैंने उससे कहा कि सबसे पहले तो तुम्हें अपने आस-पास की सभी खूबसूरत लड़कियों को नज़रअंदाज़ करना होगा, जो अपने आप में काफी मुश्किल है। और दूसरी बात, तुम्हें उसकी सभी कमियों को अनदेखा करके उसे वैसे ही प्यार करना होगा जैसी वह है। मुझे पहले हिस्से में कोई दिक्कत नहीं थी क्योंकि सच कहूँ तो, कनिका के साथ मुझे ऐसी बहुत कम लड़कियाँ मिलती थीं जिन्हें देखकर मेरा मन करता था कि मैं उन्हें देखूँ। लेकिन दूसरे हिस्से में मुझे कभी-कभी परेशानी होती थी।

जैसे एक सुबह, मैं एक बहुत अच्छे सपने के बाद जागा था और बहुत खुश महसूस कर रहा था। तो जब मैं कॉलेज गया और उसे देखा, तो मैंने सहज ही उसे गले लगा लिया।
यह एक आवेगपूर्ण क्रिया थी।

"अपना स्नेह ज़रूरत से ज़्यादा मत दिखाओ," मुझे एक जोरदार थप्पड़ पड़ा।

मैंने फिर कभी सहज रूप से उसे गले नहीं लगाया। और फिर, एक दिन, जब हम एक कॉफी शॉप में यूं ही कॉफी पी रहे थे, तो वह थोड़ी उदास लग रही थी। जब मैंने उससे पूछा कि क्यों, तो उसने मुझे झट से जवाब दिया, "तुम अब मुझसे प्यार नहीं करते। तुम मुझे बिना किसी कारण के भी वैसे गले नहीं लगाते जैसे पहले लगाते थे।"

मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि मुझे क्या करना चाहिए। चाहे कुछ भी हो, मुझ पर किसी न किसी बात का दोष मढ़ दिया जाता था।

जब वो शॉपिंग करने जाती थी, तो मैं उसके बैग उठाती और जहाँ भी वो जाती, मैं उसके साथ जाती। अगर मैं साथ नहीं जाती, तो कम से कम उसे लेने और छोड़ने तो जाती ही थी। अगर मैं मना करती, तो वो मुझसे बार-बार पूछती, "क्या मैं तुम्हारे साथ शॉपिंग करने नहीं आती?" वो ये बात कभी नहीं बताती कि मुझे शॉपिंग करने में दस मिनट लगते हैं, जबकि उसे पूरा दिन लग जाता है। और तब भी, कुछ चीज़ें वो भूल जाती है और अगले हफ्ते फिर से शॉपिंग करने का प्लान बन जाता है।

और इसके अलावा, दो और मुलाकातों में उन चीजों को बदलवाना। और फिर उन चीजों के बारे में शिकायत करना जो उसने नहीं खरीदीं।

जब वो फोन करती, और मैं कहता कि ‘मैं व्यस्त हूँ’, तो हंगामा मच जाता। वो मुझे ‘बस एक मिनट’ बात करने के लिए मना लेती। और फिर, जब बात करने के लिए कुछ नहीं होता, तो और भी हंगामा मच जाता। “तुम मुझे नज़रअंदाज़ कर रहे हो। तुम मुझे अपनी ज़िंदगी के बारे में भी नहीं बताते। क्या तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो?”

और जानते हैं सबसे बुरी बात क्या है?

इसे पढ़ने के बाद अगर आप जाकर उससे बात कर सकें, तो उसे आपको यह समझाने में एक मिनट भी नहीं लगेगा कि इस रिश्ते में असली बुराई मेरे साथ ही है।

उफ़।

ठीक है, मुद्दे से भटकना नहीं चाहता। इन सब बातों के बावजूद, मैं उससे बेइंतहा प्यार करता था। इन छोटी-मोटी कमियों के बावजूद, मुझे किसी और लड़की की चाहत नहीं थी। मेरे लिए वही एकमात्र मायने रखती थी। और धीरे-धीरे, मुझे उसकी कमियाँ भी पसंद आने लगी थीं। मैं सचमुच उसके लिए पागल था।

मेरी बड़बड़ाहट खत्म होते-होते हम अपने फ्लैट पर पहुँच गए। मुझे सोने जाना था और उसे बारह बजे मानसी से बात करने के लिए मिलना था। वह खुश लग रहा था। मैं भी संतुष्ट थी। हम एक खुशहाल फ्लैट में रह रहे थे, हालाँकि मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि रॉय की यह खुशी अगली सुबह मेरे लिए एक चुभन बन जाएगी।

मैं हमेशा की तरह सुबह आठ बजकर पंद्रह मिनट पर उठा, क्योंकि मुझे साढ़े आठ बजे लेक्चर शुरू करना था। ब्रश मुंह में दबाए, मैं रॉय के कमरे की ओर बढ़ा और उसे स्टडी टेबल पर बैठा पाया। मेरी आँखें फटी रह गईं क्योंकि स्टडी टेबल का एकमात्र उपयोग पुराने कपड़े रखने के लिए था। यह कुछ अलग था।

मैंने कहा, "ये क्या...? तुम अभी भी जाग रहे हो?"

उन्होंने कहा, "मैं सोया नहीं हूँ। और अब, तुम मेरी मदद करोगे।"

"आपकी मदद? किस चीज़ में?"

"क्या कनिका ने तुम्हें बताया कि मानसी 'स्पिरिट ऑफ लिविंग' के चक्कर में पड़ी है? गुरुओं वगैरह में? खैर, छोड़ो। बात ये है कि उसने अपने कॉलेज में एक सेमिनार आयोजित किया है और उसका गुरु आ रहा है। तो, कल रात वो शुरुआती प्रस्तावना लिखने में जूझ रही थी। मैंने उसकी मदद करने की पेशकश की थी, लेकिन चार घंटे बीत गए और मैंने जो कुछ लिखा है, सब बेकार है। तुम्हें मेरे लिए लिखना होगा, यार।"

"और मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए?" मैंने ब्रश करते हुए पूछा।

"क्योंकि तुम मेरी रूममेट हो। और रूममेट्स एक-दूसरे को अपनी पसंद की लड़कियों को पाने में मदद करते हैं!"

"इसे लिखकर तुम उसे कैसे पाओगे?"

"मैंने उससे कहा कि अगर मैं उसके लिए यह लिखूं तो मुझे कुछ इनाम चाहिए होगा। और उसने हां कह दी!" रॉय ने खुशी से कहा।

"उसने किया?"

"हाँ। तो अब सब कुछ तुम्हारे हाथ में है, समर।" उसने सहानुभूति भरी नज़रों से मेरी तरफ

देखा। "माफ़ करना यार। मुझे क्लास में जाना है।"

"कृपया।"

मैंने कहा, "भाड़ में जाओ," और अपने कमरे में वापस चला गया।

वह तब तक मेरे पीछे-पीछे आता रहा जब तक मैंने उसके चेहरे पर दरवाजा पटक नहीं दिया। और जब मैं कॉलेज के लिए तैयार होकर बाहर निकली, तो वह अभी भी वहीं था।

मैंने कहा, "मुझे क्लास के लिए देर हो रही है।"
"और इसके लिए आपको मेरी इस क्लास में नहीं आना पड़ेगा।"

"क्या तुम अपनी किस्मत को कुछ ज्यादा ही आजमा नहीं रहे हो, रॉय?"

"इसमें आपको मुश्किल से दस मिनट लगेंगे!" उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"ठीक है। मैं यहाँ से जा रही हूँ," मैंने कहा और दरवाज़े की तरफ भागी, लेकिन रॉय मुझसे पहले दरवाज़े पर पहुँच गया और अपनी बाहों से दरवाज़ा रोक दिया। उसकी आँखों में एक अलग ही भाव था। वह गंभीर था। मुझे पता था कि मेरे पास कोई रास्ता नहीं है। मुझे हार माननी ही पड़ी। मैंने लेक्चर छोड़ दिया और दिखावे के तौर पर प्रस्तावना लिखी, जिसमें मैं बहुत ज़्यादा शिकायतें करती रही। मैंने उसके लिखे हुए में से ज़्यादातर अंश लिए, और उसने वाकई बहुत अच्छा लिखा था, और उसे एक अच्छा और करने लायक लेख बना दिया था। लेकिन मैंने उसे यह बताने का मौका नहीं छोड़ा कि उस पर मेरा बहुत बड़ा एहसान है। रॉय ने शेखी मारी थी कि वह इसे दस बजे तक पूरा कर लेगा और यह कोई बड़ी बात नहीं है। और जैसे-जैसे घड़ी दस के करीब पहुँच रही थी, उसकी घबराहट मुझे डरा रही थी। जैसे ही उसने अपने ईमेल अकाउंट पर 'भेजें' टैब पर क्लिक किया, शांत होने के बजाय, वह और भी ज़्यादा घबरा गया।

और फिर हम दोनों जवाब की प्रतीक्षा करने लगे। कोई जवाब नहीं आया।

"वो जवाब क्यों नहीं दे रही? क्या उसे मेरा लिखा हुआ पसंद नहीं आया? ज़ाहिर है, उसे पसंद नहीं आया होगा। और अब वो मुझे ये बताने में भी शर्मा रही है कि ये बेवकूफी थी। हे भगवान, समर, मुझे तुम्हारी बात कभी नहीं माननी चाहिए थी।"

"उसने जवाब नहीं दिया क्योंकि आम लोग सुबह दस बजे कॉलेज में होते हैं, बेवकूफ।" मैंने उसे चुप करा दिया। "और अब, अगर आप मुझे इजाज़त दें, तो मुझे भी कुछ क्लास अटेंड करनी हैं," मैंने कहा और अपने फ्लैट से निकल गई। इससे पहले मैंने कभी किसी क्लास में जाने का इतना इंतज़ार नहीं किया था। यह वाकई राहत की बात थी।

रॉय दोपहर के भोजन के बाद ही व्याख्यान कक्ष में आए। यह स्पष्ट था कि वे बेहद खुश थे।

"क्या हुआ?" मैंने पूछा, जब वह लेक्चर हॉल में मेरे बगल में बैठ गया।

वह बस पागलों जैसी मुस्कान लिए खड़ा रहा और कुछ नहीं बोला।

मैंने पूछा, "क्या तुम मुझे बताओगे कि क्या हुआ?"

"उसे मेरा लिखा हुआ पसंद आया। इसलिए अब उसे मेरा इलाज करना होगा।

कमाल है ना?" "वाह! तो तुम उससे कब मिल रहे हो?"

उन्होंने कहा, "मैंने उसे बताया कि मैं दो सप्ताह के लिए शहर से बाहर रहूंगा और वापस आने के बाद ही उससे मिलूंगा।"
"आपको ऐसा क्यों करना होगा?"

"क्योंकि उससे मिलने के लिए तैयारियों की जरूरत होगी।"

मैंने पूछा, "हम यहां किस तरह की तैयारियों की बात कर रहे हैं?"

"मैंने उसके एल्बम देखे और वो बहुत अमीर लगती है, समर। उसके आस-पास के सभी लड़के महंगे कपड़े पहनते हैं और उनके पास बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ वगैरह हैं। दूसरे हिस्से के बारे में तो हम कुछ नहीं कर सकते, लेकिन कम से कम पहला हिस्सा तो ठीक कर सकता हूँ?" उसने पूरी गंभीरता से पूछा।

"और बिल्कुल कैसे?"

"चिंता मत करो, मैंने सब कुछ सुलझा लिया है।"

"ओह, नहीं," मैंने कहा। मुझे पता था कि हम बहुत बड़ी मुसीबत में हैं।

थोड़ी मेहनत लगी, लेकिन आखिरकार हम रॉय को उसकी डेट को इंप्रेस करने के लिए ज़रूरी सब कुछ जुटाने में कामयाब हो गए। और हमने जो भी सामान मंगवाया, वो उन ब्रांड्स का था जिन्हें हम हमेशा से पसंद करते थे, लेकिन कभी खरीद नहीं पाते थे। हमने ये सब कैसे किया, ये कहानी हम फिर कभी सुनाएंगे, लेकिन संक्षेप में कहें तो, हमने बड़ों से किताबें उधार लीं और उन्हें बेच दिया। खैर, बात ये है कि रॉय, इतनी मेहनत के बाद, अपनी पहली डेट के लिए पूरी तरह तैयार था - नए कपड़े, नए जूते, और वही पुराना अंदाज़।

मानसी के साथ यह मुलाकात रॉय के जीवन का दूसरा दौर जैसा था। ऐसा लग रहा था मानो चाहे यह मुलाकात अच्छी हो या बुरी, इसके बाद रॉय कभी पहले जैसा नहीं रहेगा। या तो वह खुद से प्यार करने लगेगा या फिर इसका उल्टा होगा। दोनों ही स्थिति में, वह इसे एक बड़ी घटना मान रहा था। इसके अलावा, उसने इस मुलाकात की तैयारी में पूरे दो हफ्ते लगा दिए थे, जो उसने किसी भी टेनिस टूर्नामेंट या महत्वपूर्ण परीक्षा के लिए कभी नहीं लगाए थे, इसलिए दांव बहुत ऊँचा था।

जिस शाम आखिरकार उससे मिलने का समय तय हुआ, उसने अपनी दाढ़ी के छोटे-छोटे बाल साफ कर लिए, केवल दाढ़ी के छोटे-छोटे बाल ही रहने दिए, मानो उन्हें करीने से संवारा गया हो। उसने अपने बालों में आधी कंघी की और जूतों और कमीज से प्राइस टैग हटाकर उन्हें पहन लिया।

वह सही था। उस दिन वह सचमुच एक अलग ही इंसान जैसा दिखने में कामयाब रहा था। मुझे उस पर थोड़ा गर्व महसूस हुआ। मैंने उसे ज़्यादा मौका नहीं दिया था। लेकिन अब, ऐसा लग रहा था जैसे वह मौका मांग रहा हो। उसने अच्छी तैयारी की थी।

मैंने उन्हें शाम के लिए शुभकामनाएं देने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

Roय मेरी उम्मीद से जल्दी और खुश होकर लौट आया। जब वह लौटा, तब मैं कनिका से फोन पर बात कर रही थी। हम यह जानने का इंतजार कर रहे थे कि सब कैसा रहा।

"अरे, रॉय यहाँ है," मैंने कनिका से कहा।

"तो आप लोग बात कर लीजिए। मैं सोने जा रही हूँ," उसने कहा।

"ठीक है, शुभ रात्रि।"

"शुभ रात्रि। लव यू," उसने अपनी बेहद मधुर आवाज में कहा।

मैंने रॉय की कहानी सुनने के लिए उसकी ओर रुख किया। हमने उसे डेट के लिए तैयार करने में जो मेहनत की थी, उसके बाद मैं यह जानने के लिए बहुत उत्सुक थी कि सब कैसा रहा।

"तो कैसा रहा?" मैंने पूछा।

"सच कहूँ तो, मुझे कुछ पता नहीं। हो सकता है वो मुझे पसंद करती हो, या फिर बस अच्छा बर्ताव कर रही हो। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। उसने मेरे चुटकुलों पर हँसा तो था। लेकिन हो सकता है वो नाटक कर रही हो, है ना? पर वो नाटक क्यों करेगी? मुझे सच में नहीं पता। धिक्कार है।"

"अरे, जो भी हो। लेकिन क्या तुम लोग दोबारा मिल रहे हो? उसने इस बारे में क्या कहा?"

"बात कुछ ऐसी थी कि मैं तुमसे जरूर मिलूंगा। लेकिन मैं तुम्हें यह नहीं बताऊंगा कि मैं तुमसे मिलने के लिए उत्सुक हूं या फिर इसलिए कि मैं किसी से दोबारा न मिलने के लिए बहुत असभ्य हूं," रॉय ने कहा।

"तो आपका मतलब यह है कि वह रहस्यमयी थी?"

"सच में नहीं। बस बात इतनी है कि वह इतनी सभ्य और उच्च कोटि की है कि उसकी प्रतिक्रियाओं से कुछ भी अंदाजा नहीं लगाया जा सकता।"

"हम्म। तो मुझे लगता है, हमारे पास यह पता लगाने का सिर्फ एक ही तरीका बचा है कि वह तुम्हारे बारे में क्या सोचती थी...?" मैंने कहा।

"असल में क्या?"

"कनिका। और कौन?"

पता नहीं क्यों, रॉय को इस बात का ख्याल ही नहीं आया था। कनिका और मानसी पुरानी दोस्त थीं। उन्हें तो एक-दूसरे से सब कुछ बताना ही चाहिए था, है ना? मैंने कनिका को फोन किया, लेकिन उसने फोन नहीं उठाया। मुझे हैरानी नहीं हुई। वो सो गई होगी। मुझे यही उम्मीद करनी चाहिए थी।

मैंने सुझाव दिया, "तुम मानसी को मैसेज क्यों नहीं करते?"

"क्या तुम पागल हो? मुझे यह जाने बिना कि वह मुझे पसंद करती है या नहीं, मैं उसे मैसेज कैसे कर सकता हूँ?"

"हम्म।"

और यहीं से रॉय के लिए सुबह का बेसब्री से इंतज़ार शुरू हुआ। मैं उसकी बॉडी लैंग्वेज से समझ सकती थी। वह सचमुच इस लड़की को चाहता था। फिर भी, इस रात में वह कुछ नहीं कर सकता था।

अगली सुबह, मैं अपने सामान्य समय पर, साढ़े आठ बजे की क्लास से पंद्रह मिनट पहले उठ गई। और आखिरकार मैंने वह नज़ारा देखा, जिसके बारे में मैंने सोचा था कि जागने पर मुझे कभी देखने को नहीं मिलेगा। रॉय नहा चुका था, साफ-सुथरी चेक वाली कमीज़ पहन चुका था और अपने बाल भी संवार चुका था। मैंने उसे कॉलेज जाने के लिए इतना उत्साहित कभी नहीं देखा था। उसने मुझे भी झटपट उठने और तैयार होने को कहा। लेकिन दिन की पहली क्लास की उसे चिंता नहीं थी। उसने मुझे कनिका को फोन करके हमसे मिलने के लिए बुलाया।

हम समय पर कॉलेज पहुंच गए, शुक्र है, क्योंकि जब तक हम कनिका से मिले, रॉय की सांसें तेज चलने लगी थीं और ऐसा लग रहा था कि वह बेहोश हो जाएगा।

"अच्छा..." कनिका ने हमें बताना शुरू किया कि उसे क्या बताया गया था। "मैं समझ गई कि वह तुमसे नफरत तो बिल्कुल नहीं करती थी। उसे तुम्हारी कुछ बातें तो जरूर पसंद आई होंगी। बस..."

"बस क्या?"

"बस इतना सा कि आप लगभग मंजिल के करीब थे लेकिन फिर भी पूरी तरह से नहीं पहुंचे थे। ऐसा लग रहा था जैसे आपके पास सब कुछ था लेकिन बस कुछ कमी थी।"

मैंने रॉय का चेहरा देखने के लिए उसकी ओर मुड़ा। मैंने उसे इतना उदास कभी नहीं देखा था। वह हमेशा से ही एक हंसमुख इंसान था, जिसके पास हर कोई तब जाता था जब उन्हें अपने जीवन में थोड़ी मस्ती लाने के लिए कुछ हल्के-फुल्के मनोरंजन की जरूरत होती थी।

"तुम्हें कुछ अंदाजा है कि यह क्या हो सकता है?" रॉय ने कनिका से पूछा।

"खैर, मानसी को इतने लंबे समय से जानने के बाद, मुझे लगता है कि आपको कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे उसे यकीन हो जाए कि आप कोई खास इंसान हैं... मतलब, कोई ऐसा इंसान जो अपनी ज़िंदगी को लेकर गंभीर है। सिर्फ़ एक आम, लक्ष्यहीन कॉलेज स्टूडेंट नहीं। देखिए, मानसी का पिछला बॉयफ्रेंड एक इलीटियन था जो अब जर्मनी के ड्यूश बैंक में काम करता है और दस लाख की सैलरी पाता है।
उसके पास पहले कभी बॉयफ्रेंड नहीं थे। उससे पहले वाला तो राष्ट्रीय स्तर का स्क्वैश खिलाड़ी था। मैं आपको निराश नहीं करना चाहती, लेकिन उसके हमेशा से ऐसे ही बॉयफ्रेंड रहे हैं और उसके पास चुनने के लिए बहुत सारे विकल्प हैं। उसे जोशीले, गंभीर और सफल पुरुष पसंद हैं।

"हम्म। लेकिन मैं जीवन को लेकर बहुत गंभीर हूं," रॉय ने गंभीर चेहरे से कहा, लेकिन थोड़ी देर बाद ही उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई।

"मैं उसके बारे में यही सोचती हूँ। हो सकता है मैं गलत हूँ," उसने थोड़ी माफी मांगते हुए कहा। वह जानती थी कि रॉय के लिए यह मुलाकात बहुत मायने रखती है।

रॉय अपने पुराने मजाकिया अंदाज में लौट आया। उसे इस तरह देखकर अच्छा लगा। किसी दोस्त को लड़की के लिए रोते देखना बिल्कुल भी मजेदार नहीं होता। लेकिन मेरी खुशी ज्यादा देर तक नहीं टिकी।

बीस साल की उम्र अच्छी होती है। आपको बस कुछ मामूली असाइनमेंट और इक्का-दुक्का परीक्षाओं की ही चिंता करनी पड़ती है। बॉस, वेतन, करियर आदि जैसे अप्रिय विषयों से आप अभी भी काफी हद तक दूर रहते हैं।

शादी एक बिल्कुल अनजान अवधारणा थी, जो दोस्तों के बड़े भाई-बहनों के बीच ही होती थी। इसलिए जब मुझे पता चला कि मेरे दोस्त जीशान ने अचानक मेरी दोस्त अर्शी से शादी करने की योजना बनाई है, तो मैं सचमुच हैरान रह गया। कनिका ने ही उन दोनों को मिलवाया था। वे हमेशा से एक-दूसरे के लिए बिल्कुल सही लगते थे। दोनों ने ही गलत लोगों के प्यार में पड़ने के बाद, शादी करके अपना जीवन बसाने का फैसला किया।

जीशान और मैं अप्रत्याशित दोस्त थे। वह भारतीय लड़कों की दूसरी दुनिया से आते थे। मेरा मतलब है, पहली दुनिया तो इंजीनियरों की है, जिससे मैं संबंधित हूं। दूसरी दुनिया डॉक्टरों की है, जिससे जीशान संबंधित थे। लेकिन उनका जीवन अधिकांश डॉक्टरों के जीवन की तरह नहीं बीता था। उन्होंने चिकित्सा पेशे को बहुत पीछे छोड़ दिया था। इसके बजाय, उन्होंने अपना जीवन गिटार बजाने की कला को समर्पित कर दिया था। वह मुझसे छह-सात साल बड़े थे। लेकिन अपने अच्छे रूप-रंग के कारण, जब वह मेरे बगल में खड़े होते थे तो अजीब नहीं लगते थे।

दूसरी ओर, अर्शी और मैं बहुत पुराने दोस्त थे। हम पड़ोस से ही दोस्त थे और हमने साथ-साथ कई उतार-चढ़ाव देखे थे। वह मेरी ही उम्र की थी, लेकिन जब वह ज़ीशान से मिली, तो उसे पता चल गया कि वही उसके लिए बना है। उसे इतनी जल्दी शादी करने में कोई आपत्ति नहीं थी।

लेकिन बात ये नहीं है। असली बात ये है कि मेरे दोस्तों के सर्कल में से दो लोग सगाई करने वाले थे! ये सोचकर ही डर लग रहा था। मुझे पक्का यकीन था कि अगली बार जब मम्मी से शादी की बात होगी, तो वो ज़रूर उन दोनों का ज़िक्र करेंगी। शादी के बाद दोस्तों के साथ घूमने-फिरने का समय न मिलना, शराब पीने की तो बात ही छोड़ो। और फिर बच्चों के बारे में सोचना भी। ये तो नामुमकिन था!

मैं किशोरावस्था से बाहर निकलकर बच्चा होने में खुश था।

शादी वाले दिन कनिका दोपहर दो बजे ही शादी के स्थान के लिए रवाना हो गई थी। उसे अर्शी के साथ तैयार होने में मदद करनी थी। इसका मतलब था कि वह दुल्हन के साथ ही तैयार होगी। पूरी शाम मैं यही सोचती रही...

वो कैसी दिखेगी, ये मैं सोच रहा था। मैं आठ बजे कार्यक्रम स्थल पर पहुँच गया, लेकिन कनिका को अर्शी के साथ ही प्रवेश करना था। मैं इतना बेचैन था कि अपने हाथ में पकड़े गोलगप्पों पर भी ध्यान नहीं दे पा रहा था।

और फिर वो अंदर आई। वो किसी मशहूर फैशन वीक में रैंप पर चलने वाली साड़ी मॉडल जैसी लग रही थी। अगर आप उससे पहली बार मिल रहे होते, तो शायद आप उसका मेकअप आसानी से नज़रअंदाज़ कर देते। यही तो उसके पहनावे की खासियत थी। वो बेहद शालीन थी और बिल्कुल भी बनावटी नहीं थी। उसके बाल पीछे बंधे हुए थे। उसकी आँखों और पलकों पर मेकअप था। उसके गाल चमक रहे थे। वो बेहद खूबसूरत लग रही थी।

मैंने ज़ीशान को देखा, जो दूल्हे के सोफे पर बैठा था और खुश दिखने की बहुत कोशिश कर रहा था। ज़्यादातर लोगों के लिए, वह शायद इसमें कामयाब भी हो गया होता। लेकिन उसे कुछ समय से जानने के बाद, मेरे लिए यह साफ़ था कि उसे खुद भी ठीक से पता नहीं था कि वह किस माहौल में है।

"तो कैसा लग रहा है?" मैंने ज़ीशान से पूछा, क्योंकि यही एक सवाल मेरे दिमाग में हर समय घूम रहा था।

"तुम्हें क्या लगता है? जाहिर है, यह बहुत बुरा लगता है!"

"खुश हो जाओ यार। सच कहूँ तो, मुझे उम्मीद थी कि तुम आज ज़्यादा खुश होगे,"

रॉय ने कहा। "हाँ, मैं कल तक तो खुश था। लेकिन फिर..."

"तब?"

"मैंने उसे कभी आधिकारिक तौर पर प्रपोज़ नहीं किया था। मतलब, घुटनों पर बैठकर या कुछ मीठा कहकर। उसने मुझे बस मैसेज किया कि यह उसका ज़िंदगी भर का सपना है कि कोई उसके लिए ऐसा करे..."

"क्या तुम इसे अभी नहीं कर सकती?" मैंने अर्शी के उस बेवकूफी भरे सपने पर अपनी हंसी को मुश्किल से दबाते हुए पूछा।

"लेकिन वो तो शादी का प्रस्ताव चाहती है। उसने बस मुझे एक मैसेज भेजने को कहा है और मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या लिखूं। वो शादी की तैयारी पर ही ध्यान क्यों नहीं दे सकती?" उसने झुंझलाते हुए पूछा।

"तुम उसे एक क्यों नहीं भेज देते?" रॉय ने पूछा।

यार, मेरी शादी होने वाली है। मैं अभी से घबरा रहा हूँ। मैं अभी कुछ लिख नहीं सकता।

"कोई बात नहीं, रॉय तुम्हारे लिए एक लिख देगा! उसे अभी-अभी प्यार हुआ है, मुझे यकीन है कि वह लिख सकता है," मैंने मजाक में कहा और अपने ही मजाक पर हंस पड़ी।

"क्या तुम सच कह रहे हो?" जीशान ने पूछा। उसने तो इसे गंभीरता से ले लिया था। मुझे कैसे पता चलता कि रॉय ने भी इसे गंभीरता से ले लिया था?

“हाँ, मैं वापस आऊँगा,” रॉय ने कहा और उस मंच से चला गया जहाँ हम बैठे थे। मैंने देखा कि रॉय खाने के काउंटर की ओर गया और अपने मोबाइल फोन में मग्न हो गया। वह अपने फोन में तेज़ी से टाइप कर रहा था। वह पूरे एक घंटे तक लिखता रहा। मैंने उसे परीक्षा में भी कभी इतने ध्यानमग्न होकर एक घंटे तक काम करते नहीं देखा था। वह पूरी लगन से काम कर रहा था।

"क्या वह अच्छा खिलाड़ी है?" जीशान ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए पूछा।

"मुझे भी ऐसा ही लगता है। और यह खाली संदेश भेजने से बेहतर है, है ना?" मैंने कहा, और ज़ीशान ने सिर हिलाया।

थोड़ी देर बाद, उसने जीशान को संदेश भेजा और हमारे पास आया।

"क्या आपको यह पसंद है?"

अब जीशान की बारी थी मोबाइल में मग्न होकर रॉय का संदेश पढ़ने की। उसने पढ़ा और फिर मेरी तरफ देखा। उसके चेहरे के भाव से मैं समझ गया कि वह आगे क्या कहने वाला है। रॉय ने जो लिखा था, उसे वह बहुत पसंद आया था।

"वाह, ये तो कमाल है!" जीशान लगभग चीख पड़ा। "तुम्हें तो यही काम करके अपना जीवन यापन करना चाहिए!"

उसने रॉय को लगभग गले लगा लिया! हम तब तक इंतजार करते रहे जब तक ज़ीशान ने सेंड बटन नहीं दबा दिया। हम जवाब का इंतजार करते रहे। बीस मिनट बीत गए और कोई जवाब नहीं आया।

"हो सकता है, उसके पास उसका मोबाइल फोन न हो," जीशान ने घबराते हुए कहा।

और जैसे ही उसने यह कहा, उसके फोन पर बीप बजी और अर्शी का मैसेज आया। हम सबने मोबाइल फोन में झाँका।

अब मुझे पता है कि तुमसे शादी करना मेरे जीवन का सबसे अच्छा निर्णय था। (आँसू)

इस बार जीशान खुद को रोक नहीं पाया और रॉय को गले लगा लिया। उसकी आँखों में लगभग आँसू आ गए थे। अर्शी का वो मैसेज उसके लिए बहुत मायने रखता था। तभी उसका फोन बजने लगा और वो अर्शी का फोन था। हमने उसे थोड़ी प्राइवेसी देने के लिए उससे दूर चले गए।

जैसे ही हमने खाना शुरू किया, हमने कनिका को हमारी ओर आते देखा।

"Zeeshan is so sweet," Kanika said.
मैंने पूछा, "क्यों?"

"अर्शी रो रही थी और मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ। उसने मुझे जीशान का भेजा हुआ मैसेज दिखाया। उसने मुझे पूरा मैसेज नहीं पढ़ने दिया, लेकिन मेरी आंखों में भी लगभग आँसू आ गए थे। वे दोनों बहुत प्यारे कपल हैं।"

"आँसू? तुम्हारी आँखों में? अरे वाह, मैं तो बहुत अच्छा हूँ!" रॉय ने गर्व से सीना फुलाते हुए कहा।

"माफ़ कीजिए?" कनिका ने कहा और रॉय ने अपना मोबाइल फ़ोन उसके चेहरे के सामने करके उसे भेजे गए संदेशों में मौजूद मैसेज दिखाया। कनिका और मैंने साथ में मैसेज पढ़ा। मैसेज पढ़ते-पढ़ते हम चौंक गए।

तभी अर्शी बाहर आई और स्टेज की ओर चल पड़ी। शायद सबने न देखा हो, लेकिन मैंने देखा कि उसने एक पल के लिए ज़ीशान का हाथ थाम लिया, मानो उसे भरोसा दिला रही हो कि अब सब ठीक है। उनकी आँखों में प्यार झलक रहा था। रॉट के शब्दों ने जादू कर दिया था।

मैंने पीछे मुड़कर रॉय की ओर देखा।

"तुमने इसे लिखा है?" कनिका ने हैरानी से पूछा।

मैंने उससे कहा, "तुम्हारे शब्दों से लोग प्यार में पड़ सकते हैं।"

"हां, वे सचमुच ऐसा करते हैं," कनिका ने सहमति जताई।

रॉय ने हम दोनों की तरफ देखा। फिर उसने हमें एक खाली निगाहों से देखा, मानो उसके दिमाग में कोई क्रांतिकारी विचार चल रहा हो। और अगले ही पल, वह मुड़ा और सगाई की पार्टी से चला गया। कनिका और मुझे समझ नहीं आया कि अचानक उसे क्या हो गया था। हम बस उसे हॉल से भागते हुए देखते रहे।

रॉय तब तक दौड़ता रहा जब तक वह फ्लैट तक नहीं पहुँच गया। कमरे में पहुँचकर उसने अपना कोट सोफे पर और टाई कुर्सी पर फेंक दी। उसने अपना लैपटॉप निकाला। उसने माइक्रोसॉफ्ट वर्ड चालू किया और अपना पहला उपन्यास लिखना शुरू कर दिया।

बस यही था। यही उसका बड़ा सपना था। वह एक किताब लिखेगा, भले ही उसे लेखन का कोई अनुभव न हो। कुछ समय पहले तक तो उसे यह भी नहीं पता था कि वह किसी आम आदमी से बेहतर लिख सकता है। वह एक इंजीनियर था। लेकिन जब उसे किसी चीज़ का जुनून सवार हो जाता है, तो उसे कुछ न कुछ करना ही पड़ता है। उसे विश्वास था कि इससे सब कुछ वैसा ही हो जाएगा जैसा वह चाहता था। रॉय रात भर लिखता रहा। जब वह लिखने बैठा, तो उसने देखा कि रात के 10 बज रहे हैं। अगली बार जब उसने मॉनिटर से नज़र हटाई, तो सुबह के 7 बज रहे थे। वह पिछले नौ घंटों से बिना एक बार भी शौचालय जाए लिख रहा था। यही उसका असली मकसद था। अब उसे पता चल गया था कि वह किसलिए पैदा हुआ है।

रॉय के जीशान की सगाई पार्टी से चले जाने के बाद, कनिका और मैं अचानक अकेले रह गए। हमने खाना खाया, जो काफी अच्छा था, और जाने के लिए सही समय का इंतजार करने लगे।

तभी कनिका को सांस लेने में तकलीफ होने लगी।

मैंने पूछा, "क्या तुम ठीक हो?"

"मैं सांस नहीं ले पा रही...", उसने लगभग घुटते हुए कहा।

"क्या आपके पास कोई दवा है?"

"हाँ... मेरा टैबलेट... मेरे पर्स में है..."

मैंने उसका पर्स खोला और टैबलेट को हड़बड़ी में ढूंढने लगी। मैंने एक वेटर को इशारा किया कि वह जल्दी से एक गिलास पानी लाए।

"लो, इसे ले लो," मैंने पानी के गिलास के साथ गोली उसे सौंप दी।

जब उसने वह ले लिया, तो मैंने उसे जाने का इशारा किया।

"तुम मुझे कहां ले जा रहे हो?"

मैंने कहा, "आपको डॉक्टर को दिखाना चाहिए!"

"नहीं, नहीं। मैं ठीक हूँ। मुझे अर्शी के साथ रहना है।"

"क्या तुम पागल हो? तुम्हें सच में डॉक्टर की ज़रूरत है।"

कनिका ने मुझे वो नज़र दी। एक आश्वस्त करने वाली, मानो सब कुछ मेरे नियंत्रण में हो। मेरे पास उससे बहस करने का कोई विकल्प नहीं बचा था। लेकिन यह वाकई एक डरावनी घटना थी।

आखिरकार जब सब काम खत्म हो गया, तो हमारे जाने का समय आ गया था। शाम काफी थका देने वाली थी। मैं सोने के लिए बेताब थी। मुझे कनिका को अर्शी के घर छोड़ना था, जहाँ वह रात बिताने वाली थी।

"धन्यवाद, समर," कनिका ने बिना किसी स्पष्ट कारण के कहा।

"किसलिए?"

"मेरी तबीयत खराब होने पर इतना ज्यादा चिंतित होने के लिए। पानी के लिए वेटर को बुलाने पर इतना तनावग्रस्त होने के लिए।"

"तुम्हें उस हालत में देखना बहुत डरावना था।"

"मुझे पता है। लेकिन यह जानकर अच्छा लगता है कि जब मैं डरावनी दिखूंगी तो कोई मेरा ख्याल रखने वाला है।"
मैंने उसका हाथ पकड़ते हुए, उसे आश्वस्त करते हुए कहा, "ज़ाहिर है है।"

कार में कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। मेरे विचार कहीं और भटकने लगे और मुझे यकीन

था कि कनिका के भी ऐसा ही हो रहा था।

"अर्शी आज बहुत खुश लग रही थी," कनिका ने कहा। इससे मुझे पता चल गया कि उसके विचार किस ओर भटक रहे थे।

"हाँ।"

और फिर एक और सन्नाटा छा गया। लेकिन इस बार मेरे विचार कहीं और नहीं भटके। मैं यही सोच रहा था कि कनिका के विचार किस दिशा में जा रहे हैं। और मुझे बहुत बुरा लग रहा था कि वह शादी के बारे में सोच रही है। असल में, शादी के विषय पर मेरी कोई राय नहीं थी। बस यही कि इस विषय पर बात करना अभी हमारे लिए बहुत जल्दबाजी होगी, भले ही हम दोनों जानते थे कि हम हमेशा एक-दूसरे के साथ रहेंगे। लेकिन शायद मेरे चेहरे पर तनाव साफ दिख रहा था।

"क्या हुआ है, समर?"

"क्या? नहीं, कुछ नहीं?"

"ओह ठीक है।"

जब कोई महिला कहती है 'ओह ठीक है', तो इसका मतलब 'ठीक' बिल्कुल नहीं होता। इसका मतलब है कि आपको भाग जाना चाहिए।

"तो हम किस दिशा में जा रहे हैं?" कनिका ने पूछा। "मेरा मतलब है... हमारा रिश्ता। यह किस दिशा में जा रहा है?"

मुझे पूरी शाम से इसी बात का डर था, आखिरकार मुझे 'बात' करनी ही पड़ेगी। मैंने कहा, "मैंने इसके बारे में सोचा ही नहीं है।"

"रिश्ते को एक साल हो गया है और आपने अभी तक यह नहीं सोचा कि यह किस दिशा में जा रहा है?"

मैं दंग रह गया। यही वो पल होता है जिसका डर हर लड़के को तब सताने लगता है जब वो किसी लड़की से अपने प्यार का इज़हार करता है। कि एक दिन वो उस लड़की के सामने खड़ा होगा और वो उससे पूछेगी कि आखिर ये सब किस ओर जा रहा है।

उसने आगे कहा, "देखो, मैं यह नहीं कह रही हूं कि मैं चाहती हूं कि तुम मुझसे कल ही शादी कर लो। मैं यह भी नहीं कह रही हूं कि तुम्हें मुझसे वादा करना होगा कि तुम मुझसे कभी न कभी शादी करोगे, चाहे वह कभी भी हो।"

वह एक बड़े बाउंसर के लिए ज़मीन तैयार कर रही थी।

"लेकिन मैं उम्मीद रखना चाहती हूं, समर। मैं यह मानना चाहती हूं कि हम कुछ कर रहे हैं। कि यह सब किसी न किसी दिशा में जा रहा है।"

मैंने उसकी तरफ देखा। उसकी आँखों में सच्ची चिंता झलक रही थी। और वह चिंता एक ऐसी मासूमियत में बदल गई जिसे कोई भी नकली नहीं बना सकता। उस पल ने मुझे याद दिला दिया कि मैं उससे इतना गहरा प्यार क्यों करता था। हम कार में बैठे थे और अगर मैं गाड़ी न चला रहा

होता, तो मैं उसे उसी पल गले लगा लेता। वह पल वाकई इसके लायक था।

मैंने कहा, "क्या इतना काफी नहीं है कि मैं तुमसे सच्चा प्यार करता हूँ?"

मेरी आंखें उसकी तरह भोली नहीं थीं। लेकिन मैंने बड़ी शिद्दत से ये बात कही थी, उसे यकीन दिलाते हुए कि मैं जो कह रहा हूं, उससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकता। फिर भी, ऐसा लगा जैसे मेरी बात उस पर कोई असर नहीं कर पाई। मानो उसने मेरे वादे पर यकीन नहीं किया और उसके मन में कोई भावना जागृत नहीं हुई। कनिका को छोड़ने के बाद, मैं अपने फ्लैट पर आया और सो गया।

तीसरे साल की जिंदगी चलती रही। प्रोफेसरों ने हमारी जिंदगी बर्बाद करने की पूरी कोशिश की। लेकिन हमारे लिए उनका कोई अस्तित्व ही नहीं था। कभी कोई असाइनमेंट, कभी कोई प्रोजेक्ट, जिंदगी आराम से चल रही थी।

एक दिन, रॉय के साथ अपने फ्लैट में बैठे हुए, मुझे कनिका का फोन आया।

"अरे, क्या हालचाल है?" कनिका ने कहा।

"कुछ नहीं। बस रॉय के साथ अपने कमरे में बैठी हूँ।"

"ओह, वो कैसा है? और उससे पूछो कि वो पिछले कुछ दिनों से पूरी तरह गायब क्यों है?"

"हाँ, मुझे पता है उसने ऐसा किया है। अब वह बस अपने कमरे में बैठा रहता है और सारा दिन लैपटॉप पर कुछ न कुछ करता रहता है," मैंने उसकी तरफ देखते हुए कहा।

"हाँ, उसे कहो कि वह उत्साहित हो जाए। मैं तुम्हारे फ्लैट पर आ रहा हूँ।"

"ओह, तो फिर मुझे ही उत्साहित होना चाहिए, है ना?"

"नहीं, नहीं। मैं मानसी को भी साथ ला रही हूँ। तो उसे कह देना कि दाढ़ी वगैरह बना ले,"

उसने कहा। "ठीक है। मैं उसे बता दूँगा," मैंने कहा और फोन काट दिया।

रॉय ने न सिर्फ दाढ़ी बनाई, बल्कि नहाया और कई हफ्तों बाद आखिरकार अपने कपड़े भी इस्त्री किए। जब कनिका और मानसी अंदर आईं, तब तक रॉय सुबह से ही अपना पूरा रूप बदल चुका था।

रॉय और मानसी की बातचीत रुक-रुक कर चल रही थी। लेकिन जैसा कि कनिका को उम्मीद थी, उनके बीच कोई खास आकर्षण नहीं था। वह सही थी। रॉय लगभग मानसी के दिल के करीब था, लेकिन वह मानसी के लिए उतना खास नहीं था।

"हे दोस्तों," कनिका ने फ्लैट में प्रवेश करते हुए कहा।

उसके बाद मानसी अंदर आई, मानो मानो दुनिया की सारी अच्छाई बिखेर रही हो। उसके चेहरे पर मासूम सी मुस्कान थी। मैंने उससे हाथ मिलाया और मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने पहले कभी इतना गर्मजोशी से हाथ नहीं मिलाया हो। लेकिन फिर मुझे रॉय की कही बात याद आ गई,

जो उसने मानसी के साथ डेट के बाद कही थी - वह हमेशा अच्छी रहती है। उसके देखने के तरीके से कुछ भी पता नहीं चलता। वह इस दुनिया के लिए बहुत ही अच्छी है। और आप उसके चेहरे को देखकर कुछ भी नहीं समझ सकते।

वे अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए। रॉय भी बैठ गया। मुझे उम्मीद थी कि रॉय थोड़ा घबराया हुआ। उसकी पहली मुलाकात के बारे में मैंने जो सुना था, उससे लगता था कि वह तब भी काफी घबराया हुआ था। लेकिन उस दिन, किसी तरह, वह एक ऐसे आत्मविश्वास से भरा हुआ था जो उसके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था। और मैं देख सकती थी कि यह बिल्कुल भी बनावटी नहीं था। यह सच्चा था। वह इसे जी रहा था।

"तो रॉय, तुम कहाँ थे?" कनिका ने उससे सीधे ही पूछ लिया।

"हाँ, मैं किसी चीज़ पर काम कर रही हूँ। उसमें मेरा काफी समय बीत रहा है।"

"तुम किस पर काम कर रही हो? कॉलेज के प्रोजेक्ट्स पर?" कनिका ने पूछा।

"नाफी। मैं इसे अपने तक ही रखना चाहता हूँ। मुझे इस छोटे से रहस्य को गुप्त रखने की अनुमति दें।"

"चलो रॉय, हमें बताओ!" कनिका ने कहा। रॉय को मनाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी, लेकिन आखिरकार कनिका ने उससे सच उगलवा ही लिया।

उन्होंने घोषणा की, "मैं अपने पहले उपन्यास पर काम कर रहा हूं।"

"हे भगवान!" "क्या तुम सच कह रहे हो?" "ये क्या बकवास है?" ये प्रतिक्रियाएँ क्रमशः कनिका, मानसी और मेरी थीं।

"हां, मैं हमेशा से एक कविता लिखना चाहती थी। और जीशान की सगाई में, जब मैंने अर्शी की प्रतिक्रिया देखी जब उसने मेरी लिखी हुई कविता पढ़ी, तो मुझे एहसास हुआ कि अब समय आ गया है। अब या कभी नहीं। तो हां, मैंने लिखना शुरू कर दिया है।"

जब उसने हमें बताया, तब सब कुछ समझ में आ गया - उसका पार्टी से भाग जाना और सारा दिन लैपटॉप पर व्यस्त रहना। अब हमें पता चल गया!

मैंने कहा, "तुम्हारा दिमाग पूरी तरह खराब हो गया है," लेकिन सबने मेरी

बात अनसुनी कर दी। मानसी ने पूछा, "तो उपन्यास किस बारे में है?"

"खैर, यह रोमांस के बारे में है। मूल रूप से, एक प्रेम कहानी है," रॉय ने कहा, और अचानक वह सबसे समझदार व्यक्ति की तरह लगने लगा।

मानसी के मुंह से 'वाह' निकल गया। लेकिन पहली बार कमरे में कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया, सब रॉय की कही बात को समझ रहे थे।

कनिका ने चुप्पी तोड़ते हुए सबसे पहले पूछा, "यह किसकी कहानी है? मेरा मतलब है, क्या यह काल्पनिक है?"

"यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो मुझसे काफी मिलता-जुलता है।"

अब हम इस तथ्य को स्वीकार करने लगे थे। रॉय ने यह बात सफलतापूर्वक साबित कर दी थी कि वह एक किताब लिख रहा है।

"ठीक है। लेकिन रॉय, तुम्हें रोमांस के बारे में क्या पता? मतलब, तुम्हारे जैसे दिखने वाले लड़के की प्रेमिका कौन है?" कनिका ने उससे पूछा। रॉय का पूरा ध्यान कनिका की ओर था।

कनिका ने मानसी के साथ एक हल्की सी नजर का आदान-प्रदान किया, जिससे मानसी थोड़ी असहज हो गई।

कमरे में बस एक ही सवाल का जवाब मिलने की उत्सुकता थी - क्या रॉय मानसी के बारे में कोई किताब लिखेंगे या नहीं। रॉय इस सवाल का जवाब देने में असहज लग रहे थे। और उन्होंने जवाब देने से पहले काफी देर तक सोचा।

"दरअसल, इस फिल्म की महिला मुख्य किरदार तुमसे प्रेरित है, कनिका," रॉय ने

कहा। "क्या!" "कनिका!" "क्या!"

"हां," रॉय ने आगे कहा। "दरअसल, तुम ही वो अकेली लड़की हो जिसे मैं लंबे समय से जानता हूं। इसलिए तुम्हारे ऊपर आधारित एक किरदार बनाना स्वाभाविक लगा।"

"हे भगवान!" कनिका ने कहा और सोफे से उठ खड़ी हुई। कुछ कदम आगे बढ़कर उसने रॉय को गले लगा लिया। वो इसके लायक था। पूरी किताब उसी को समर्पित होना वाकई बहुत बड़ी बात थी।

"तो कैसा लग रहा है?" लंबे मौन के बाद आखिरकार मानसी बोली।

"सच कहूं तो, दुनिया में इससे बेहतर कोई एहसास नहीं है। यह एक तरह की ध्यानमग्न अवस्था है। मुझे यह एहसास बहुत पसंद है," रॉय ने कहा।

"बहुत बढ़िया। मुझे यकीन है कि यह बहुत अच्छा लगता होगा," मानसी ने कहा।

"हाँ। और मैं अपने आप में बदलाव देख सकती हूँ। मतलब, अब जबकि मैं पहले से कहीं ज़्यादा व्यस्त हूँ, मुझे लगता है कि मैं ज़्यादा आत्मविश्वासी हो गई हूँ। मेरा आत्मसम्मान बढ़ गया है। मैं खुद को बेहतर महसूस करती हूँ।"

हम सबने एकमत होकर सिर हिलाया।

उसी समय, रॉय और मैंने चुपके से मानसी की ओर देखा, यह देखने के लिए कि रॉय द्वारा कनिका पर आधारित एक किताब लिखने की खबर पर उसकी क्या प्रतिक्रिया रही।

और फिर, हम दोनों ने इसे देख लिया। यह नज़रअंदाज़ हो ही नहीं सकता था। मानसी ने आखिरकार उसे सच्ची प्रशंसा भरी नज़र से देखा, जिसका वह इंतज़ार कर रहा था। किताब लिखने की वजह से वह कहीं ज़्यादा समझदार व्यक्ति के रूप में सामने आया था।

रॉय ने मन ही मन खुद को शाबाशी दी होगी। अब मुकाबला शुरू हो चुका था।

मैंने कनिका की तरफ देखा। वह अब भी अपने ऊपर किताब लिखे जाने की संभावना पर खिलखिला रही थी। लेकिन उसे वह बात नहीं पता थी जो मुझे पता थी। कि रॉय उसे हमेशा से पसंद करता था। और यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि वह किरदार उसी पर आधारित होगा।

लेकिन मुझे चिंता करने की कोई बात नहीं थी। रॉय एक समझदार आदमी था। और मानसी के आने के बाद तो वह निश्चित रूप से आगे बढ़ चुका था।

तो यही मानसी और उसके रिश्ते का निर्णायक मोड़ था। किताब ने उसके लिए वह जादू कर दिया था जिससे वह मानसी का दिल जीतने में कामयाब हो गया और उसे पसंद आने लगा। देखते ही देखते वे हर दिन घंटों किताब पर चर्चा करने लगे। मानसी उसके लिखे हर अध्याय को पढ़ती थी। उसकी यह आशंका भी जल्द ही दूर हो गई कि मानसी को शायद यह बात पसंद न आए कि कहानी की नायिका कनिका है।

और धीरे-धीरे, यह सबको साफ दिखने लगा कि उनके बीच प्यार पनप रहा है। बेहद सलीके से रहने वाली लड़की अपने पड़ोस के लड़के पर फिदा हो गई थी। आम तौर पर, रॉय हर लड़की से सहज ही प्यार कर बैठता था। लेकिन इस बार, ऐसा लग रहा था मानो वह सचमुच उससे प्यार करने लगा हो। वे दोनों साथ में अच्छे लग रहे थे। खुश और संतुष्ट।

लेकिन फिर भी, एक और सीमा पार करनी बाकी थी। रॉय को उसे बताना था कि वह उसके लिए कैसा महसूस करता है।

एक शाम जब हम इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि वह मानसी के प्रति अपने प्यार का इज़हार कैसे करेगा, तो मैंने उसे सलाह दी, "यह कुछ भव्य होना चाहिए।"

"क्या तुम पागल हो? मैं तो बस यूं ही casually उसे बता देना चाहता था कि मैं उससे प्यार करता हूं, बिना इसे कोई बड़ा मुद्दा बनाए।"

"देखो रॉय, तुम्हें उसे अपने दिल की बात बताने का सिर्फ एक ही मौका मिलेगा। तुम इसे बर्बाद नहीं कर सकते।"

"मैं इसे बिगाड़ने वाला नहीं हूँ। मुझे पता है मैं क्या कर रहा हूँ," रॉय ने बेझिझक कहा।

"चलो भी। तुम्हें इसे इस तरह से स्वीकार करना होगा कि उसके पास 'हाँ' कहने के अलावा कोई और विकल्प ही न बचे। ठीक उसी तरह जैसे मैंने किया था।"

आपने इसे कैसे कहा?

“खैर, मैंने अपने कबूलनामे के लिए घंटों तैयारी की थी,” मैंने उस मनहूस दिन की यादों में खोते हुए कहा। “मैंने सोचा कि अगर मैं हमारे साथ बिताए सभी खूबसूरत पलों की यादें ताजा कर सकूँ, तो वह भावनात्मक रूप से अभिभूत हो जाएगी। इसलिए मैंने उसे भेजे गए सभी एसएमएस इकट्ठा किए। उन्हें कुछ पर्चियों पर लिखकर अपने कमरे की दीवार पर चिपका

दिया।”

"हे भगवान! मैंने आज तक इससे ज़्यादा समलैंगिक बात कभी नहीं सुनी," रॉय ने कहा।

"यह बहुत शानदार था। हालांकि यह वैसा नहीं हुआ जैसा मैंने उम्मीद की थी।"
"लेकिन मैं इसे इतना बड़ा मुद्दा नहीं बनाना चाहता। मैं बस उसे बताना चाहता हूं और बात खत्म करना चाहता हूं।"

"लेकिन रॉय! तुम्हें यह करने का सिर्फ एक ही मौका मिलेगा! इसे खराब मत करना!" मैंने जोर देकर कहा।

रॉय ने मेरी तरफ देखा, लेकिन फिर अपनी जेब से मोबाइल निकालकर मानसी का नंबर डायल किया। उसके बाद मुझे पता चला कि वो मानसी से फोन पर बात कर रहा है।

"हाय मानसी। कैसी हो?" रॉय ने कहा और फोन को स्पीकर पर डाल दिया।

"मैं ठीक हूँ। क्या आप किसी खास वजह से फोन कर रहे हैं? मेरा मतलब है - मैं फिलहाल किसी काम में व्यस्त हूँ..." मानसी ने कहा।

"बस एक मिनट लगेगा। मुझे आपको कुछ बताना था।"

"ज़रूर। क्या आपने तेरहवाँ अध्याय पूरा कर लिया है?" उसने पूछा।

"नहीं। यह किताब के बारे में नहीं है।"

"तब?"

"मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मानसी," रॉय ने बस यूँ ही कह दिया, जैसे कह रहा हो कि मैंने अभी-अभी चाय पी है। एकदम सपाट स्वर में, बिना किसी पृष्ठभूमि, बिना किसी भूमिका, बिना किसी संदर्भ के। मानो उसके मन में इस बात का ज़रा भी संदेह न हो कि मानसी भी उससे प्यार करती है।

लेकिन मानसी यह सुनकर चुप रही, जबकि रॉय और मैं बेसब्री से इंतज़ार करते रहे। फिर, वह हंस पड़ी। बिना कुछ कहे लगातार हंसते रहने से हमारी धड़कनें तेज़ हो गईं। हम अधीर होने लगे थे।

"कुछ बोलो," रॉय ने हंसते हुए कहा।

"रॉय, तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो?"

"मुझे बताओ कि तुम भी मुझसे प्यार करते हो।"

"रॉय?" मानसी का लहजा बदल गया। अचानक उसकी हंसी गायब हो गई। उसकी आवाज़ में वो सारी भावनाएं थीं जिनकी रॉय को कमी खल रही थी।

हां।

"मैं भी आपसे प्यार करता हूँ।"

लो। उसने भी यही कहा। वे दोनों अब आधिकारिक तौर पर एक-दूसरे से बेहद प्यार करते थे। रॉय ने राहत की सांस ली और आगे बढ़कर मुझे गले लगा लिया, हालांकि उस समय वह मुझे गले नहीं लगाना चाहता था।

"तो?" मैंने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"इसलिए?"

"जाकर उससे मिलो, बेवकूफ!"

रॉय मानसी से मिलने के लिए तुरंत घर से निकल गया। मुझे उन दोनों के लिए खुशी हुई। वे एक अजीब जोड़ी थे, लेकिन वे एक साथ इतने खुश दिखते थे कि अक्सर इसका एहसास ही नहीं होता था।

मैंने कनिका को फोन करके यह खुशखबरी दी। और वह बेहद खुश हो गई।

"बहुत बढ़िया। तो रॉय अब कहाँ है?"

"वह उससे मिलने गया है। वे जश्न मना रहे होंगे। शायद डिनर या कुछ और।"

"हम्म," कनिका ने कहा। जब कनिका 'हम्म' कहती थी, तो आमतौर पर इसका मतलब मेरे लिए कोई बुरी खबर होती थी। मुझे पहले से ही अच्छी तरह पता था कि कौन सी बुरी खबर मुझे मिलने वाली है।

"कितने दिनों से हम बाहर डिनर पर नहीं गए हैं," कनिका ने धीरे से कहा। "हाँ। क्या हम

आज जा सकते हैं?" मैंने कहा। मुझे पता था कि मुझे तुरंत स्थिति को संभालना होगा और

मैंने ऐसा किया।

"तुम्हारा सौभाग्य है कि तुमने ऐसा कहा, वरना तो तुम्हारी खैर नहीं थी," उसने डरावना लहजा अपनाते हुए कहा। मुझे तो यह बेहद प्यारा लगा।

मैंने कहा, "मैं भाग्यशाली नहीं हूं। मैं बस प्रतिभाशाली हूं।"

कनिका और मैं काफी समय से बाहर नहीं निकले थे। इसलिए डिनर एक अच्छा बदलाव होने वाला था। जीशान की सगाई के बाद पहली बार कनिका को सजते-संवरते देखना मुझे बहुत अच्छा लग रहा था।

सच कहूँ तो, मुझे इसकी बहुत ज़रूरत थी। कभी-कभी अपनी प्रेमिका के साथ बाहर जाना चाहिए। उसके लिए सजना-संवरना चाहिए। उसे फूल देने चाहिए। उसके लिए दरवाज़ा खोलना चाहिए। उसके लिए कुर्सी खींचनी चाहिए। उसकी मनमोहक खुशबू सूंघनी चाहिए। उसे खास महसूस कराना चाहिए। माहौल में गर्माहट का एहसास करना चाहिए।

मुझे उसमें यही बात सबसे ज़्यादा पसंद थी। वह मुझे छोटी-छोटी खुशियों की चाहत जगाती

थी। वह मुझे उसे आकर्षक महसूस कराने की इच्छा पैदा करती थी। और यही बात मुझे अपने बारे में अच्छा महसूस कराती थी।

रात का खाना बहुत अच्छा और सुखद रहा। हम वापस मेरे फ्लैट पर आ गए। कनिका मुझे मेरे कमरे तक छोड़ने आई। और हमने पूरी रात एक-दूसरे की गर्माहट में डूबे हुए बिताई। बेहद संतुष्ट।

दो महीने और बीत गए।

रॉय और मानसी एक स्थिर जोड़े बन गए। एक-दूसरे से इतने अलग होने के बावजूद, उन्होंने अपनी-अपनी खुशियाँ विकसित कर लीं, वो चीजें जो वे दोनों साथ मिलकर कर सकते थे। महज दो महीनों में रॉय एक व्यक्ति के रूप में बहुत बदल गया था। एक तरफ, वह वास्तव में एक किताब लिख रहा था, जिससे महिलाओं के बीच उसकी लोकप्रियता आसमान छू रही थी। दूसरी तरफ, उसकी एक बेहद खूबसूरत प्रेमिका थी जो उसे हमेशा व्यस्त रखती थी।

हमारा फ्लैट, जो पहले सिर्फ लड़कों का अड्डा हुआ करता था, अब जोड़ों का अड्डा बन गया था। एक दोस्त जोड़े का होना अच्छा लगता था। अब जब कनिका और मैं कोई कार्यक्रम आयोजित नहीं कर रहे थे, तो आसपास एक जोड़े का होना अच्छा था। इससे हमें बातचीत के लिए और भी विषय मिल जाते थे। और इससे समय भी जल्दी बीत जाता था।

एक सुबह अचानक मुझे याद आया कि रॉय को पिछली रात एक असाइनमेंट पूरा करना था। इसलिए मैं उसके कमरे में चला गया।

"रॉय, क्या तुमने असाइनमेंट पूरा कर लिया?" मैंने पूछा। लेकिन जब मैंने उसका चेहरा देखा, तो उसके चेहरे पर मैंने अब तक का सबसे उदास भाव देखा। मैं कारण जानता था - मानसी सात दिनों के लिए जा रही थी। मैं उसे चिढ़ाने की सोच रहा था कि मैं कितना बचकाना व्यवहार कर रहा हूँ, लेकिन वह ऐसा लग रहा था जैसे उस पर सुनामी आ गई हो।

तो मैंने वही किया जो ऐसी स्थिति में एक अच्छा दोस्त करता है। मैंने उसका और भी मज़ाक उड़ाने का फैसला किया।

"ओह, मिस रॉय, ऐसा लग रहा है जैसे मैं आपके मासिक धर्म के दौरान आ गई हूँ," मैंने हंसते हुए कहा। लेकिन रॉय को मेरा यह मज़ाक बिल्कुल पसंद नहीं आया।

"समर, तुम क्या चाहती हो?"

"मानसी कहाँ जा रही है कि तुम्हें इतनी तकलीफ हो रही है?"

"दरअसल, बेंगलुरु में श्री गुरु का एक शिविर चल रहा है। उनका परिवार उन पर दृढ़ विश्वास रखता है। इसलिए उन्हें इस शिविर में भाग लेना ही होगा," उन्होंने कहा।

"आपका मतलब है कि उसके पिता उसे जबरदस्ती इसमें शामिल करवा रहे हैं?"

"नहीं, नहीं। वह खुद एक आस्थावान हैं। वह इसमें शामिल होना चाहती हैं। और एक सप्ताह तक मोबाइल फोन की अनुमति नहीं है।"

"अच्छा ठीक है," मैंने उससे बातचीत खत्म करते हुए कहा। "क्या तुमने वो असाइनमेंट पूरा कर

लिया?"

उसने ऐसा नहीं किया। रॉय ने उस सप्ताह को लेखन में पूरी तरह डूबने में बिताया। दिन भर वह बस लिखता ही रहा। उसे विचलित करने के लिए कोई फ़ोन कॉल या कामुक विचार नहीं थे। मुझे अच्छा लग रहा था कि यह लड़की उसके साथ क्या कर रही थी।

कनिका और मैंने उसे देखा, जो दिन भर अपने कमरे में बंद रहता था, सिर्फ कॉफी और खाना खाने के लिए बाहर आता था। हमें उसके लिए खुशी हुई।

मानसी का फोन आखिरकार एक हफ्ते बाद चालू हो गया। रॉय सुबह से लगातार उसे फोन कर रहा था। और जब आखिरकार उसका फोन लगा, तो उसने राहत की सांस ली।

लेकिन मानसी ने उसका फोन काट दिया। यह रॉय के दिल में छुरा घोंपने जैसा था।

क्या? रॉय ने टाइप करके उसे भेजा।

रॉय, मुझे तुमसे बात करनी है। लेकिन अभी नहीं। रात में फोन करूंगा।

रॉय ने उसका जवाब पढ़ा। और उसे पढ़ते ही रोंगटे खड़े हो गए। मानसी को बात करनी थी। हालात कुछ ठीक नहीं लग रहे थे। रॉय ने किसी तरह पूरा हफ्ता निकाल लिया था। लेकिन आज का दिन उसके लिए बहुत मुश्किल होने वाला था। मुझे मानसी पर थोड़ा गुस्सा आया। अगर वह थोड़ा लंबा मैसेज लिखकर सारी बात बता देती, तो उसे कोई नुकसान नहीं होता। उसे जरूर पता होगा कि रॉय मैसेज पढ़कर परेशान होगा। और वह इतनी बेवकूफ तो नहीं थी कि इतनी साफ बात को नज़रअंदाज़ कर दे।

मानसी ने आखिरकार रात ग्यारह बजे फोन किया। जैसे ही उसके फोन पर उसका नाम दिखा, रॉय उठकर अपने कमरे की ओर चल पड़ा। मैं अपने कमरे में जाकर कोई सिटकॉम देखने लगी। दो एपिसोड खत्म होने के बाद, मेरे ख्याल फिर से रॉय की तरफ गए। मैंने उसका दरवाजा चेक किया। वह अभी भी बंद था। मैंने सोचा कि वह अभी भी फोन पर बात कर रहा होगा।

दो एपिसोड बाद, मैं उसके कमरे में देखने वापस गया। उसका दरवाजा बंद था लेकिन ताला नहीं लगा था। मैंने कोई आवाज़ सुनने की कोशिश की। कोई आवाज़ नहीं थी। मैंने मान लिया कि उसने फोन काट दिया है। इसलिए मैंने अंदर जाने का फैसला किया।

मैं अंदर गई और जो दृश्य मैंने देखा, उससे मैं दंग रह गई। रॉय अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था, उसकी आँखें बंद थीं। और उसके गालों पर आँसू थे। मैंने अपने किसी भी पुरुष मित्र को कभी रोते हुए नहीं देखा था।

यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि मानसी ने उससे रिश्ता तोड़ लिया था। मुझे कारण जानने की उत्सुकता थी, लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि कारण जानने से मेरा गुस्सा मानसी पर कम हो जाएगा।

मुझे देखकर रॉय के चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला। उसकी आंखों में बहते आंसू बहुत कुछ बयां कर रहे

थे।

हालांकि उसके चेहरे के बाकी भाव काफी भावहीन थे।

मेरे मुंह से एक सवाल निकल गया, 'क्यों?'

उन्होंने कहा, "बैंगलोर में उनके गुरुजी ने उन्हें इस रिश्ते में न पड़ने की सलाह दी है। इससे उनके परिवार और मुझे नुकसान हो सकता है। और वह कभी भी अपने गुरुजी की इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं करती।"

"मानसी को देखकर ऐसा नहीं लगता कि वह किसी गुरुजी का अनुसरण करेगी।"

"लेकिन मुझे पता है कि वह गुरुजी की कही हर बात मानती है। वह उस जीवंत आत्मा के मुखिया हैं। वह काफी प्रसिद्ध हैं।"

"ठीक है। तो क्या यह सब खत्म हो गया?" मैंने पूछा।

"हाँ। ऐसा ही लगता है। मेरा मतलब है, मानसी उस तरह की लड़की नहीं है जो बार-बार ब्रेकअप करके फिर से पैचअप कर ले। वह काफी दृढ़ निश्चयी है।"

मैंने रॉय की तरफ देखा। ऐसा लग रहा था मानो वह पिछले दो महीनों में मिली इतनी खुशी का बदला चुका रहा हो। ऐसे में एक आदमी दूसरे आदमी से ज्यादा कुछ कह नहीं सकता। सिवाय शायद एक बात के जो कही जा सकती है।

मैंने पूछा, "बीयर?"

"नहीं, समर। मेरा मूड नहीं है। मुझे कुछ समय अकेले रहने की जरूरत है।"

"ठीक है," मैंने कहा और कमरे से बाहर निकल गई। फिर मैंने कनिका को फोन करके सारी बात बताई।

"क्या वह सचमुच रो रहा था?" कनिका ने थोड़ा आश्चर्यचकित और थोड़ा

दुखी होकर पूछा। "हाँ। सचमुच रो रहा था।"

"हम्म। आज उसे अकेला छोड़ देते हैं। कल उससे बात करेंगे।"

मैंने पूछा, "क्या तुम मानसी से बात करने जा रहे हो?"

"नाफी। मुझे नहीं लगता कि वह भी मूड में होगी।"

"ठीक है," मैंने कहा और फोन काट दिया।

अगली सुबह का माहौल गमगीन था। रॉय चुप था, मैं भी चुप थी। बातचीत करना नामुमकिन था क्योंकि अगर हम बात करते तो ब्रेकअप के अलावा किसी और विषय पर बात करना असंभव

होता। और ब्रेकअप एक ऐसा विषय था जिस पर बात करना वर्जित था।

हम सुबह से एक शब्द भी बोले बिना कॉलेज पहुँच गए। हम चुपचाप लेक्चर सुनते रहे। हमारी चुप्पी टूटने का सिर्फ एक ही रास्ता था - कनिका।

लंच ब्रेक के दौरान, हमारी मुलाकात कैंटीन में कनिका से हुई। वह हमारी मेज के पास आई और मेरी तरफ देखा। उस नज़र का मतलब सिर्फ एक ही था। वह रॉय से अकेले में बात करना चाहती थी। ऐसा पहली बार हो रहा था। लेकिन फिर, यह ज़रूरी भी था। इसलिए मैं उनसे दूर अकेले टहलने चला गया।

कनिका और रॉय की बातों से मुझे एहसास हुआ कि उनके बिना मेरी कॉलेज की जिंदगी कितनी खाली-खाली सी थी। उनके साथ मजबूत रिश्ते बनाने के चक्कर में, मैं कॉलेज के बाकी लोगों से भी दूर हो गई थी। मुझे कोई शिकायत नहीं थी। वे कॉलेज के जीवन के लिए आदर्श साथी थे। सच कहूँ तो, मैं बस खुशकिस्मत थी।

कुछ देर बाद मैं वापस कैंटीन में गया। कनिका और रॉय वहां नहीं थे।

तुम कहाँ हो? मैंने कनिका को मैसेज किया है।

उसने काफी देर तक कोई जवाब नहीं दिया। इसलिए मैंने अपने फ्लैट तक पैदल वापस जाने का फैसला किया। क्लास के बाद अकेले वापस पैदल जाना थोड़ा अजीब लग रहा था। मुझे याद नहीं आ रहा था कि आखिरी बार रॉय कब मेरे साथ इस रास्ते पर नहीं था।

जब मैं अपने फ्लैट पर पहुंची, तो मुझे एहसास हुआ कि कनिका और रॉय रॉय के कमरे में थे। मैंने छोटे से दरवाजे से अंदर झाँका। रॉय कुछ परेशान लग रहा था। वह फिर से रोने की कगार पर था। आखिरकार, वह किसी के सामने अपने दिल की बात कह रहा था। मुझे इस बात पर ज़रा भी हैरानी नहीं हुई कि वह कोई और नहीं बल्कि कनिका थी। वह उससे बात करवा रही थी और इस प्रक्रिया में उसके सारे नकारात्मक भावों को दूर कर रही थी।

मैंने सत्र में दखल न देने का फैसला किया। और मैंने अपने कमरे में उसी तरह चुपचाप वापस जाने का फैसला किया जैसे मैं अंदर आया था।

मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई लड़की रॉय के साथ ऐसा कर सकती है। सच कहूँ तो, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई लड़की किसी लड़के के साथ ऐसा कुछ कर सकती है। शुक्र है कनिका वहाँ थी, जिसने रॉय का ख्याल रखा। वह समझदार लड़की थी; ऐसी स्थिति से निकलने के लिए बिल्कुल सही इंसान। और रॉय के पास कनिका को देखकर, मुझे कहीं न कहीं इस बात का सुकून मिला कि वह मेरी प्रेमिका है। मैंने सही चुनाव किया था। या यूँ कहूँ कि मैं बस भाग्यशाली था।

मुझे उम्मीद थी कि रॉय समय के साथ सुधर जाएगा। मतलब, मुझे उम्मीद थी कि वह कम से कम एक हफ्ते में मुस्कुराना शुरू कर देगा। और एक महीने में मानसी को पूरी तरह भूल जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

एक महीना बीत चुका था और मैंने उसे मुस्कुराते हुए नहीं देखा था। वह बहुत दुखी था, मेरी कल्पना से भी कहीं ज़्यादा। हमारे पाँचवें सेमेस्टर की अंतिम परीक्षाएँ चल रही थीं। और हालाँकि रॉय कभी भी परीक्षाओं में अच्छा नहीं रहा था, फिर भी उसकी एकाग्रता साफ़ तौर पर डगमगा

रही थी। परीक्षाओं और मेरे बीच एक अजीब बात है - मैं किसी तरह ज़्यादातर परीक्षाओं को किसी तरह पास कर लेता हूँ। लेकिन जब आखिरी परीक्षा आती है, तो मैं मस्ती करने की अपनी इच्छा के आगे झुक जाता हूँ।

तो अंतिम परीक्षा से एक शाम पहले, अपनी तैयारियों को अंतिम रूप देने के बजाय, मेरा मन हुआ कि मैं अपने फ्लैट से बाहर निकल जाऊं, टहलने जाऊं या किसी दोस्त से मिलने जाऊं या कुछ और करूं। और जब भी मुझे ऐसा मन करता है, तो मेरे दिमाग में सिर्फ एक ही नाम आता है - जीशान।

जब से उसकी सगाई हुई थी, तब से मैंने उसे ज्यादा नहीं देखा था। उसकी जिंदगी की प्राथमिकताएं बदल गई थीं। और अर्शी को जानते हुए, मुझे पता था कि वह उसका मंगेतर बने रहने के लिए बहुत मेहनत कर रहा होगा।

जीशान और मेरी मुलाकात इसलिए हुई क्योंकि मैं हमेशा से गिटार बजाना चाहता था और जब मैंने उसे पहली बार देखा, तो उसके हाथ में गिटार था। बात आगे बढ़ी और आधे घंटे बाद मैं उसके लिविंग रूम में गिटार लिए बैठा था। उस समय उसका घर बिल्कुल टूटा-फूटा था। लेकिन फिर, जब हम दोस्त बने, तो कनिका और मैंने घर को रहने लायक बनाने में उसकी मदद की। लेकिन जब से अर्शी उसके जीवन में आई, तब से घर में सचमुच रौनक आ गई थी।

तो उस दिन, मैंने फिर से अपना गिटार उठाया और ज़ीशान के घर की ओर चल पड़ा। जब

मैं अंदर पहुँचा, तो ज़ीशान फ़ोन पर किसी से बात कर रहा था। वह चिल्ला रहा था, "नहीं,

मैं तुम्हारे बाजा से मिलने नहीं आ सकता।"

"नहीं, मुझे कोई ज़रूरी काम नहीं है, बस मैं आपके दो हज़ार रिश्तेदारों से मिलते-मिलते थक गया हूँ," ज़ीशान ने गुस्से में कहा और कॉल काट दिया।
फोन रखते ही उसने मुझे कमरे में खड़ा देखा। "यार, चाहे कुछ भी हो जाए, शादी मत करना।"

लेकिन अर्शी एक अच्छी लड़की है। मतलब, खुद को देखो। जब तुम उससे मिले थे, तब तुम उपेक्षित और लाचार थे। और आज, तुम्हारे घर में जो भी आता है, तुम उसका सम्मान करते हो।

"लेकिन अगर मुझे वह सम्मान नहीं चाहिए तो क्या होगा? अगर मैं वैसे ही जीना चाहूँ जैसे पहले जीता था तो क्या होगा? अगर मुझे अव्यवस्था में रहना पसंद हो, क्योंकि इसका मतलब यह है कि मुझे हर दिन एक घंटा इस जगह को साफ रखने में नहीं बिताना पड़ता?"

जीशान की बात में दम था। जब मैं उससे पहली बार मिला था, तब साफ-सफाई के प्रति उसकी अरुचि स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।

"शांत हो जाओ, जीशान। अर्शी एक अच्छी लड़की है," मैंने कहा।

मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि वह है। लेकिन मुझे अब थोड़ा आराम चाहिए। मुझे उससे दूर जाना होगा या कुछ और करना होगा।

"आपका क्या मतलब है?"

उन्होंने कहा, "मैं कल शाम को ट्रेन से गोवा जा रहा हूं। वहां कुछ दिन बिताने से मेरा दिमाग शांत हो जाएगा।"

"अरे नहीं, आप ऐसा कुछ नहीं कर रहे हैं।"

मैंने तो टिकट बुक कर ही लिया है। वैसे, आपको भी साथ आना चाहिए।

जीशान को कभी सिगरेट और गांजा पीने की बुरी लत थी। लेकिन कुछ महीनों में उसने धीरे-धीरे इन सब चीजों से छुटकारा पा लिया था। लेकिन उस दिन जिस तरह से वह गोवा के बारे में बात कर रहा था, उससे साफ था कि वह कम से कम कुछ समय के लिए, जब तक वह गोवा में रहेगा, इन सब चीजों की तरफ वापस लौट रहा है।

"नहीं, धन्यवाद। मैं कल अपनी अंतिम परीक्षा के बाद एक प्रोजेक्ट पर काम कर रही हूँ।"

"प्रोजेक्ट और परीक्षाएं आती-जाती रहेंगी, भाई। लेकिन गोवा कभी वापस नहीं आएगा। सब कुछ भूल जाओ और मेरे साथ चलो।"

"मैं तीसरे वर्ष का छात्र हूँ, ज़ीशान। अगले साल, सभी कंपनियाँ मुझे नौकरी देने के लिए उमड़ पड़ेंगी। मुझे इस छुट्टी में यह प्रोजेक्ट चाहिए।"

मैंने उसे और खुद को यह समझाने के लिए हज़ार तर्क दिए कि मैं इस यात्रा का खर्च नहीं उठा सकता। और फिर हम वही करने लगे जो हमें साथ में सबसे ज़्यादा पसंद था। हमने थोड़ी देर गिटार बजाया।

मैं वापस अपने फ्लैट में गई और अपनी किताबें खोलीं। मुझे रॉय के कमरे से कुछ आवाज़ सुनाई दी, तो मैंने सोचा कि देखूँ क्या हो रहा है। रॉय फोन पर बात कर रहा था, शायद कनिका से। अब वे दोनों बहुत करीब आ गए थे। शायद कनिका मुझसे ज़्यादा समय रॉय से फोन पर बात कर रही थी। ब्रेकअप, रॉय की किताब, कॉलेज, ज़िंदगी... उनके पास बात करने के लिए बहुत कुछ था।

मैंने एक बार फिर उसे परेशान न करने का फैसला किया और सोने चला गया।

जब हम स्कूल में थे, तो जो लड़का परीक्षा हॉल से सबसे पहले निकलता था, उसे सब कुछ जानने वाला मान लिया जाता था। कॉलेज में, जो लड़का सबसे पहले निकलता था, उसे कुछ भी न जानने वाला मान लिया जाता था। रॉय अंतिम परीक्षा में वही लड़का था। मुझे उससे इस परीक्षा के बारे में ज्यादा चिंता करने की उम्मीद नहीं थी। वह बस जल्दी से यह घोषणा करना चाहता था कि उसकी परीक्षाएँ अब खत्म हो गई हैं।

लेकिन मैं एक जुझारू इंसान थी। परीक्षा में मुझे चाहे कितना भी कम ज्ञान हो, मैं आखिरी क्षण तक कोशिश किए बिना नहीं रह सकती थी। वह दिन भी अलग नहीं था।

जब तक मेरी परीक्षा खत्म हुई, मैं बुरी तरह थक चुकी थी। आम तौर पर, परीक्षा खत्म होने

पर ऊर्जा का संचार होता है। लेकिन पाँचवें सेमेस्टर तक आते-आते, व्यक्ति थोड़ा शांत हो जाता है। कनिका और रॉय, दोनों का कहीं कोई अता-पता नहीं था। और मेरा परीक्षा के बाद 'परीक्षा कैसी रही?' या 'इस प्रश्न का उत्तर क्या था?' जैसी चर्चाओं में पड़ने का कोई इरादा नहीं था।

अजीब बात है, परीक्षा खत्म होने पर मुझे अपने फ्लैट में जाकर सोने की तीव्र इच्छा हुई। इसलिए मैं बिना किसी को फोन या मैसेज किए अपने फ्लैट की ओर चल पड़ा। मैंने बस यही सोचा कि बिस्तर पर पहुँचकर ही मर जाऊँगा। फ्लैट पहुँचकर मैंने देखा कि दरवाजा खुला था। इसका मतलब था कि रॉय घर पर था। मैंने सोचा कि वह परीक्षा खत्म होने का इंतजार कर रहा होगा ताकि अपने उपन्यास पर काम शुरू कर सके। मुझे उसकी एकाग्रता देखकर लगभग ईर्ष्या होने लगी। आखिरकार उसे वो दो महत्वपूर्ण चीजें मिल गई थीं जिनकी उसे सच में जरूरत थी। ऐसा लग रहा था जैसे जब भी उसे एक मिनट का भी खाली समय मिलता, उसे यह सोचने की जरूरत नहीं पड़ती कि उस समय का क्या करे।

और हां, आखिरकार मेरी जगह उसे एक अच्छी दोस्त मिल गई थी - कनिका। जब वे साथ होती थीं तो खुश दिखती थीं, जो एक और अच्छी बात थी। इन लड़कियों को हमेशा कुछ न कुछ काम करते रहना चाहिए। क्योंकि अगर उनके पास कुछ नहीं होता, तो वे रूठने लगती हैं और आपकी जिंदगी नरक बना देती हैं।

मैंने रॉय के कमरे का दरवाजा खोला और अंदर देखा।

और मैंने जो देखा, उसी ने मेरे शेष जीवन की दिशा तय कर दी।

रॉय और कनिका एक दूसरे को किस कर रहे हैं।
मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। कनिका रॉय के बिस्तर पर लेटी थी और रॉय उसके ऊपर लेटा हुआ था। उसके होंठ बेतहाशा कनिका के होंठों को चूम रहे थे। आनंद से कनिका की आँखें बंद थीं। उन्हें यह भी एहसास नहीं था कि मैं वहाँ खड़ा हूँ।

मेरी नज़र धुंधली हो गई। मुझे लगा जैसे मैं गिर रहा हूँ। मुझे लगा कि मैं वहीं, अपने ही दरवाज़े पर, रेत के ढेर में बदल जाऊँगा। शायद मेरी आँखों को धोखा हो रहा था। ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा बिलकुल नहीं हो सकता। लेकिन सच में वह वही थी। इसमें कोई शक नहीं था। वह बिस्तर पर आँखें बंद करके लेटी थी, और वह उसे बेतहाशा चूम रहा था।

यह कुछ ऐसा था जिसे मैं अपने सबसे बड़े दुश्मनों के साथ भी नहीं होने देना चाहती। अगर मेरा दिल कमजोर होता, तो मुझे दिल का दौरा पड़ जाता। मुझे अपने सीने में साफ-साफ आवाज सुनाई दे रही थी। मेरी जांघें कांप रही थीं। ऐसा हो ही नहीं सकता था।

नहीं, नहीं, नहीं।

मेरी आंखें चौंधिया गईं। मेरा दिमाग सुन्न हो गया। मेरी नसों में खून का प्रवाह रुक गया। मेरे चारों ओर सब कुछ घूमने लगा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या देख रहा हूँ। और मेरे आस-पास से आ रही कोई भी आवाज़ मुझे सुनाई नहीं दे रही थी।

ये हो ही नहीं सकता। पर ये हो रहा था। मेरी आँखों के सामने। वे दोनों एक-दूसरे को चूमने में इतने मग्न थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि मैं वहाँ खड़ी हूँ। रॉय। एक ऐसा लड़का जिसके बारे में मैंने हमेशा सोचा था कि वो कभी मेरे साथ ऐसा नहीं करेगा। मुझे पहले ये क्यों नहीं समझ आया? मैंने हमेशा उसे ऐसा लड़का समझा था जो बेताब बातें तो करता है लेकिन असल में बहुत

प्यारा होता है। पर अब से, जब भी मैं उसे देखूँगी, मेरा मन करेगा कि उसके दाँत तोड़ दूँ।

उसे ऐसा क्यों करना पड़ा? क्या एक लड़की वाकई इतनी ज़रूरी थी? क्या उसे पूरी दुनिया में कोई और लड़की नहीं मिल सकती थी? कनिका? मेरी कनिका? और कनिका? वो ऐसा कैसे कर सकती है? वो किसी और को कैसे चूम सकती है? वो भी मेरी सबसे अच्छी दोस्त को? मुझे तो ये एक क्रूर मज़ाक लग रहा था।

मैं मुड़ी और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया। दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ से रॉय ने आखिरकार मुझे देख लिया होगा। मुझे अंदर से एक आवाज़ सुनाई दी, "समर?" लेकिन मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मैं बाहर की ओर चलती रही। मैं मुड़ी और बाहर निकलते समय लड़खड़ा गई, लेकिन फिर संभल गई। मैंने सड़क पार की। मैं सड़क के उस पार इंतज़ार करने लगी कि क्या रॉय मुझे देखने के लिए बाहर आएगा।

मैं करीब पांच मिनट तक इंतज़ार करती रही, लेकिन उनमें से कोई भी बाहर नहीं आया। मेरा दिमाग खराब हो गया। पहले तो उन्होंने मुझे इस तरह धोखा दिया, और फिर उनमें इतनी भी तमीज़ नहीं कि मुझसे माफ़ी मांग लें? या कम से कम बता दें कि क्या हुआ था? क्या हमारे रिश्ते का उनकी ज़िंदगी में कोई महत्व नहीं था? रॉय? कनिका? क्या मैं उन दोनों के लिए इतनी कम अहमियत रखती थी? मैंने ऐसा क्या किया था कि मुझे ये सब झेलना पड़ रहा है? ये तो पागलपन था। मैं पागल हो रही थी।

मैंने सड़क की ओर देखा और सूरज बहुत तेज़ लग रहा था। आँखें खुली रखना भी मुश्किल हो रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अब कहाँ जाऊँ, क्योंकि मेरा घर ही वो आखिरी जगह थी जहाँ मैं जाना चाहती थी।
अंदर रहें।

मेरे दिमाग में अब तक जितने भी बुरे ख्याल आ सकते थे, उनमें से यह सबसे बुरा था। कनिका रॉय को चूम रही थी। यकीन मानिए, मैं दिल से कह रही हूँ - जो मैंने देखा, उसे देखने से पहले मैं मर जाना चाहती थी। सड़क पर ट्रैफिक एक पल के लिए खतरनाक लगा। और फिर यह लुभावना सा लगने लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे यह मुझे अपनी ओर खींच रहा हो। मेरा दिमाग आत्महत्या के विचारों से भर गया था। मुझे लगा जैसे मैं इस प्रलोभन के आगे हार मान लूँ। बस एक पल का दर्द और फिर हमेशा के लिए मुक्ति। यह यकीनन इस जीवन भर के अपमान से बेहतर होगा, जहाँ मुझे हर मिनट हज़ार बार मरना पड़ेगा। मेरे पास हार न मानने का कोई अच्छा कारण नहीं था।

मेरी आँखें लाल हो गई थीं। मुझे याद नहीं आ रहा था कि मैंने अपनी कमीज़ कब फाड़ी। उस पल मैं लगभग गुस्से से पागल हो गया था। और फिर मेरे मन में एक और ख्याल आया। ये लोग ही गड़बड़ कर रहे थे। इन्हें सबक सिखाना चाहिए, मुझे नहीं। असल में, मुझे उस कमरे में वापस जाकर उन्हें खरी-खोटी सुनानी चाहिए। एक-दो घूंसे भी काम आ सकते हैं। अचानक मुझे रॉय के चेहरे पर एक ज़ोरदार घूंसा मारने की तीव्र इच्छा हुई। इससे दर्द काफी कम हो जाएगा।

लेकिन किसी तरह, मैं उनके चेहरे दोबारा देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाई। मैं भाग जाना चाहती थी। बस चुपचाप गायब हो जाना चाहती थी। किसी भी ट्रेन में बैठकर ऐसी जगह गायब हो जाना चाहती थी जहाँ मैं खुद को भी न ढूंढ पाऊं।

मैंने एक ऑटो रोका और उसमें बैठ गया। मैं बस इस जगह से भाग जाना चाहता था और

कुछ समय ऐसी जगह बिताना चाहता था जहाँ मुझे कोई परिचित चेहरा न देखना पड़े। शायद कोई ऐसी गली जहाँ मैं बेफिक्र होकर चल सकूँ, बिना पागलों जैसा दिखे।

"आप कहाँ जाना चाहते हैं?" ऑटो चालक ने पूछा।

"कनॉट प्लेस," मैंने खुद को कहते सुना। एक गोलाकार सड़क जिस पर बहुत सारे लोग बिना किसी उद्देश्य के घूम रहे हों, एक अच्छा विचार लग रहा था।

मुझे कनिका की याद आ गई और उसके साथ बिताया एक साल मेरी आंखों के सामने से गुजर गया। हमारी पहली मुलाकात, हमारी पहली बातचीत, हमारा पहला स्पर्श, हमारा पहला चुंबन। सब कुछ मेरी आंखों के सामने आ गया। और जितना ज्यादा मैं इसके बारे में सोचती, उतना ही बुरा मुझे लगता। कोई मुझे मार डाले, मैं सोच रही थी।

तभी मैंने एक जोड़े को अपने सामने से गुजरते देखा। मैंने उन्हें देखा और मेरे शरीर की हर कोशिका उस लड़के के पास जाकर उसे भागने के लिए कहना चाहती थी। मैं उसे भागने के लिए कहना चाहती थी, इससे पहले कि वह लड़की उसकी जिंदगी बर्बाद कर दे और उसे मेरी तरह तबाह कर दे।

यह एक ऐसा एहसास था जिसे बहुत कम लोगों ने ही महसूस किया होगा। यह किसी करीबी की मृत्यु से भी बदतर था। मृत्यु निश्चित होती है और उसका कोई कारण होता है। लेकिन इसमें कोई कारण नहीं दिख रहा था।

यह मुंह पर तमाचा था। पीठ में गोली लगने जैसा था।
रॉय। हमने साथ में कितने अच्छे पल बिताए थे। हमने कितने सपने और आकांक्षाएँ साझा की थीं। हमने अपने चालीसवें जन्मदिन पर विश्व भ्रमण पर जाने की बात की थी। और उसने सबसे क्रूर तरीके से हमारी दोस्ती को खत्म कर दिया। यह मेरी कल्पना और समझ से परे था।

मैंने अपना सिर गोद में रखा और ठान लिया कि मैं रोऊंगी नहीं। मैंने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया और आंखों में आंसुओं को रोकने की कोशिश की। तमाम कोशिशों के बावजूद, एक छोटी सी बूंद निकल ही गई, जिसे मैंने गुस्से से पोंछ दिया। मैंने कार के रियर व्यू मिरर में खुद को देखा। मुझे खुद से इतनी नफरत पहले कभी नहीं हुई थी।

नहीं।

अगली बार जब मुझे होश आया तो मैं कनॉट प्लेस पहुँच चुका था। मैंने चारों ओर देखा। हर कोई अपना काम ऐसे कर रहा था जैसे आज कुछ नया हुआ ही न हो। वे वही करेंगे जो उन्होंने कल किया था। उनमें से कुछ को उम्मीद थी कि आज वे ज़्यादा पैसे कमाएँगे। लेकिन उनमें से किसी को भी मेरी तरह थप्पड़ नहीं पड़ा था।

उनके लिए आज का दिन कल की फोटोकॉपी था।

लेकिन मेरे लिए, यही वो निर्णायक क्षण था। मैं अपने जीवन को कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देख पाऊँगी और इस क्षण को याद किए बिना नहीं रह पाऊँगी। मैं बस भाग जाना चाहती थी।

मैंने कुछ युवतियों को ज़ोर से हंसते सुना और मुड़कर देखा। मुझे उत्सुकता हुई कि कहीं उन्हें मेरा राज़ तो नहीं पता। मुझे लगा कि हंसते-हंसते वे आपस में कह रही होंगी, 'इस लड़के की गर्लफ्रेंड ने उसके रूममेट को किस किया।' लेकिन ऐसा नहीं था। वे आपस में किसी मज़ाक पर हंस रही थीं।

तभी मेरी जेब में रखा फोन वाइब्रेट होने लगा। मैं सोच रही थी कि कानीका का फोन हो या न हो। मैं फैसला नहीं कर पा रही थी।

मैंने अपनी जेब से फोन निकाला। यह जीशान का फोन था।

"हाय जीशान," मैंने कॉल रिसीव करते हुए कहा।

"समर, तुम आ रही हो या नहीं?" उसने पूछा।

"कहां से आ रहे हो?"

"गोवा, बेवकूफ। मैंने तुम्हें कल शाम ही बताया था," उसने कहा।

"मुझे नहीं पता, जीशान," मैंने कहा।

"लेकिन मुझे पता है। तुम मेरे साथ आ रहे हो।"
मैंने बेहद कमजोर आवाज में कहा, "मेरा मन नहीं है।" मुझमें बहस करने की ताकत नहीं थी।

"मुझे पता है कि तुम्हारा मन कर रहा है और तुम आना भी चाहती हो। जितनी जल्दी हो सके रेलवे स्टेशन पर मिलो," जीशान ने कहा और फोन काट दिया।

मैं स्तब्ध था, मेरे आस-पास क्या हो रहा था, यह मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा था। एक ज़ॉम्बी की तरह, मैं मेट्रो में चढ़ा और नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँच गया। यह कनॉट प्लेस से सिर्फ दस मिनट की दूरी पर है, जिसकी वजह से मेरे दिमाग में सोचने-समझने का ज़्यादा समय नहीं बचा था।

मैं गोवा जाने वाली ट्रेन में चढ़ा, बैठने के लिए एक कोना ढूंढा और आंखें बंद कर लीं। मुझे एहसास ही नहीं हुआ था कि मैं कितना थक चुका था। वही दिन था। मैं सेमेस्टर की आखिरी परीक्षा के लिए पढ़ाई करने के लिए सुबह जल्दी उठ गया था। मैंने दोपहर 1:45 बजे तक पढ़ाई की और फिर परीक्षा दी।

और फिर मैंने वह छवि देखी जो हमेशा के लिए मेरी आंखों के सामने अंकित हो जाएगी।

मैं दरवाजे के पास बैठा था और अपने आसपास हो रही सारी बातचीत सुन रहा था। मेरे बगल वाले बॉक्स में दो लोग बातें कर रहे थे।

"तो उसके साथ तुम्हारी डेट कैसी रही?" उनमें से एक ने दूसरे से पूछा।

"ठीक था," दूसरे व्यक्ति ने जवाब दिया।

"ओह। तो तुम्हें उसे चूमने का मौका नहीं मिला?"

"हां। हमने किस किया। लेकिन सब ठीक था।"

"तुमने उसे चूमा! वाह, क्या बात है! कैसा लगा?" पहले लड़के ने पूछा।

"अच्छा नहीं लगा। उसने मुझे और कुछ नहीं करने दिया।"

"लेकिन फिर भी! तुमने उसे चूमा! मुझे नहीं पता था कि तुम उससे इतना प्यार करते

हो!" "सिर्फ उसे चूमने से यह साबित नहीं होता कि मैं उससे प्यार करता हूँ," दूसरे लड़के

ने कहा। "तो तुमने उसे यूँ ही चूम लिया?"

"हाँ... एक चुंबन का कोई मतलब नहीं होता, यार।"

"तो तुम उससे शादी भी नहीं करोगे?" पहले लड़के ने पूछा। और दूसरा लड़का ज़ोर से हंसने लगा, मानो उसने अब तक की सबसे मज़ेदार बात सुनी हो।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या सोचूँ। मेरे दिमाग में विचारों का सैलाब उमड़ रहा था, लेकिन कुछ भी शांत नहीं हो रहा था। क्या रॉय के साथ कनिका का चुंबन उतना ही महत्वहीन था जितना इस लड़के का अपनी प्रेमिका के साथ चुंबन? या वे दोनों अलग थे?
कनिका के साथ मेरे वो चुंबन जिनका उससे कोई लेना-देना नहीं था?

अचानक मेरी सहनशक्ति खत्म हो गई। अकेले बैठकर जो हुआ था उसके बारे में सोचते रहने से मामला और बिगड़ रहा था। मुझे शौचालय जाने की इच्छा हो रही थी, लेकिन थकान के कारण उठना बहुत मुश्किल था। फिर भी मैंने किसी तरह हिम्मत जुटाई। वॉशबेसिन के सहारे मैं उठ खड़ी हुई। मैं वापस वहीं बैठ गई जहाँ मैं बैठी थी और ट्रेन से बाहर देखने लगी। और फिर मेरे अनकहे आँसुओं से संघर्ष शुरू हुआ। मैं रोना नहीं चाहती थी।

मेरी आंखें सुबह पांच बजे खुलीं। मैंने चारों ओर देखा कि मैं कहां हूं।

एक पल के लिए मैं डर गया। जब मैंने आँखें खोलीं, तो सबसे पहले मुझे एक गंदे वॉशबेसिन का निचला हिस्सा दिखाई दिया। एक गंदी बदबू मेरे नाक में घुस गई। मैं शौचालय के काफी करीब बैठा था।

और फिर वही दृश्य मेरी आँखों के सामने कौंध गया। कनिका और रॉय के बीच चुंबन का दृश्य। वही लड़की जो मेरा पहला प्यार थी।

मैं वहां से उठा और बदबू से बचने के लिए शौचालय से दूर चला गया। मैं शौचालय के बीचोंबीच जाकर खड़ा हो गया। सब सो रहे थे। मेरे पास कोई सामान नहीं था। मेरी जेब में सिर्फ मेरा बटुआ और फोन था। मैं सोचने लगा कि अब आगे क्या करूं।

मैंने जीशान को फोन किया। जैसा कि उम्मीद थी, उसने फोन नहीं उठाया। उससे सुबह तड़के तक न सोने की उम्मीद तो की जा सकती है, लेकिन सुबह 5 बजे उठना तो उसके बस की बात ही नहीं।

तो आधी रात को मैं डिब्बे के दरवाजे पर गया, अपने पैर बाहर लटकाए और बैठ गया। मुझे अपने चेहरे पर हवा का स्पर्श अच्छा लग रहा था। मैंने कुछ सुखद सोचने की कोशिश की, ताकि मैं उसके बारे में न सोचूँ। लेकिन यह व्यर्थ था। मेरे दिमाग में बस वही चल रहा था जो मैंने उस दिन पहले देखा था। जब मैं वहाँ बैठा, भावनाओं के तूफान से जूझने की कोशिश कर रहा था, तो कनिका के साथ मेरे रिश्ते की तस्वीरें मेरे दिमाग में कौंध गईं। हमने अच्छे पल भी देखे थे, बुरे पल भी। लेकिन हम हमेशा साथ थे। डेढ़ साल में हमने जो कुछ झेला था, वह बहुत से लोगों के पूरे जीवन में झेलने से कहीं अधिक था। और हम यह सब इसलिए कर पाए क्योंकि हम जानते थे कि चाहे कुछ भी हो जाए, हम एक-दूसरे का साथ देंगे।

अब यह बात सच नहीं थी।

उस चुंबन के साथ ही सब कुछ चकनाचूर हो गया। हमारे बीच कुछ भी नहीं बचा था। हमारा रिश्ता खत्म हो गया था। यह सोचकर ही मुझे बहुत दर्द होता था।

एक घंटे बाद लोग जागने लगे। मैं उनके चेहरों को निहारने और यह समझने की कोशिश करने में मग्न हो गया कि वे गोवा में क्या करने वाले हैं। गोवा हमेशा से ही अलग-अलग पृष्ठभूमि के लोगों को आकर्षित करता रहा है। और उन्हें देखना और उनके मन में क्या चल रहा है, इसका अनुमान लगाना एक आदर्श अनुभव था।
मेरे मन में जो चल रहा था उसे नज़रअंदाज़ करने का एक तरीका। मुझे

ध्यान भटकाने की ज़रूरत थी। सात बजे, मैंने एक बार फिर ज़ीशान के

नंबर पर कॉल किया।

"हेलो," उसने बहुत नींद भरी आवाज़ में कहा। मैंने ध्यान से सुनने की कोशिश की कि क्या वह ट्रेन में है। मैं बिल्कुल नहीं चाहती थी कि मैं ट्रेन में चढ़ जाऊं और उसने अपना इरादा बदल दिया हो। मैं बिल्कुल नहीं चाहती थी कि किसी अनजान शहर में अकेली रह जाऊं। या शायद, जब मैंने इसके बारे में सोचा, तो मुझे लगा कि यह उतना बुरा भी नहीं होगा।

लेकिन आसपास इतना शोर था कि उसकी बातें समझ पाना मुश्किल था। और मुझे एहसास हुआ कि जब वह इतना नींद में है तो उसे सब कुछ समझाना नामुमकिन होगा। इसलिए मैंने कॉल काट दी।

जीशान ने पंद्रह मिनट बाद मुझे वापस फोन किया।

"Hi Samar," Zeeshan said.

"अरे, क्या तुम आखिरकार गोवा के लिए निकल गए?" मैंने पूछा।

"तुम्हें इससे क्या फर्क पड़ता है? तुमने मुझे धोखा दिया, कमीने!" जीशान

ने कहा। "बस सवाल का जवाब दो। तुम गोवा के लिए निकले या नहीं?"

मैंने पूछा।

मैं इस समय ट्रेन में अकेला हूँ, और मुझे अभी से ही बहुत आनंद आ रहा है! आप

किस डिब्बे में हैं?

"क्यों? क्या तुम भी ट्रेन में हो?" उसने पूछा।

"हाँ। मैं सीज़न 2 में हूँ। इधर आओ। मैं पीछे वाले दरवाज़े पर बैठी हूँ," मैंने कहा और फ़ोन काट दिया। फिर मैं ट्रेन के दरवाज़े से बाहर देखने लगी, मेरे पैर बाहर लटके हुए थे। मैंने अपने पैरों के नीचे से गुज़रते हुए नज़ारे को देखा। और जब ट्रेन एक पुल पार कर गई, तो मैंने नीचे पानी की ओर देखा। नीचे पानी को देखकर मेरे मन में बुरे-बुरे ख्याल आने लगे। मैं अपनी सारी तकलीफों को खत्म करने से बस एक कदम दूर थी। एक पल का साहस सब कुछ खत्म कर सकता था।

तभी जीशान ने पीछे से मेरे कंधे को छुआ और मैं खड़ी हो गई। हम गले मिलने वाले लोग नहीं थे, लेकिन हम दोनों मुस्कुरा रहे थे। यकीनन उस पल के बाद यह मेरी पहली मुस्कान थी।

"मुझे खुशी है कि तुम आ गए, यार। लेकिन कैसे? मुझे लगा तुमने मुझे छोड़ दिया," जीशान ने कहा।

"यह आखिरी समय में हुआ। मैंने सोचा कि आपको फोन करने से पहले मैं थोड़ी देर यहीं बैठ जाऊंगी और मुझे पता ही नहीं चला कि कब मुझे नींद आ गई," मैंने कहा।

"ठीक है। यहाँ सोते-सोते थक गए होंगे। चलो, मेरी सीट पर चलते हैं," जीशान ने कहा। मैंने चलना शुरू कर दिया।

"लेकिन तुम्हारा बैग कहाँ है?"

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "मुझे कुछ नहीं मिला।"

और पैसा?

मैंने कहा, "बस नाश्ता खरीदने के लिए काफी है।" जीशान मुस्कुराया।

और हम ट्रेन के अंदर, उसके डिब्बे की ओर चलने लगे।

बाकी का सफर थोड़ा बेहतर रहा। जीशान के साथ होने से कम से कम मेरा ध्यान बँटा तो रहा। और मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि मैं कहाँ हूँ, बस इतना था कि मैं अपने फ्लैट के आस-पास कहीं नहीं था।

मैंने पहले कभी ऐसा दौरा नहीं किया था जो पूरी तरह से बिना योजना के हो। और यह अजीब लग रहा था। इसके अलावा, मेरे पास सिर्फ वही कपड़े थे जो मैंने पहने हुए थे और मेरे पास सिर्फ वही पैसे थे जो मेरे बटुए में थे।

एक पल के लिए यह जितना डरावना लगा, उतना ही रोमांचकारी भी लगा।

ट्रेन में बैठे-बैठे मेरा मिजाज लगातार बदलता रहता था। एक पल मैं ठीक होती, दूसरे पल मुझे बहुत गुस्सा आता। और कभी-कभी, जीशान के सामने बैठकर, खिड़की से बाहर देखते हुए, बिना किसी खास वजह के, मुझे बहुत ज़्यादा गुस्सा आ जाता था।

ऐसे ही एक पल में मेरा फोन वाइब्रेट करने लगा। मैंने उसे अपनी जेब से निकाला और स्क्रीन पर रॉय का नाम दिखाई दिया। किसी और समय होता तो शायद मैं कॉल उठाने के बारे में सोचता। लेकिन उस समय, उसका नाम देखकर मुझे अपना फोन खिड़की से बाहर फेंकने की तीव्र इच्छा हुई।

लेकिन मैंने इसका विरोध किया। भले ही मैं अपना फोन रखना नहीं चाहता था, लेकिन इसे फेंकने के बजाय इसका बेहतर उपयोग किया जा सकता था, खासकर अब जब मेरे पास ज्यादा पैसे नहीं थे।

इसलिए मैंने उसे बंद करके वापस अपनी जेब में रख लिया। और मुझे एहसास हुआ कि ट्रेन में हमारे बॉक्स में ज़ीशान और मेरे अलावा और कौन बैठा था, मुझे इसका कोई अंदाजा नहीं था।

एक पल के लिए, मैंने कल्पना की कि मेरे चारों ओर खूबसूरत लड़कियों का झुंड जमा हो गया है। लेकिन जब मैंने चारों ओर देखा, तो मेरी उम्मीद के मुताबिक निराशा हाथ लगी। आस-पास कोई लड़की नहीं थी।

मुझे एहसास हुआ कि इस सारी उथल-पुथल के बीच, मैं भी अविवाहित हो गया था। अब मुझे सड़क पर किसी खूबसूरत लड़की से बात करने की इच्छा को दबाना नहीं पड़ेगा। और यह देखते हुए कि...
इस तथ्य को देखते हुए कि मैं देश की सबसे खूबसूरत लड़कियों वाली जगह पर जा रहा था, मुझे इस बात पर अच्छा महसूस करना चाहिए था।

फिर भी, मैंने ऐसा नहीं किया। किसी तरह, मैं किसी भी लड़की को देखने में असमर्थ होने की घुटन महसूस करना चाहता था। मैं उसके साथ प्यार में होने की स्थिरता महसूस करना चाहता था।

ट्रेन का सफर बहुत उबाऊ हो सकता है। मेरे बगल में बैठे अंकल जी ने तो मामला और भी बिगाड़ दिया। पहली बात तो यह कि उनसे मसालों की बेहद दुर्गंध आ रही थी। उनके बिल्कुल पास बैठना भी मुश्किल था। ऊपर से, उनका बदसूरत चेहरा भी उन्हें बर्दाश्त करने लायक नहीं बना रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें सच में नहाने की ज़रूरत है, जबकि उन्होंने उसी सुबह ज़रूर नहाया होगा। मेरी बेचैनी और गोवा की लंबी यात्रा ने तो इसे और भी अप्रिय बना दिया।

"तो आप लोग कहाँ से हैं?" अधेड़ उम्र के उस आदमी ने अपना तोंद सहलाते हुए कहा। मानो उसकी मौजूदगी ही काफी नहीं थी, अब वह बात करना चाहता था।

मैंने यथासंभव संक्षिप्त शब्दों में उत्तर दिया, "दिल्ली।"

"गोवा में छुट्टियां मनाने की क्या योजना है?"

"हाँ।" वह मुझे चिढ़ाने लगा था।

"तुम्हारा नाम क्या है?" उसने बातचीत जारी रखने के लिए उत्सुकता से

पूछा। "समर।"

"जीशान।"

उन्होंने हमसे पूछा, "आप किस तरह की पार्टी की तलाश में हैं?"

मुझे उस बात का जवाब देने का बिल्कुल मन नहीं था। अचानक मुझे शांति चाहिए थी। मैंने सोचा कि इस बातचीत से बचने के लिए वॉशरूम चली जाऊं।

"दरअसल, कुछ भी चलेगा," जीशान ने जवाब दिया। "जहां भी हमें मौज-मस्ती करने और कुछ नए लोगों से मिलने का मौका मिले।"

"दरअसल, मुझे एक ऐसी पार्टी के बारे में पता है जो मुझे यकीन है कि आप दोनों को बहुत पसंद आएगी," उस आदमी ने कहा।

अचानक ही उसने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। उसके हाव-भाव से मुझे लगा ही नहीं था कि वह कुछ कर पाएगा। फिर भी, मैं उसकी बात सुनना चाहता था।

"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?" जीशान ने कहा।

"यह मेरा फोन नंबर है। अगर आप किसी ऐसी पार्टी में जाना चाहते हैं जहां बहुत कम लोग जाते हैं, तो मुझे कॉल करें।"
जीशान ने उनका नंबर लिया और उनसे हाथ मिलाया।

"आपका नाम क्या है, महोदय?" जीशान ने पूछा।

"थिमप्पा वज्रमट्टी."

"क्या?"

"थिमप्पा वज्रमट्टी."

"क्या?"

"थिमा-प्पा वज-रा-मत्ती."

"ठीक है," हम दोनों ने कहा और चुंबन करने की कोशिश करना छोड़ दिया।

ट्रेन गोवा पहुँची और हम उतर गए। हमने नकली मुस्कान के साथ ट्रेन में बैठे थिम्पा वाले आदमी को अलविदा कहा। जैसे ही हम स्टेशन से बाहर निकले, तीन खूबसूरत लड़कियाँ बहुत छोटे कपड़ों में हमारे सामने से गुज़रीं। ज़ीशान और मैंने एक-दूसरे को देखा और आखिरकार हमें सच्चाई का एहसास हुआ।

हम गोवा में थे!

गोवा। हर बुरी चीज़ का एक जवाब। उम्मीद थी कि यह मुझे सारी नकारात्मकता से बाहर निकाल देगा। सबसे महत्वपूर्ण बात, उम्मीद थी कि यह मुझे कनिका और रॉय को एक-दूसरे को किस करते हुए देखने के उस दृश्य से छुटकारा दिलाएगा।

आखिरकार, कई घंटों तक पेट में असहनीय दर्द के बाद मुझे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ। हमने एक टैक्सी किराए पर ली और होटल ढूंढने के लिए कलांगुट बीच की ओर चल पड़े।

"तो हम किस तरह के होटल में जा रहे हैं?" मैंने जीशान से पूछा।

"ज़ाहिर है, गोवा में सबसे अच्छा।"

"आप भूल रहे हैं कि मेरे पास पर्याप्त पैसे नहीं हैं।"

"भाड़ में जाओ यार। एटीएम कार्ड क्यों नहीं रख सकते थे?" जीशान ने कहा।

"हम इस बारे में बाद में बात करेंगे। फिलहाल, हम समुद्र तट पर एक बहुत ही सस्ते होटल में जा रहे हैं।"

"जो भी हो," जीशान ने हार मानते हुए कहा।

हमने समुद्र तट पर एक काफी सस्ते होटल में चेक-इन किया, जिसके बगल में एक छोटी सी झोपड़ी थी। अगर आप कभी गोवा नहीं गए हैं, तो झोपड़ियाँ समुद्र तट पर बने गोवा शैली के रेस्तरां होते हैं।
वहाँ आरामकुर्सियाँ हैं जहाँ लोग आराम करते हैं और पेय पदार्थ पीते हैं। जो लोग पेय पदार्थ नहीं पीते वे खाना पसंद करते हैं।

कमरा छोटा और गंदा था। लेकिन ठीक-ठाक सस्ता था। ज़ीशान कमरे को लेकर काफी नाराज़ था। वह यह साफ दिखाना चाहता था कि उसे यह कमरा पसंद नहीं है। खासकर तब जब कुछ समय पहले तक उसका अपना घर इससे कई गुना बदतर था।

मैंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया और मेरे विचार फिर से उसी लड़की की ओर लौट गए। मैंने कमरे में चारों ओर देखा। मुझे ड्रेसिंग टेबल दिखाई दी। खिड़की के बाहर समुद्र तट दिखाई दिया। मुझे नारंगी रंग के टॉप में एक सुंदर लड़की दिखाई दी।

दुर्भाग्य से, हर चीज़ मुझे उसकी याद दिला देती थी। ड्रेसिंग टेबल मुझे उसके बाल संवारने की याद दिलाती थी। समुद्र तट मुझे पिछले साल समुद्र तट पर बिताए गए समय की याद दिलाता था। नारंगी टॉप वाली लड़की मुझे उसके नारंगी टॉप की याद दिलाती थी।

मुझे एहसास हुआ कि मेरे विचारों को स्थिर होने में कुछ समय लगेगा। तब तक, मेरी हालत बहुत खराब थी।

"तो, योजना क्या है?" मैंने पूछा।

"मुझे पहले थोड़ी नींद लेनी होगी," जीशान ने कहा।

"नहीं। हम होटल में बिल्कुल नहीं बैठेंगे," मैंने कहा। मुझे बाहर समय बिताने की ज़रूरत है। मुझे थोड़ा बेहतर महसूस करने के लिए कुछ सुखद दृश्य देखने की ज़रूरत है।

मेरी दृढ़ता देखकर जीशान चौंक गया। लेकिन हमेशा की तरह, उसने एक अच्छे दोस्त की तरह व्यवहार किया और बाहर जाने के लिए राजी हो गया।

"तो हम शुरुआत कहाँ से करें?" जीशान ने पूछा।

बाहर निकलते ही हम दोनों के मन में एक ही बात आई। हम दोनों को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि गोवा में लोग दिन के समय क्या करते हैं। हमने चारों ओर देखा और समझने की कोशिश की कि लोग क्या कर रहे हैं।

"क्या तुम धूप सेंकना चाहते हो? शायद टैन लेना चाहते हो?" जीशान ने पूछा।

"क्या मैं ऐसी दिखती हूँ जिसे टैनिंग की ज़रूरत है?" मैंने अपनी पहले से ही सांवली त्वचा की ओर इशारा करते हुए कहा।

"तो फिर आप क्या करना चाहते हैं?"

तभी, कुछ गोरी लड़कियाँ दो छोटे स्कूटरों पर सवार होकर हमारे पास से

गुज़रीं। "क्या तुम भी वही सोच रही हो जो मैं सोच रहा हूँ?" ज़ीशान ने

पूछा।

"हाँ। क्यों नहीं?" मैंने कहा। और तभी मुझे यह बात समझ में आई। मैं अविवाहित थी और उन लड़कियों को देखकर उत्साहित होने का मुझे पूरा हक था। लेकिन क्या ज़ीशान मेरी दोस्त से सगाई नहीं कर चुका था? फिर वह उन लड़कियों को देखकर इतना उत्साहित क्यों हो रहा था?

"तो ये हमें कहाँ मिलेंगे? मुझे भी बिल्कुल वैसा ही चाहिए जैसा उस खूबसूरत लड़की

के पास है," जीशान ने कहा। "जीशान, क्या तुम उन्हें इंप्रेस करने की सोच रहे हो?"

"हां। दरअसल मैं हूं। लेकिन चिंता मत करो। अगर तुम्हें इनमें से कोई भी पसंद आए, तो मैं यहां से दूर रहूंगा।"

"और तुम्हारी गर्लफ्रेंड के बारे में क्या?" मैंने पूछा।

"कोई बात नहीं। ये मेरी बैचलर पार्टी है। मुझे ऐसा करने की इजाजत है।"

मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दे सकता।

"देखो, समर," जीशान ने दृढ़ता से कहा, "मैंने फैसला कर लिया है कि शादी के बाद मैं अर्शी के साथ अपना पूरा जीवन व्यतीत करूंगा। ऐसा वादा करने के लिए हिम्मत चाहिए। लेकिन शादी से पहले, मैं जिसे चाहूं उसे चूमूंगा।"

मैंने उसकी तरफ देखा। 'चुंबन' शब्द सुनते ही मेरे विचार तुरंत कनिका की तरफ लौट गए। और फिर मुझे एहसास हुआ कि शायद दुनिया ऐसे ही चलती है। और शायद मुझे दखल नहीं देना चाहिए। अगर वह यही करना चाहता है, तो मुझे इसे स्वीकार कर लेना चाहिए और अपने काम से मतलब रखना चाहिए।

इसलिए हमने एक-एक मोटरसाइकिल किराए पर ली।

"तो चलिए चलते हैं," मैंने कहा।

"हाँ। चलो पार्टी शुरू करते हैं।"

"हाँ! और मुझे पता ही नहीं था कि यह तुम्हारी बैचलर पार्टी है," मैंने कहा, और हम दोनों ने अपनी बाइकों की रफ्तार पूरी तरह बढ़ा दी।

हमने गोवा के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण किया। एक टूटा-फूटा पुराना किला, एक कम प्रसिद्ध समुद्र तट, एक प्राचीन गिरजाघर और इस तरह की कई चीजें। ये चीजें खास दिलचस्प तो नहीं थीं, लेकिन इनसे हमारा समय कट गया। और हमें खूबसूरत चेहरे देखने को मिले। दर्शनीय स्थल खत्म होते-होते काफी अंधेरा हो चुका था। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि पार्टी का दौर शुरू हो चुका था!

हम कलांगुट बीच पर वापस आए और अपने होटल के बाहर अपनी बाइकें खड़ी कर दीं। हमने वॉशरूम में नहाया और गोवा स्टाइल में पार्टी करने निकल पड़े।

हम बीच की ओर चल पड़े और सबसे शोरगुल वाली पार्टी की तलाश करने लगे। हम अपने होटल से चलना शुरू किया और बीच के दूसरे छोर तक चले गए।
सबसे बढ़िया पार्टी। और फिर हम वापस उस पार्टी में गए जो साफ़ तौर पर विजेता थी। मज़े की बात यह है कि वह वास्तव में सबसे बढ़िया संगीत वाली पार्टी नहीं थी। बस वहाँ सबसे खूबसूरत लड़कियाँ थीं और ज़ीशान अब पूरी तरह से लड़कियों को पटाने के मूड में था। हमने एक टेबल ली और हम दोनों ने दो-दो बियर मंगवाईं। तीसरा गाना खत्म होने से पहले ही बियर हमारे पेट में थी। और हम डांस फ्लोर पर थे। ज़ीशान ने नाचना शुरू किया। वह बहुत बुरा नाच रहा था। मैंने उसकी बुरी तरह नाचने की नकल करने की कोशिश की। मुझे पता चला कि मैं उसकी बुरी तरह नाचने की नकल करने में माहिर थी।

जब जीशान ने काफी शराब पी ली, तो उसने एक लड़की से बात करने का फैसला किया। उसने अपनी शिकार को देखा और उसके पास चला गया, जबकि मैं कुछ दूरी से यह सब देख रहा था।

"अरे, क्या मैं तुम्हें जानता हूँ? तुम किसी परिचित की तरह दिखते हो,"

ज़ीशान ने कहा। "क्या सच में? कौन?"

मैंने जीशान को यह कहते हुए सुना, "तुम बिल्कुल मेरी अगली गर्लफ्रेंड जैसी दिखती हो।"

उस लड़की को यह सुनकर बहुत बुरा लगा और वह चली गई। ज़ीशान निराश नहीं हुआ। वह अगली लड़की के पास गया। फिर अगली के पास। और फिर अगली के पास। उसी घिसे-पिटे जुमले के साथ।

हाथ में बीयर की एक बोतल और चेहरे पर मुस्कान लिए, ज़ीशान ने क्लब की लगभग हर लड़की से बात करने की पूरी कोशिश की। और जब उसका काम पूरा हो गया, तो वह वापस हमारी मेज पर आ गया।

"समर, मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

"जी?" मैंने कहा, जैसे किसी बहुत बड़ी मुसीबत का सामना करने के लिए

तैयार हो रही थी। "भाई, मुझे शादी से बहुत डर लगता है!"

मैंने उसकी तरफ देखा तो वो आधा रो रहा था और आधा हंस रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या प्रतिक्रिया दूं। लेकिन फिर, उसने जितनी बीयर पी रखी थी, उसके बाद तो सब कुछ अच्छा ही लग रहा था। इसलिए हम दोनों हंस पड़े।

"लेकिन क्यों? आपको ऐसा नहीं करना चाहिए-"

"क्योंकि मैं शादी बिल्कुल नहीं करना चाहता!"

"तो फिर तुम क्या करना चाहते हो?" मैंने पूछा।

"मैं गोवा के क्लबों में मस्ती करना चाहता हूँ। मैं अनजान लड़कियों को छेड़ना चाहता हूँ, भले ही मुझे पता है कि मेरी कोई उम्मीद नहीं है। मैं इस टेबल पर चढ़कर तुम्हारे साथ ड्रिंकिंग रेस करना चाहता हूँ!"

"तुम्हें पता है क्या..."
"What?" Zeeshan said.

"चलो करते हैं!" मैंने कहा और मेज पर चढ़ गया। जीशान ने भी मेरा अनुसरण किया और अपने हाथ में बीयर की बोतल लिए मेज पर चढ़ गया।

अगले ही पल हमने देखा कि पूरा क्लब हमारी तरफ देख रहा था। और हम सबके हाथों में बीयर की एक-एक बोतल थी।

और फिर, किसी ने उलटी गिनती शुरू कर दी।

और हम दोनों ने एक साथ अपनी बोतलों से पीना शुरू कर दिया। साठ सेकंड के भीतर मेरी

बोतल खाली हो गई। मैंने ज़ीशान की तरफ देखा, उम्मीद थी कि वह अभी भी पी रहा होगा। लेकिन वह मेरे बगल में खड़ा नहीं था। वह टेबल पर भी नहीं था। और क्लब में भी वह मुझे कहीं नज़र नहीं आया। तभी मैंने क्लब के दरवाजे पर कुछ हलचल देखी। कुछ बाउंसर ज़ीशान को टेबल पर चढ़ने के लिए बाहर निकाल रहे थे।

जैसे ही उसे बाहर निकाला गया, बाउंसर मेरी तरफ बढ़ने लगे। मैंने उन्हें शांत होने का इशारा किया और अपनी बची-खुची समझदारी के साथ बाहर निकल गया। मैंने ज़ीशान को क्लब के गेट पर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए देखा।

"मैं इन कमीनों को मार डालूंगा," उसने चिल्लाकर कहा।

"आराम करो, जीशान। चलो अपने कमरों में चलते हैं।"

"क्या तुम पागल हो? पार्टी तो अभी शुरू ही हुई है।"

"नहीं, ऐसा नहीं है। पार्टी खत्म हो चुकी है," मैंने कहा।

"नहीं यह नहीं..."

मुझे जीशान को घसीटते हुए कमरे तक लाना पड़ा। लेकिन मुझे पता है कि पार्टी खत्म होने का सबसे अच्छा समय क्या होता है। अब समय आ गया था कि हम नशे में धुत्त होकर गहरी नींद में सो जाएं।

"शुभ रात्रि, प्रियतमा," जीशान ने कहा, जैसे ही मैंने लाइट बंद की।

अगली सुबह, ज़ीशान हैंगओवर के साथ उठा। जैसे ही मैंने उसका चेहरा देखा, मुझे पता चल गया कि आज सुबह हम कहीं नहीं जा रहे हैं। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा। मैंने उसे वहीं छोड़ दिया।
मैं बिस्तर से उठा और समुद्र तट पर टहलने चला गया। मैं एक झोपड़ी में बैठ गया और अपने आस-पास के लोगों को देखने लगा। वहाँ एक दिलचस्प मिश्रण दिखाई दिया। वेटर मेरे पास आया और मुझसे ऑर्डर पूछा। मुझे पता था कि मेरी जेब में पैसे नहीं हैं। इसलिए मैंने वहाँ से चले जाने का फैसला किया। सुबह के समय समुद्र तट सबसे शांत जगहों में से एक होता है। इसलिए मैं चलता रहा, अपने पैरों पर रेत का आनंद लेता रहा।

जब मैं वापस लौटा, तब तक जीशान को होश नहीं आया था। वह अपना सिर पकड़े हुए था और लगातार खांस रहा था।

"अरे, तुम ठीक हो?"

"नहीं," जीशान ने कहा। "क्या आप मुझे एक कलम और कागज़ ला सकते हैं?"

"ज़रूर," मैंने कहा और रिसेप्शन से उसे ले लिया।

"लो, इसे किसी केमिस्ट से ले आओ," जीशान ने कहा। सुनने में भले ही अविश्वसनीय लगे,

लेकिन जीशान पहले डॉक्टर रह चुके थे।

हमने पूरा दिन कमरे में ही बिताया, उस अप्रिय भावना से जूझते हुए। आधी रात के करीब जीशान को फिर से पार्टी करने की इच्छा हुई। हम एक क्लब गए और अपनी बोतलें फिर से उठाईं। और फिर से पूरी रात पार्टी की। कुछ भी नहीं बदला। हम खूब नशे में धुत हो गए और पूरी रात नाचते रहे।

अगले दिन शाम को ही जीशान ने खुलकर अपना गुस्सा दिखाया।

"तो, आपको यह यात्रा कैसी लग रही है?" उसने मुझसे पूछा।

"मेरी उम्मीद से कहीं बेहतर। आपका क्या ख्याल है?"

"क्या तुम पागल हो? यह अब तक की सबसे खराब यात्रा है! हमने अभी तक एक भी अप्रत्याशित चीज़ नहीं की है!"

मैंने बुदबुदाते हुए कहा, "मुझे यह बातचीत जिस तरह से आगे बढ़ रही है, वह पसंद नहीं आ रही है।"

"चुप रहो, समर। इस यात्रा में ऐसा कुछ नहीं हुआ जिसकी हमें उम्मीद न हो।" "तो फिर? तुम

क्या कहना चाह रहे हो?"

"देखो - हम दोनों पहले भी गोवा जा चुके हैं। हम दोनों बीच पर जा चुके हैं और खूब बीयर पी चुके हैं। और जो हम अभी कर रहे हैं वो बिलकुल भी नहीं हो रहा... मतलब, मैं ट्रेन वाले उस थिम्पा नाम के लड़के को फोन करना चाहता हूँ," जीशान ने कहा।
"क्या तुम पागल हो? तुम्हें लगता है कि वह आदमी किसी मजेदार पार्टी के बारे में जानता है?"

"सच कहूँ तो, मुझे नहीं लगता। लेकिन फिर भी, मैं उसे एक मौका देना चाहता हूँ। क्या पता। कम से कम यह कुछ ऐसा होगा जो हमने पहले कभी नहीं देखा होगा।"

"लेकिन अगर मैं वह देखना ही न चाहूँ जो वह मुझे दिखाने वाला है तो क्या होगा?" मैंने पूछा।

जीशान ने उस विचार को मन से निकाल दिया और फिर भी उस आदमी को फोन कर दिया। मैंने उसे थिम्पा वाले आदमी से बात करते सुना, जो उसे रास्ते के बारे में कुछ समझा रहा था। मुझे इस बारे में अच्छा महसूस नहीं हो रहा था। लेकिन जीशान ने ठान कर लिया था कि उसे कोशिश करनी चाहिए। हम सड़क की ओर चल रहे थे, और जीशान रास्ता समझने की पूरी कोशिश कर रहा था। और जब उसने फोन रखा, तो मेरी सहमति लिए बिना ही, जीशान ने एक टैक्सी बुलाई और उसे रास्ता समझाया।

"कम से कम मुझे उस जगह का नाम तो बता दो?" मैंने चिल्लाकर कहा।

इसे वुडस्टॉक विलेज कहते हैं।

... मैं तुमसे प्यार करता हूँ रचू ...

प्रिय मित्रों, कृपया इस संदेश को तब तक फैलाएं जब तक यह मेरे परिवार तक न पहुंच जाए। मुझे लगता है कि वह मेरा नाम जानता है
पुस्तक यहां से डाउनलोड की गई:*EBOOK4IN.BLOGSPOT.COM*

गोवा में ज़्यादातर चीज़ें पास ही होती हैं। इसलिए जब कैब ड्राइवर को वुडस्टॉक पहुँचने में पूरे बीस मिनट लग गए, तो ज़ीशान और मैं थोड़ा चिढ़ने लगे। हम दोनों को लगने लगा था कि समय बर्बाद हो रहा है। शाम काफी हो चुकी थी और हम कहीं नहीं पहुँच पा रहे थे।

मैंने उस टैक्सी की पिछली सीट पर बैठे हुए कहा, "मैं धीरे-धीरे शराब पीना छोड़ रहा हूँ और मुझे यह पसंद नहीं है।"

"क्या हम सही रास्ते पर हैं?" जीशान ने ड्राइवर से पूछा।

"हाँ।

मैंने जीशान से पूछा, "तुम्हें क्या लगता है हमें वहां क्या मिलेगा?"

"सच कहूं तो, मुझे उम्मीद है कि वहां कोई संदिग्ध सा रेस्टोरेंट होगा जिसमें कुछ बूढ़े जोड़े बैठे होंगे," जीशान ने कहा।

मैंने अपनी पूरी ताकत से प्रार्थना की कि वह गलत साबित हो। मैं रात भर ठीक से सो नहीं पाई थी। मैं सचमुच थकी हुई थी। मेरा शरीर आराम के लिए तड़प रहा था।

"यह जगह ठीक कहाँ है?"

"वहाँ कहीं अरम्बोल गाँव है। वह किसी कोने में है," ज़ीशान ने जवाब दिया।

हम अब तक हाईवे पर थे। एक पर्यटक के लिए, गोवा की अधिकांश सड़कें कुछ खास अलग नहीं होतीं। लेकिन तभी, टैक्सी एक टूटी-फूटी सड़क की ओर मुड़ गई। हमारे चारों ओर का नज़ारा बदल गया। एक साइनबोर्ड ने मुझे बताया कि हम अरम्बोल गाँव पहुँच गए हैं। इस जगह का रहस्य और भी गहराता जा रहा था। कुछ और किलोमीटर टूटी-फूटी सड़क पर चलने के बाद, हम आखिरकार एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ घास-फूस की चारदीवारी थी। रात के अंधेरे में मुझे चारदीवारी के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और एक हल्की सी आवाज़ आ रही थी जिससे पता चल रहा था कि कहीं पास में तेज़ संगीत बज रहा है। कार एक बड़े गेट से अंदर गई जिस पर वुडस्टॉक विलेज लिखा हुआ था।

हमें एक तरह की तंद्रा जैसी अवस्था से बाहर निकालते हुए, टैक्सी ड्राइवर ने हमसे पूछा, "क्या आप लोग गोवा से हैं?"

"क्यों नहीं?"

"क्योंकि आम तौर पर वुडस्टॉक विलेज में केवल वही लोग आते हैं जो गोवा को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। और जो भी एक बार आता है, वह यह सुनिश्चित करता है कि वह हर बार यहां आए।"

"क्या यह वाकई इतना अच्छा है?" मैंने पूछा।

"आखिर इसमें ऐसी क्या बात है जो इसे इतना अच्छा बनाती है?" जीशान ने आगे कहा।

"वुडस्टॉक में आपको लगभग सब कुछ मिल जाता है - खाना, कॉकटेल, बीयर, व्हिस्की,

गांजा..." "गोवा में लगभग हर जगह हमें ये सब मिल जाता है," जीशान ने कहा।

"...और महिलाएं," टैक्सी ड्राइवर ने आगे कहा।

तभी गाड़ी एक खुले मैदान के सामने रुक गई। ज़ीशान और मैं गाड़ी से उतरे और सामने का अद्भुत नज़ारा देखा। हम सब कुछ देखकर दंग रह गए।

बीच में एक खुला मैदान था जिसके सामने एक स्टेज बना हुआ था। स्टेज पर मैंने कुछ विदेशियों को ढोल बजाते देखा। वे बहुत ही अनोखा और प्रभावशाली संगीत बजा रहे थे। स्टेज पर एक नर्तकी भी थी। स्टेज के सामने खुले मैदान में लोग संगीत की धुन पर झूम रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो सब अपनी ही दुनिया में खोए हुए हों। यह साफ था कि उनमें से ज्यादातर लोग नशे में थे। मेरा अनुमान था कि वहाँ लगभग पचास लोग होंगे, लेकिन मुझे यकीन था कि यहाँ और भी ज्यादा लोग होने चाहिए थे। यह कोई शोरगुल वाली पार्टी नहीं थी जिसमें लोग उछल-कूद कर रहे हों। यह एक शांत, परिपक्व किस्म की पार्टी थी। लोग हद से ज्यादा खुश लग रहे थे। दूसरे शब्दों में, वे सब बेसुध होकर नशे में चूर थे।

मैंने भीड़ से अपनी नज़रें हटाईं और चारों ओर देखा। दोनों ओर छोटी-छोटी झोपड़ियाँ थीं, जिन्हें शायद किसी होटल की तरह किराए पर दिया जाता था।

तीसरी तरफ एक रेस्तरां था, जहाँ लोग ज़मीन पर बैठकर तरह-तरह के धूम्रपान कर रहे थे। चौथी तरफ समुद्र तट था। ज़ीशान और मैंने एक-दूसरे को देखा। हमारी आँखें एक ही बात कह रही थीं। हम मानो स्वर्ग पहुँच गए थे। ज़ीशान ने मन ही मन तुलना की और निष्कर्ष निकाला कि इस जगह पर कम से कम आधे लोग महिलाएँ हैं।

हमने पहले कभी न देखी गई तरह से एक-दूसरे से हाथ मिलाया।

"मैं कम से कम एक महीने तक इस जगह को नहीं छोड़ूंगा," जीशान ने भीड़ के अंदर दौड़ते हुए घोषणा की।

जैसे ही जीशान भीड़ में गायब हुआ, मैं भी भीड़ की ओर चलने लगा। और जैसे-जैसे मैं उस जगह के करीब पहुँचता गया, मेरा उत्साह बढ़ता गया। संगीत की धुनें मेरे दिलों में उतर रही थीं।

मेरी त्वचा में एक अजीब सी अनुभूति हो रही थी और पूरे शरीर में एक समग्र आनंद की अनुभूति फैल रही थी। ऐसा लग रहा था मानो मैं किसी समाधि जैसी अवस्था में प्रवेश कर रहा हूँ, जो मेरे दिमाग के हर विचार पर हावी हो रही थी।

मैं अविवाहित था। मुझे अपनी आँखों पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं थी। मैं जिसे चाहता, उसे देख सकता था, उसके साथ रहने के समय की तरह नहीं। जैसे ही मैं भीड़ में आगे बढ़ रहा था, बाईं ओर से एक सुंदर लड़की गुज़री। हमारी नज़रें मिलीं और मैंने उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान देखी।

यह गोवा था। यह स्वर्ग था। मैं भीड़ की ओर बढ़ता रहा। मैंने लोगों को नाचते-गाते देखा। मुझे आश्चर्य हुआ कि उस शाम से पहले उनमें से कितने लोग एक-दूसरे को जानते थे। मैंने उस प्रेरणा का शुक्रिया अदा किया जिसने मुझे गोवा आने के लिए प्रेरित किया। मैं भीड़ के बीच में गया और चारों ओर देखने लगा कि लोग क्या कर रहे हैं। उन सभी में केवल एक ही बात समान थी - खुशी। और क्या हम सब इसी की तलाश में नहीं थे?

एक पल के लिए मुझे लगा कि मैं इसे पूरी जिंदगी कर सकता हूँ। आखिर स्थिर नौकरी में ऐसा क्या है कि हर कोई इसके पीछे पड़ा रहता है? क्यों न यहीं रहकर अधिक सुख का अनुभव करूँ?

आखिरकार मुझे ज़ीशान कलाकारों के संगीत के पास ही नज़र आ गया। मुझे देखते ही वो मुझे अपने साथ खींच ले गया और मेरे साथ नाचने लगा। ज़ीशान का ऐसा करना उसके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था। हम आम तौर पर एक-दूसरे के साथ नहीं नाचते थे। अचानक ज़ीशान ने अपना पैर हिलाया और इस तरह वो आधा मेरे साथ और आधा अपने पीछे नाच रही एक विदेशी लड़की के साथ नाचने लगा। उसके बाल नारंगी-लाल थे और वो नशे में लग रही थी। लेकिन जिस बात ने ज़ीशान को सबसे ज़्यादा उत्साहित किया होगा, वो ये थी कि वो लड़की अकेली लग रही थी।

उसने धीरे से अपनी मुद्रा बदली और उसके पास नाचने लगा। जीशान ने भी उसके साथ शारीरिक संबंध बनाने की कोशिश शुरू की और फिर एक ही झटके में वह उसके साथ नाचने लगा।

उनकी नज़रें मिलीं और लड़की नाचती रही। वह उसके साथ नाचने की अनुमति पाने में कामयाब हो गया था।

कुछ ही देर में वे दोनों भीड़ में गायब हो गए। और मैं अकेला नाचने लगा। इसलिए मैंने एक बियर लाने का फैसला किया और हाथ में पकड़ी बियर पर ध्यान केंद्रित किया। लगभग दस मिनट बाद मैंने उन्हें फिर देखा। अब वे काफी करीब लग रहे थे। रॉय ने उसके सिर के पीछे हाथ रखा हुआ था। वह उसकी ओर झुका और उसे अपनी ओर खींच लिया। अगले ही पल, उनके होंठ आपस में मिल गए।

उन दोनों को एक-दूसरे को चूमते हुए देखकर मुझे वो सब याद आ गया जिसे मैं भूलना चाहती थी। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और माथे पर पसीने की एक-दो बूँदें भी आ गई थीं। अचानक, मुझे उस भीड़ भरी पार्टी में घुटन महसूस होने लगी। मुझे ताज़ी हवा चाहिए थी।

मैं भीड़ को चीरते हुए खुली हवा में पहुंचा। मेरी सांसें तेज़ चल रही थीं। मैं भीड़ से थोड़ी दूर जाकर खड़ा हो गया और गहरी सांस ली। जहां मैं खड़ा था, वहां ज्यादा लोग नहीं थे। और मुझे

यह अच्छा लगा। आज के लिए मैंने काफी शराब पी ली थी और काफी रोमांच का मजा ले लिया था। अब मुझे बस कुछ पल अकेले रहने की जरूरत थी।

मैं समुद्र तट की ओर मुड़ा और समुद्र की लहरों को निहारता रहा। यह बहुत सुकून देने वाला था। और इसने अपना मकसद पूरा किया - मेरा मन एकदम खाली हो गया। कनिका या रॉय का कोई ख्याल नहीं। हैरानी की बात यह है कि जितनी देर मैं वहाँ खड़ा रहा, अंधेरे में देखता रहा और लहरों की आवाज़ सुनता रहा, एक पल के लिए भी मुझे उन दोनों का ख्याल नहीं आया।

मुझे अजीब तरह से अपनी ही दुनिया से अलग होने का एहसास हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कनिका और रॉय किसी दूसरी ही दुनिया के हिस्से हों। जैसे उनका कोई महत्व ही न हो। मैं जहाँ थी वहीं खुश थी। गोवा आना एक अच्छा फैसला साबित हो रहा था। दिल्ली की भागदौड़ से दूर, प्रकृति के करीब और... हाँ, शराब और अद्भुत नज़ारे तो थे ही!

मैंने पार्टी की ओर मुड़कर उसे दूर से देखा।

तभी मैंने एक लड़की को अपनी ओर आते देखा। वह गोरी, मध्यम कद की और काली, भावहीन आँखों वाली थी। उसके हाथ में सिगरेट थी और वह मुझे घूर रही थी। उसकी चाल में एक अजीब सी बेफिक्री थी जिससे लग रहा था कि वह काफी नशे में है। वह बहुत दुबली-पतली थी, लगभग उन्नीस साल की रही होगी और उसने नीले रंग की स्कर्ट पहनी हुई थी जिस पर सफेद फूल बने थे।

मैंने देखा कि वह मेरे पास आ रही थी, उसके हाथ में एक बिना जली सिगरेट थी। जब वह मेरे बिल्कुल करीब आ गई, तो उसने मुझे सिगरेट दिखाई, मानो वह मुझसे लाइटर मांगने वाली हो।

अचानक, उसने अपना सिर झुकाया और मेरे जूते पर उल्टी कर दी। मुझे अपना पैर हटाने का भी समय नहीं मिला। फिर, वह लड़खड़ा गई। इससे पहले कि मैं अपना जूता साफ कर पाता, मुझे उसे गिरने से बचाना पड़ा। मैंने किसी तरह उसे रेत पर आराम से बिठा दिया, ताकि वह गिर न जाए।

मैंने पूछा, "क्या तुम ठीक हो?"

"बस मुझे मेरे कमरे तक ले चलो।"

"ठीक है। यह कहाँ है?"

उसने एक दिशा की ओर इशारा किया। नाच-गाने के मैदान के चारों ओर छोटी-छोटी झोपड़ियाँ बनी हुई थीं। जब मैंने उन्हें देखा, तो मेरे मन में एक विचार आया - यह रहने के लिए एक शानदार जगह होगी।

जब वो लड़खड़ाते हुए अपने कमरे की तरफ जा रही थी, तो मैंने उसे सहारा दिया। उसका सारा भार मुझ पर था। मुझे उसकी गंध अच्छी नहीं लगी। शायद उसने कुछ दिनों से नहाया नहीं था। उसके बाल बिखरे हुए थे। फिर भी, अजीब बात है, वो सुंदर लग रही थी। उसे नहला दो, उसके बाल बना दो और मैनीक्योर कर दो। वो किसी मैगज़ीन के लिए मॉडल बन सकती है। हालांकि, शायद वो किसी भारतीय मैगज़ीन के लिए बहुत पतली है।

वह एक बिगड़ी हुई धुन थी। हम किसी तरह उसके कमरे तक पहुँचने में कामयाब रहे। उसे बिस्तर पर लिटाने के बाद मैंने राहत की साँस ली।

"ठीक है, शुभ रात्रि," मैंने कहा।

"क्या?"

मैंने कहा - शुभ रात्रि।

"क्या तुम मुझे चूमने की कोशिश नहीं करोगे?" उसने नशे में धुत्त होकर कहा और मेरी कमीज़ पकड़कर मुझे अपनी ओर खींच लिया। मैं पूरी तरह से हैरान रह गया। मैंने अपनी कमीज़ छुड़ाई और एक कदम पीछे हट गया।

"नहीं, नहीं। मैं ठीक हूँ। मैं अब चलता हूँ," मैंने कहा।

"लेकिन तुम कहाँ जाओगे?"

मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं था। कलांगुट बीच बहुत दूर था। मेरे पास टैक्सी के पैसे नहीं थे। और मुझे पूरा यकीन था कि इस समय मैं ज़ीशान का पता नहीं लगा पाऊँगा।

मेरे पास जाने के लिए बिल्कुल कोई जगह नहीं थी।

"मुझे नहीं पता," मैंने कहा, जब मैंने देखा कि वह हमारी बातचीत के बीच में ही अपने बिस्तर पर गिर पड़ी और सो गई। शराब लोगों पर अजीब असर डालती है।

मैंने उसके बाथरूम में अपना जूता धोया और वापस उसके कमरे में आकर उसे देखा। मुझे उसका नया रूप अच्छा लगा। फिर मैंने लाइट बंद की और उस कमरे के फर्श के एक कोने में जाकर सो गया।

"वैसे..." मैंने उसे किसी खास को संबोधित किए बिना, नशे में चूर होकर चिल्लाते हुए सुना। "मेरा नाम नव्या शर्मा है और मैं इंदौर से हूँ।"

अगली सुबह, जैसे ही मैं जागा, मेरे विचार पिछली रात की घटनाओं में खो गए। मैं सोच रहा था कि क्या यह नशे में देखा गया भ्रम था या कोई वास्तविक याद। मैंने आँखें खोलीं और उसे बिस्तर पर लेटा हुआ पाया। यह स्पष्ट था कि सब कुछ सच था। मैं उठा और उसे देखा। उसका नाम क्या था? नव्या, है ना? मैं सीधा बैठ गया और पिछली रात जो कुछ हुआ था उसे समझने की कोशिश करने लगा। मेरे सामने एक बहुत बड़ा काम था। मुझे पता लगाना था कि ज़ीशान कहाँ है। और मैं अपना फ़ोन चालू नहीं करना चाहता था।

मैं प्रवेश द्वार तक गया, जहाँ एक लंबा, दाढ़ी वाला फ्रांसीसी व्यक्ति खड़ा था।

"अरे, क्या आपने मेरे दोस्त को देखा है? उसका नाम ज़ीशान है, वह होशियार है-"

"जीशान? तो तुम हो समर," फ्रांसीसी दाढ़ी वाले आदमी ने कहा। "गोवा पुलिस स्टेशन भाग जाओ। और कोशिश करो कि वापस न आओ।"

"पुलिस स्टेशन? क्यों? उसने क्या किया?" मैंने पूछा।

"वहाँ पहुँचकर उससे पूछ लेना। अब यहाँ से दफ़ा हो जाओ," दाढ़ी वाले फ्रांसीसी व्यक्ति ने

चिल्लाकर कहा।

मैंने नव्या की झोपड़ी को एक पल के लिए देखा और फिर पुलिस स्टेशन की ओर दौड़ पड़ी। भगवान ही जानता था कि ज़ीशान ने इस बार क्या मुसीबत मोल ले ली है। जब मैं वहाँ पहुँची, तो मैंने ज़ीशान के बारे में पूछा। उस पुलिसवाले का पेट पूरे गोवा में सबसे भद्दा था। उसके दाहिने गाल पर एक तिल था और शरीर के कुछ अजीबोगरीब हिस्सों से बाल निकल रहे थे।

"क्या आपको पता है कि यह किसका पुलिस स्टेशन है?" उसने पूछा।

मैंने एक पल सोचा। "सरकार की?"

"मेरा! नीलेश मेस्ता! मैं यहाँ का वरिष्ठ निरीक्षक हूँ। मैं इस पुलिस स्टेशन का

संचालन करता हूँ।" "ओह। ठीक है," मैंने कहा।

"तुम्हारे पास कितने पैसे हैं?" उसने पूछा।